Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जन ज्ञान (मासिक)

अक्टूबर
नवम्बर
संयुक्तांक

★

मूल्य ५)

●

सम्पादक :
भारतेन्द्र नाथ

●

महर्षि दयानन्द के जीवन परक हिन्दी के महाकाव्य

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा
स्वीकृत लघु शोध प्रबन्ध

नवयुग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८ अक्तूबर संध्या ३ बजे पवित्र वेद मन्त्रों के साथ जन-ज्ञान की संपादक आयुष्मती सुमेधा व विदिशा के युवक नेता, कर्मठ विचारक और प्रबुद्ध चिन्तक चिरंजीव कैलाश इंजीनियर का **विवाह सानन्द सम्पन्न हुआ।**

इस अवसर पर प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी अमानन्द जी महाराज, स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, प्रो० रत्न सिंह जी, क्रान्तिकारियों के भीष्म पितामह प्रो० रामसिंह जी भू. पू. कार्यकारी पार्षद चौ० हीरासिंह जी ने वर- वधू को अपना आशीर्वाद दिया।

राजधानी के गण्य मान्य व्यक्ति श्री नवनीतलाल एडवोकेट, श्री देसराज जी चौधरी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, हिन्दुस्तान समाचार के निर्देशक श्री बालेश्वरअग्रवाल, हिन्दुस्तान साप्ताहिक के श्री गोविन्दप्रसाद केजरीवाल समाचार भारती की रजनी मिश्रा, वीर अर्जुन के समाचार संपादक श्री बनारसी सिंह,सहारनपुर के विख्यात नेता श्री प्रहलाद सिंह, महानगर पार्षद प्रो० प्रशान्त वेदालकार दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधानमंत्री श्री सरदारी लाल वर्मा आर्यप्रादेशिक सभा हरयाणा के प्रधान रा. सा. चौ० प्रतापसिंह श्री सत्यदेव विद्यालंकार प्रो० महेश विद्यालंकार आदि सैकड़ों व्यक्ति संस्कार में उपस्थित थे। राष्ट्र के महत्वपूर्ण सैकड़ों व्यक्तियों ने तार पत्रादि द्वारा नवयुगल को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन – ज्ञान

[त्रैमासिक]

सम्पादक
भारतेन्द्र नाथ

दूरभाष : ५६६६३६

पता
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१-नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-५

वार्षिक शुल्क २०)
विदेश मे ६ पौंड
(विमान से)

४ पौंड : समुद्री डाक से
(आजीवन ३०१)

एक प्रति : २ रुपये
वर्ष ११ : अंक ७
अक्तूबर-नवम्बर संयुक्तांक
सम्वत् २०३५

मेरा संकल्प

अंधकार का दर्शन,
प्रकाश की प्रेरणा नहीं बन सकता।
मरण कभी जीवन का,
संगीत नहीं गुंजा सकता।
मोह माया ग्रस्त व्यक्ति,
जीवन का रहस्य नहीं जान सकते।
इसलिए मैं कहता हूं,
उठो·····और सूर्य को देखो।
प्रकाश के पुंज बनकर,
नया सबेरा लाने की,
अंधकार भगाने की, तैयारी करो,
मेरे प्राण !

यह धरती, धरती के भोग,
सारे ही लोग, नाटक के पात्र हैं।
इन्हें पात्र ही समझो,
देखो, सुनो और जानो,
पर अपने को पहचानो !

मरघट की नहीं, शहनायी की बात करो,
हंसो खिलखिलाओ,
और सब से प्यार करो।
पर प्यार में अंधे मत बनो,
पूरी तरह न सनो !

मैं सूरज की किरणों पर चढ़कर,
विश्व विजय करने निकला हूं।
अपने को जलाकर प्रकाश फैला रहा हूं।
मेरा संकल्प समुद्र का मन्थन कर
मानव का भाग्योदय है।

अकेला—असहाय मैं नहीं हूं—
मेरे साथ मेरा प्रभु है,
इसलिए विजय मेरी होगी।
और तम हारेगा,
तुम साथ आओ या न आओ,
मैं तो बढ़ता ही जाऊंगा।

—भारतेन्द्र नाथ

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाढ़.....पानी और बाढ़ ने वेद-प्रचार के साधन नष्ट कर दिए

१. ग्रंथों के नेगेटिव बह गए, जिनका मूल्य कम से कम ३ लाख रु० था।
२. आर्ट पेपर के वेद भाष्य के १०० सैट बह गए।
३. लगभग सभी अंग्रेजी साहित्य गल गया।
४. चित्र-दर्शन - वेदांजलि - वेदामृत - वेद ज्योति - उपनिषदें और सभी महत्वपूर्ण ग्रंथ बह गए।
५. ४०० गज की चार दीवारी गिर गयी।
६. सड़कें और पेड़ नष्ट हो गए।

यह पानी नहीं — प्रलय प्रवाह था

पर क्या हम सब काम बन्द कर दें ?

आप सोचिए अपना कर्तव्य और परीक्षा-संकट की इस घड़ी में उदारता पूर्वक अपना दान भेजिए

कम से कम

२५) तो प्रत्येक सदस्य अवश्य ही भेजें।

यह मेरी प्रार्थना है- पुकार है-

आप के सहयोग से ही हम पुनः खड़े हो सकेंगे—

भारतेन्द्र नाथ :
प्रबन्धक
वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

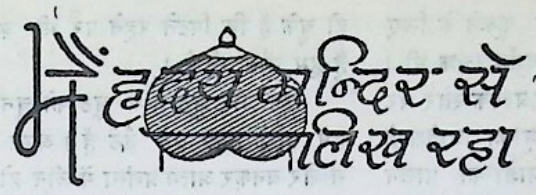

अधर्म या धर्म

धरती की केवल एक समस्या है, धर्म रहे या अधर्म। अधर्म आकर्षक है, सरल है. इसलिए मनुष्य उस पर चलना आसान समझता है किन्तु इस पर चलने का निश्चित परिणाम दु,ख-चिन्ता-कष्ट-क्लेश होता है।

धर्म एक चढ़ायी है, जिस पर चलने में कठिनाई अवश्य है पर यह व्यक्ति को उठाता है, पवित्र बनाता है, शान्ति-सन्तोष प्रदान करता है। धर्म प्रकाश है प्रेरणा है, गति है, विश्वास है, और है, अमरता का संदेश वाहक।

अधर्म अंधकार है, पशुता है, शून्यता अविश्वास और मृत्यु है। इसमें निरन्तर असन्तोष है, प्यास और पथ भ्रष्टता है। अधर्म का मार्ग मृत्यु की ओर जाता है।

जीवन एक अविरल धारा है, जिसमें गति है, स्नेह-साधना-ममत्व का मिश्रण है। किन्तु धर्म जहां पतवार है अधर्म वहां नाव में छेद का प्रतीक है। झूठ-पाखंड-चोरी-व्यभिचार-धोखा-हिंसा सब का जनक अधर्म है।

धर्म का उपासक देवता है तो अधर्म का असुर—धर्म यदि अमृत है तो अधर्म विष--धर्म यदि गंगा है तो अधर्म गंदा नाला। धर्म दूध है तो अधर्म शराब।

आज की ही नहीं धरती की शाश्वत् आवश्यकता है धर्म की स्थापना। इसी के लिए महापुरुष-राम-कृष्ण-शंकर-दयानन्द समय-समय पर जन्म लेते रहे हैं। इसी के लिए देवता बलिदान देते रहे हैं, शहीद मृत्यु वरण करते रहे हैं।

और आज हमारा संघर्ष भी केवल धर्म की स्थापना के लिए है। अधर्म का तूफान जोरों पर है। सभी पुरुष समय के प्रवाह में बह रहे हैं किन्तु हम इस अधर्म के तूफान के आगे घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं, हमें मरना स्वीकार पर अधर्म अंगीकार नहीं।

आपको अधर्म की छाया में रहने की स्वतन्त्रता है किन्तु यह तो सर्वनाश को स्वीकार करना है। आप का शरीर सदा नहीं रहेगा, फिर इसके मोह के लिए क्यों अपने को अन्धकार में भटकाते हो?

यह क्यों भूल जाते हो कि तुम "शरीर" नहीं हो तुम "आत्मा" हो १०० वर्ष रहने वाले शरीर के लिए अमर आत्मा को क्यों भटकाते हो? शाश्वत् आनन्द की प्राप्ति के लिए धर्म को क्यों नहीं अपनाते मेरे प्राण!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज धर्म का शंख फूकने के लिए शंख भी चाहिए और सुदर्शन चक्र भी। धर्म की स्थापना के लिए प्रत्येक स्तर पर युद्ध करना होगा यह प्रभु का आदेश है और हम इसी ईश्वर आज्ञा का पालन कर रहे हैं।

प्रभु पुत्रो···हमारा साथ दो, धर्म की विजय के लिए हमारे साथ आओ ईश्वर के आदेशों को स्थापित करने के लिये··· हम तुम्हें बुला रहे हैं—तुम्हें ·· उन्हें जो प्रभु के भक्त हैं।

कर्म करो पवित्र, धर्म स्वयं जीतेगा साधन-जुटाओ, साधना करो, प्रकाश फैलेगा। दुःख दूर होंगे, शान्ति-अमृत बरसेगा, धर्म पर चलो, धर्म पर चलाओ, धर्म को बढ़ाओ-बचाओ

हम धर्म की रक्षा कर रहे हैं। आप स्वयं अपना कर्त्तव्य सोचिए।

पत्थर भी पिघलते हैं

सुना था पत्थर भी पिघलते हैं। १२ वर्ष के बाद घूरे के दिन भी बदलते हैं। पर मैं पिछले ३० वर्षों से देख रहा हूं कि इन्सान भी अपने को बदलने के लिए तैयार नहीं।

प्रश्न यह उठता है कि दयानन्द के अनुयायी पत्थर से भी अधिक कठोर मन के हो चुके हैं कि वे अपने को बदलने को तैयार नहीं। शब्दों से दयानन्द की जय बोलकर वे समझते हैं उनका काम पूरा हो गया। मुसलमान-ईसाई-पाखंडी दनदनाते बढ़ रहे हैं पर हम मौन हैं। नास्तिकता बढ़े, चिन्ता नही, धर्म मिटे परवाह नहीं, धरती के नक्शे से हमारा निशान मिट जाए पर हम इतने निर्लज्ज हो चुके हैं कि पिटते रहने पर भी कहते हैं हम जीत रहे हैं।

सच और झूठ में से झूठ को चुनकर हम उसके राही बन बैठे हैं। अपने घर में शेर बनकर आत्म प्रशंसा में लीन होकर हम अपने हाथों अपनी मौत का सामान जुटा रहे हैं। आंखें होते हुए भी हम देखने को तैयार नहीं, दुनियां की समस्याओं को समझने के लिए हम तैयार नहीं, विश्व विजय का हमारा लक्ष्य अपने घर में भी तो विजय ध्वज नहीं फहरा सका।

मैं आशावादी हूं, इसलिए ही तो गालियाँ, ठोकरें, मुसीबतें खाकर दयानन्द का सपना पूरा करने के लिए युद्ध कर रहा हूं। पर कितने दयानन्द के भक्त ऐसे मिले जिन्होंने इस संघर्ष की राह को ज्वलंत करने के लिए हाथ बंटाया।

आर्यसमाजों को भाषण चाहिएं। नेताओं को गद्दियाँ चाहिएं, युवकों को नारे चाहिएं पर वे दयानन्द के भक्त कहाँ हैं जिन्हें विजय चाहिए।

रोम और मास्को में, अरब और चीन पर वेद ध्वज फहराने के लिए मृत्यु वरण कौन करेगा? कौन जलेगा इसलिए कि दयानन्द का सपना पूरा हो? बातें तो आसान हैं पर काम करने के लिए आदमी कहाँ से आएं।

रोते हुए भी हंसना हमें आता है। मरते हुए भी जीवन के गीत गाता हूं, इसलिए कि शायद कोई अपना जीवन मेरी झोली में डाल सके। दयानन्द के सपनों में रंग भरने के लिए अपना खून जो रंगो के लिए दे सके।

मेले-उत्सव आयोजन देखकर लगता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है कि कोई दयानन्द की अर्थी उठा रहा है। राजनीति से रंगा, प्रदर्शनों से पगा, वर्तमान भविष्य की नींव का पत्थर नहीं बन सकता।

भविष्य के लिए रक्त-मांस-हड्डी शरीर जला कर ही भवन तैयार हो सकेगा। दयानन्द को अपना कहने वाले युवक क्या वर्तमान से अलग होकर कुछ करने की साध नहीं मन में सजा सकते?

कुछ बोलो तो सही, मन के पट खोलो तो सही, इन पंक्तियों को पढ़ने वालो! अपना मानस टटोलो तो सही—तुम दयानन्द के लिए अपनी आहुति दे सकते हो?

धर्म के लिए दयानन्द ने प्राण दिये थे हमें भी धर्म की स्थापना के लिए सब कुछ देना होगा। नारे-घोषणा-प्रस्ताव प्रदर्शन कुछ न कर सकेंगे—यह सत्य है। यह मरने की राह है जीना है तो मरना होगा—अन्य कोई राह है ही नहीं।

सब कुछ मिट गया

पत्र आते हैं, सहानुभूति के, पूछते हैं क्या हानि हुई? हम क्या-क्या बताएं, बिना स्वयं देखे कल्पना करनी भी कठिन है। कुछ भी तो नहीं बचा।

सभी ग्रन्थों के नैगेटिव, जिनका मूल्य ३ लाख से भी अधिक था नष्ट हो गये आर्ट पेपर के वेद भाष्य के १०० से अधिक सैट समाप्त हो गए। गीता, चित्र दर्शन, जीवनी, चित्र-चार्ट सब बह गये। फर्नीचर-कपड़े-मेजें-कुर्सी सब टूट गए। चार सौ गज की चार दीवारी गिर गयी।

अलभ्य पाँडुलिपियां, अनमोल पुस्तकालय, मूल्यवान चित्र संग्रह सभी कुछ नष्ट हो गया। दुर्भाग्य से हम जीवित रह गये यह सब कुछ देखने के लिए।

पिछले २५ वर्षों में जो कुछ भी जोड़ा था सब यमुना की भेंट चढ़ गया। आज अकेले वेद मन्दिर में बैठकर अपना कर्तव्य बोध ढूंढ रहा हूं।

दो कन्याएं अपने-अपने घर गयीं। किसी पर भी तो अपना बस नहीं, कोई भी तो अपना जीवन उस भट्ठी में जलाने के लिए तैयार नहीं जिसमें हम पिछले ३० वर्षों से जल रहे हैं।

त्याग—तपस्या और बलिदान अब केवल शब्द कोष की शोभा हैं। सभी को आज की चिन्ता है, अपनी देह के लिए उपलब्धियां जुटाना ही वर्तमान का धर्म है। आत्मा होता है यह ज्ञान ज्ञानवालों को भी नहीं।

सर्वनाश के कगार पर बैठकर ५० वर्ष का पुराना शरीर लेकर आज मैं फिर से सिर उठाकर उद्घोष करने का साहस संजो रहा हूं। अकेला हूं यह सोचूं तो क्या अपराध नहीं होगा, असहाय हूं यह सोचना क्या कायरता नहीं होगी? निर्बल हूं यह सोचना क्या पथभ्रष्टता नहीं होगी सोच रहा हूं।

एकाकी वेद मन्दिर की शून्यता में बैठा मैं अपने प्रभु के सामीप्य से अपने को सबल अनुभव कर रहा हूं और विश्वास से कहता हूं कि तूफान-आफतें मुझे नहीं हटा सकतीं। मैं जीवन की अंतिम सांस तक अधर्म से लड़ूंगा, परिणाम की चिन्ता छोड़कर। कर्म हम करेंगे फल प्रभु के हाथ में होगा। सत्य के मन्त्र की अमोघ शक्ति को जगाऊंगा, प्राणों में प्रभु की ज्योति से प्रकाश लेकर प्रकाश का गीत धरती को सुनाऊंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो साथ आएं स्वागत—जो दूर रहें स्वागत मैं जब तक जीवित हूं कर्म करता रहूंगा वेद मन्दिर निर्माण का सपना यमुना की बाढ़ या समय का कुचक्र नहीं तोड़ सकेगा।

धरती को वेदमय बनाने के लिए हम आगे बढ़ेंगे। अवैदिक मतों के जाल से मनुष्य को हम मुक्त कराएंगे। सर्वत्र सब धर्मस्थानों पर ओ३म् पताका लहराएंगे।

हम आज एक बार फिर अकेले ही धरती का भाग्य प्रवाह बदलने का व्रत लेते हैं हमारे बाद क्या। होगा की चिन्ता हम छोड़ चुके हैं जो भी होगा ठीक होगा बस अब तो बढ़ना है। वेद को घर-घर पहुंचाना है। गुरुदेव देव दयानन्द का सपनापूरा करना है।

आप अपना कर्तव्य स्वयं सोचिये क्या सहयोग हमें दे सकते हैं। निर्णय कीजिये, आपका प्यार पाकर हम सब कुछ पा लेंगे। विश्वास कीजिए हम जब तक हैं तब तक हमारी हर सांस सत्य-धर्म-वेद का संगीत गुंजाती रहेगी और अंतिम क्षणों में भी हम यही कहेंगे, हम जीतेंगे वयं जयेम।

मेरे मन की पीड़ा

मैं अकेला आया, अकेला धरती पर रहा और अब लगता है अकेले ही जाना होगा। इतने बडे जहान में एक भी मन मुझे समझ नहीं सका। कोई मेरे मन तारों के साथ गा नहीं सका। कोई मेरे भावों की भावना अपना नहीं सका।

किसी को दोष क्यों दूं, मैं ही शायद भटकता रहा हूं। क्योंकि कोई भी मेरे सपनों में रंग भरने के लिए तैयार नहीं। यह मेरे चिन्तन का ही अपराध होगा, यही कह सकता हूं।

जीवन भर जला हूं पर कोई मेरे साथ जलने वाला नहीं, पर एक आग मन में थी, पर वह आग मेरे साथ ही बुझ जाए, इससे बढ़कर पीड़ा और क्या होगी ?

झूठ की वेल को फैलते देखा है, ढोंगों को शहनाइयां बजाते सुना है, आदर्शों के ढोल पर लाखों को लुटते पाया है पर सच्चाई की आवाज पर मरने वालों को देखने के लिये आंखें तरस गयी हैं।

धर्म की बात करने वाले, धर्म प्रचार का नाद गुंजाने वालों को धर्म से कोसों दूर पाया। धर्म प्रचार व्यापार बन गया और धर्म प्रचार की बात मुसीबतों का हिमालय बनकर मेरे सामने सदा खड़ी रही है।

कितने अरमान थे, धर्म का सन्देश फैलाने के, कितनी उत्कठा थी, मत-वाद समाप्त करने की। कितना उत्साह था पापों को जलाने का। काल से भी टकराने का साहस मन में लेकर धरती को चुनौती देने में कभी संकोच नहीं किया

और आज भी मन-मस्तिष्क वही है जो ३० साल पहले था। एक भी विचार नहीं बदला। मन आज भी बली है पर समय के थपेड़ों से शरीर साथ छोड़ रहा है।

मुझे कोई दुःख नहीं, आज भी अटल विश्वास लेकर बढ़ रहा हूं। दर्द सिर्फ इतना है कि मेरी आवाज कमजोर सिद्ध हुई, किसी को अपना हमराह न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बना सका ।

दयानन्द के आदर्शों के अतिरिक्त कभी कुछ सोचा नहीं । उसी महापुरुष के सपनों के लिए जीवन लगाया और जो क्षण बचे हैं उन्हें लगाऊंगा, अकेला ही चलूंगा, लड़ूंगा, बढ़ूंगा कोई मेरी पुकार सुने न सुने चिन्ता नहीं । सब कुछ मेरे साथ मेरी चिता पर जल जायेगा, तो भी मुझे कोई गम न होगा ।

आप से भी मेरा नाता तभी तक और उतना ही तो है जितना आप मुझे समझ सकते हैं । हजारों लोग ऐसे हैं जिन्हें मैं नहीं जानता फिर भी वे मुझे प्यार करते हैं । मेरी आवाज सुनते हैं । मेरे कामों को पूरा करने के साधन जुटाते हैं । मैं उन दूर पार के अपने प्रिय जनों को कैसे भूल सकता हूं । जो कमी है वह मेरी है क्योंकि मैंने सदा चद्दर से अधिक पैर फैलाए हैं । इसलिए शायद कष्ट भी मिले हैं ।

आज मैं एक बुझता हुआ दीपक हूं । बाढ़ ने मुझे १० वर्ष अधिक वृद्ध बना दिया । सारे कामों को पीछे ढकेल दिया । इस भयंकर मुसीबत में भी अकेला वेद वेद मन्दिर में बैठकर यह सब कुछ लिख रहा हूं ।

वेद मन्दिर का सपना क्या आपका सपना नहीं बन सकता ? क्या मस्जिद-गिर्जाघर और मतों के पूजा स्थानों से भरी धरती पर परमात्मा की आवाज फैलाने वाला एक शक्तिशाली केन्द्र नहीं बन सकता ?

सोचता हूं तो मेरा मन कहता है बनेगा, जरूर बनेगा, मरने से पहले मैं वेद मन्दिर का वह रूप देखूंगा, जहां धरती का सारा मानव पुजारी बनकर आना अपना सौभाग्य मानेगा ।

वेद मन्दिर दयानन्द से देवता के सपनों की पूर्ति का केन्द्र होगा । वेद मंदिर भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रसार का आधार होगा । वेद मंदिर से मत-वादों को समाप्त करने का प्रवाह चलेगा । अज्ञान को मिटाने-ज्ञान को फैलाने के लिए वेद मन्दिर गंगा के समान पावन वेद प्रकाश को भू मंडल में फैलाएगा ।

सपना देख रहा हूं । चाहता हूं कोई मुझ से प्यार करे, मेरे सपनों में खो जाए और कहे तुम जाओ अब तुम्हारी जगह मैं जलूंगा, तुम्हारे काम मैं करूंगा ।

मेरे प्राणों को हाथ चाहिएं । जीवन मांगता हूं इसलिए कि जीवन दे चुका हूं । जीवन भर जो दयानन्द का सपना पूरा करने के लिए जिन्दा जल सके ऐसे उत्तराधिकारी चाहता हूं ।

कोई आएगा, यह देह सदा किसी की भी नहीं रहेगी—फिर क्या कोई अपनी देह का मोह त्याग कर अपनी आत्मा को ज्योतिर्मय कर वेद-ज्योत्स्ना को छितरा कर धरती की अशांति हरेगा ।

धर्म की स्थापना के लिए प्राण चाहिएं । प्राण दो इसलिए कि प्राण को सजा सको । स्वयं जलो इसलिए कि ज्वाल को मिटा सको ।

प्राणों की दीप्त शक्ति से गुहार लगा रहा हूं । काश कि किसी के अन्तर में मेरी भावना रेखा पहुंच कर मेरी राह को आशा की भाषा से, भाषा के भावों से, भावों की गरिमा से गरिमा की गूजों से गुंजा सकती ।

राह देख रहा हूं धर्म को जीवन देने के लिए—धर्म की स्थापना के लिए किसी प्रभु पुत्र की— **भारतेन्द्र नाथ**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९७९ की डायरी

भारी संख्या में मंगाएं : झट करें

कागज अत्यन्त महगा हो जाने पर भी हम अजिल्द २५०) सैकड़ा
सजिल्द ३५०) सैकड़ा भेंट कर रहे हैं।

संध्या - हवन - प्रार्थना मन्त्र - भजन - दैनिक सूक्तियां
और अनेक विशेषताएं

१९७९ का पांच रंगों में छपा कलेंडर

बढ़िया कागज पर
६०) सैकड़ा : मंगाइए और बाँटिए

गायत्री-मंत्र : आर्ट पेपर पर

६०) सैकड़ा : बढ़िया कागज पर : ८ रंगों में

आज ही आदेश भेजें

दयानन्द-संस्थान

वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—गोविन्द गोस्वामी शास्त्री
व्याकरणतीर्थ साहित्याचार्य, हेरुदियारा मुंगेर

वेद ईश्वरीय हैं

'सरिता' मई (प्रथम) १९७८ (पर्यटन विशेषांक) में वेद के विषय में डा० रामसरूप 'रसिकेश' का लेख निकला है उसमें उन्होंने अपने भ्रान्ति पूर्ण विचारों द्वारा लोगों को भ्रम में डालने का प्रयत्न किया है। उन्होंने बतलाया है कि 'वेदों की रचना के विषय में दो विचार मुख्य हैं प्रथम धर्म मन्दिरों में कहा जाता है कि वेद ईश्वर के द्वारा रचे गए हैं, दूसरा विश्व-विद्यालयों में पढ़ाया जाता है कि वेद ऋषियों के द्वारा रचे गए हैं, इन दोनों विचारों में उन्होंने विश्व-विद्यालय की पढ़ाई ठीक समझकर वेद ईश्वरीय हैं। इसका खूब विश्लेषण किया। स्वामी जी लिखित यजुर्वेद ३९-६ का मन्त्र 'तस्माद् यज्ञात् सर्व हुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत'। उस परब्रह्म से ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उत्पन्न हुए हैं। इस पर डा० रसिकेश महाशय कहते हैं कि यहाँ यह पूछा जा सकता है कि यह मन्त्र तृतीय पुरुष में है इसलिए यह ईश्वर का वचन नहीं मालूम होता। यदि मंत्र ईश्वर का बनाया हुआ होता तो प्रथम पुरुष में होता तब ईश्वर कहता मैंने ही ऋग्वेदादि प्रकट किए हैं, वह यह नहीं कहता कि उसी परब्रह्म से वेद उत्पन्न हुए। उत्तर-यजुर्वेद ३१-६ वाले मन्त्र का ऋषि नारायण है, देवता स्रष्टा ईश्वर है, महाशय डा० रसिकेश को जानना चाहिए कि प्रत्येक भाषा की अपनी शैली होती है। उसका अपना व्याकरण होता है और उसका अपना कोष तथा साहित्य भी रहते हैं। वेद भाषा के व्याकरण प्रातिशाख्य आदि हैं, कोष यास्क का निरुक्त है साहित्य ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद आदि बहुत हैं। हमें देखना है क इन ग्रन्थों में मंत्र के विषय में कुछ लिखा है या नहीं। पाणिनी ने स्वर वैदिक प्रकरण अलग-अलग कर दिया है। प्राति शाख्य अलग-अलग बना हुआ है। अभी निरूक्त में एक यास्क निरुक्त प्राप्त है इसी निरुक्त में वर्णित अतीत १२, १३ निरुक्तकारों के नाम आते हैं, लेकिन उनका पृथक् कोई पुस्तक प्राप्त नहीं है। यास्क ने दैवत काण्ड के आरम्भ में ही इसका उत्तर अच्छे तरीके पर दे दिया है वे कहते हैं।

तास्त्रिविद्या ऋचः परोक्षकृताः प्रत्यक्ष कृता आध्यात्मिक्यश्च। तत्र परोक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृता: सर्वा मभियुज्यन्ते । प्रथम पुरुषै-श्चाख्यातस्य, अथ प्रत्यक्षकृता मध्यम पुरुष योगास्त्वमिति चैतेन सर्वनाम्ना अथाध्यात्मिक्य उत्तम पुरुष योगा अहमिति चैतेन सर्वनाम्ना परोक्षकृता प्रत्यक्षकृताश्च मंत्रा भूयिष्ठा अल्पश आध्यात्मिका: ।

अर्थ—वे ऋचायें तीन प्रकार की हैं १-परोक्षकृत २-प्रत्यक्षकृत और ३ आध्यात्मिकी । उनमें परोक्षकृत ऋचाएं आख्यात के प्रथम पुरुष के द्वारा सर्वनाम (संज्ञाओं) से युक्त होती हैं । और प्रत्यक्ष कृत ऋचायें मध्यम पुरुष त्वम् (तुम) इस सर्वनाम से युक्त होती हैं । आध्यात्मिकी ऋचा उत्तम पुरुष से युक्त अहम् (मैं) इस सर्वनाम से युक्त रहती हैं ।

परोक्षकृत और प्रत्यक्ष कृत ऋचाएं अधिक तथा आध्यात्मकी न्यून हैं । इस शैली के अनुसार तृतीय पुरुष यानी जिसे संस्कृत व्याकरण के अनुसार प्रथम पुरुष कहा जाता है उसमें प्रयोग किया गया है । किसी भी पुरुष का प्रयोग रहे लेकिन यह मन्त्र परमेश्वर का ही कहा जायगा । इसलिए वैदिक भाषा की इस शैली के अनुसार उस परमात्मा के ही सब वाक्य हैं । स्वामी जी लिखित 'यथेमां वा चं कल्याणी मावदानि जनेभ्य:' इस मंत्र के विषय में डा० रसिकेश महोदय ने लिखा है कि यदि यह वेद मंत्र इतना ही होता तो 'कल्याणी वाणी' से चारों वेदों का अर्थ लिया जा सकता, पर सच तो यह है कि मंत्र अधूरा ही उद्धृत किया है । मंत्र का शेष भाग इस प्रकार है ।

'प्रियोदेवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समयं मे काम: समृद्धचतामुपमादो नमतु' हमारे विचार में पूरे मंत्र का अर्थ इस प्रकार है । लौगाक्षि ऋषि कहते हैं चूंकि मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र अपने, पराये सभी के लिए भलाई करने वाली वाणी बोल रहा हूं, इसलिए इस यज्ञ में देवताओं का तथा दक्षिणा देने वाले यजमान का प्यार बनूं, मेरी यह (धनपुत्रादि की) इच्छा पूरी होना तथा वह (कोई विशेष व्यक्ति) भी मेरे सामने झुक जाय ।

उत्तर – स्वामी जी ने उस जगह उस आधे मंत्र की आवश्यकता न समझी पूरे मंत्र का अर्थ उनके यजुर्वेद भाष्य में देख लीजिये । आपने जो आधे मन्त्र का अर्थ लिखा है वह ठीक नहीं । इस मंत्र का ऋषि लौगाक्षि है देवता ईश्वर है । देवता ही मन्त्र का विषय होता है । उसी का वर्णन उस मंत्र में रहता है । अत: ईश्वर ने इस मंत्र में अपने को विषय बनाया है । निरुक्त दैवतकांड के आरम्भ में ही कह दिया है कि यत्काम ऋषि यस्यां देवताया मर्थ पत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुक्ते तद्दैवत: स मंत्रोभवति अर्थात् ऋषि जिस अर्थ के प्रकाश करने की कामना से जिस देवता में अर्थ प्रधानत्व को चाहता हुआ स्तुति (वर्णन) करता है वही देवता वाला वह मंत्र होता है ।

ऋषि मंत्र का रचयिता नहीं है । एक ही मंत्र के भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न ऋषि हो जाते हैं । एक मंत्र पर किसी ऋषि ने कुछ अनुसंधान किया तो उस मंत्र के वह ऋषि कहलाने लगे । आगे जाकर उसी मंत्र का दूसरा विशेष अनुसंधान किया तो पहले का नाम हटा कर दूसरे का नाम उस मंत्र के साथ आने लगता है । इस बात को मैं आगे मंत्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्रष्टा प्रकरण में दिखाऊंगा। आध्यात्मिकी ऋचा के अनुसार मैं पद से ईश्वर का बोध करना चाहिए। अपने-अपने अर्थ में दक्षिणायै पद की चतुर्थी विभक्ति का अर्थ छोड़ दिया है, साथ ही दातु पद के अर्थ के साथ यजमान शब्द अपने तरफ से लगा दिया है। मेरे विचार से सही अर्थ इस प्रकार होगा।

प्रियः (प्यारा) देवानां (देव-विद्वानों के बीच) दक्षिणायै (दक्षिणा के लिए=दानार्थ) दातुः (देने वाले का) इह (यहां लोक में) भूयासम् (होऊं) अयम् (यह) मे (मेरी) काम (कामना) समृद्धयताम् (सम्यक् रूप से बढ़े) उप (समीप) मा (मुझको) अदः (वह कुल या वंश नमतु (नम्र बन जाये)

अन्वय—इह देवानां दक्षिणायै प्रियो भूयासम् अयं मे दातुः कामं समृद्धयताम् अदः मा उपनमतु।

अर्थ—इस संसार में विद्वानों के बीच वेद रूपी कल्याणी वाणी के दान के निमित्त प्रिय होऊं, मुझ दाता की यह कामना सम्यक् रूप से बढ़े वह वंश मेरे समीप नम्र बन जाए? ऐसी कामना के लिए ईश्वर उपदेश कर रहा है। प्राचीन भाष्यकार की गवाही देना व्यर्थ है—महीधर के प्राचीन भाष्य 'गणानांत्वा गणपतिं' मंत्र का भाष्य कैसा किया गया हैं सबके सामने है। ऐसे-ऐसे भाष्यकारों की बात छोड़िये। आपने कहा है कि चारों वेदों में ब्रह्मा को वेद पढ़ने की बात तथा अग्नि वायु आदि चारों ऋषियों की आत्मा में चारों वेदों का प्रकट होना कहीं नहीं लिखा, मैं कहता हूं ऐसा लिखा रहना भी नहीं चाहिए। वेद में किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। आदि सृष्टि में उन चार ऋषियों के आत्मा में जब चारों वेदों का ज्ञान हुआ तब ऋषि के विचारानुसार वेदों के धातुज शब्दों से वेद प्रचारक ऋषियों के नाम रखे गये। इस बात को मनु ने स्पष्ट कह दिया है 'वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संज्ञाश्च निर्ममे' आदि सृष्टि में वेद के शब्दों के द्वारा अलग-अलग संज्ञायें (नाम) निर्माण किए गए। जब वेद की व्याख्या की जाने लगी तब सभी ब्राह्मण ग्रन्थों में जिन-जिन व्यक्ति के द्वारा जिन जिन वेद का ज्ञान प्रकाश में आया, उस उसका नाम उस-उस वेद के साथ लगा दिया गया।

ये समस्त ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद् मनुस्मृति आदि एक स्वर से कह रहे हैं कि वेद अग्नि आदि चार ऋषियों द्वारा मानव समाज को प्राप्त हुआ, उन सब वाक्यों को लिखने में लेख विस्तार हो जायगा। बिना शिक्षक के आदि में एक शब्द निकालना असंभव है—आदि में क्या अभी भी कोई किसी बच्चे को वैसी परिस्थिति में रखकर देख लें। इसकी जाँच अतीत में हो चुकी है। सर्वानुक्रमणिका में लिखा है—

विनियोक्तव्यरूपश्च त्रिविधः सम्प्रदर्श्यते
ऋग्यजुः साम रूपेण मंत्रो वेद चतुष्टये॥

अर्थात् वेद चार हैं। लेकिन चारों वेदों में विनियोग लायक तीन प्रकार के हैं। वह ऋक् यजुः साम रूप से हैं। इस वाक्य के अनुसार तीन के नाम रहते भी चारों का ग्रहण होता । सायण जो प्राचीन भाष्कार हुए हैं उन्होंने भी जीव विशेषेभ्यः कहकर चारों ऋषियों को मनुष्य बतलाया हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अग्निवायु रविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्
दुदोह यज्ञसिद्धयर्थं ऋग्यजुः साम लक्षणम् (मनु)

अर्थात् परमात्मा ने पहली सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्निआदि चार ऋषियों द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋग् यजु, साम अथर्व वेद का ग्रहण किया।

डा० रसिकेश जी का अर्थ है ब्रह्मा जी ने यज्ञों की सिद्धि के लिए अग्नि वायु और रवि तीन देवों से सनातन वेद को दोहा अर्थात् खींचा। सत्यार्थ प्रकाश में पूर्व पक्ष का प्रश्न है किनके आत्मा में कब वेदों का प्रकाश किया ? उत्तर पक्ष में कहते हैं—प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि वायु आदित्य और अंगिरा इन ऋषियों की आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया। इसी पूर्व पक्ष के उत्तर में स्वामी जी ने बताया कि प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि वायु आदि चार ऋषियों की आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया। कोई भी पढ़ा लिखा मनुष्य कह सकता है कि ज्ञान का प्रकाश आत्मा में ही हो सकता है। यदि कहा जाय कि सर आइजक न्यूटन से 'पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का ज्ञान आया तो क्या यह सिद्ध नहीं हो सकता कि न्यूनटन की आत्मा में पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का ज्ञान प्रकाशित हुआ, मैं पूछता हूं अग्नि से ऋग्वेद प्रकट हुआ, तो क्या पीठ से प्रकट हुआ या नाक से या पांव से ? किससे ? उत्तर होगा उनकी आत्मा में, ज्ञान में प्रकट हुआ। एक-एक शब्द का प्रयोग ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेद इसमें एक-एक वचन रहने के कारण हुआ। डा० रसिकेश महाशय आपने दोहा का खींचा अर्थ भद्दे पन में किया। दुह प्रपूरणे धातु का अर्थ अच्छी तरह पूरा करना अर्थात् सब तरह से ग्रहण करना होता है, वेदों का दुहना, प्राप्त करना, ग्रहण करना, पढ़ना ही होगा, रस्सी की भांति खींचना नहीं। आप अपने अर्थ को ठीक से पढ़िये घुमाफिरा कर यही अर्थ निकलेगा कि ऋषियों से ब्रह्मा ने यज्ञ की सिद्धि के लिए वेदों को ग्रहण किया अर्थात् पढ़ा और ऋषि ने पढ़ाया। आधे मंत्र या समूचे मंत्र सबसे यही अर्थ निकलता है। आदि सृष्टि में वेद का प्रकट होना जो स्वामी जी ने लिखा, इससे आपको क्या आश्चर्य हुआ ? मैं धर्म मंदिर से नही बोल रहा हूं, विश्व विद्यालय से बोल रहा हूं जर्मन देश के विश्वविद्यालय के भाषा वैज्ञानिक वेद के विषय में लिखते हैं।

The vedas may be called primittve. because there is no other literary document mare Primitive; then it; out the language the mythology; religion and Philolosophy that meet us in the veda, Open vistas of the past which no one could venture to measure in years (India, what can it teach us)

अर्थ—वेदों को हम इसलिये आदि सृष्टि से कह सकते हैं कि उनसे पूर्व का कोई अन्य लिखित चिन्ह नहीं मिलता परन्तु वेद के भीतर जो भाषा, देवमाला धर्म और आध्यात्मिक विद्या का ज्ञान हमें मिलता है, वह हमारे सामने इतनी प्राचीनता का दृश्य दिखाता है कि कोई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी मनुष्य उस प्राचीनता को वर्षों की संख्या में नहीं ला सकता। अब समझ में आ जाना चाहिए कि स्वामी जी ने 'आदि सृष्टि में' ऐसा प्रयोग क्यों किया? इनका भी वैदिक विश्वविद्यालय पृथक् है।

आपके विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को देखा गया है, कितने ऐसे भी हैं वकील, बैरिस्टर, जज- प्रोफेसर सड़े-गले मुर्दे पर कब्र पर जिसे पीर पैगम्बर कहते हैं माथा पटकते हैं! डाइन ओझा के अन्ध-विश्वास में पड़कर अनाथ स्त्रियों की हत्या करते हैं। स्वामी जी ने अंगिरा ऋषि को सिद्ध करने के लिए, मनुस्मृति के 'अध्यापया मास पितृन् शिशुरांगिरसः कविः' इस आधे श्लोक को नहीं लिखा अंगिरा ऋषि तो अर्थववेद, शत पथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में लिखा है ही। ऋषि को यह सिद्ध करना है कि ब्रह्मा आदि ऋषियों के पूर्व से वेद हैं ब्रह्मा चार वेदों के अध्ययन से होता है, परंपरागत वेद सृष्टि के आदि से चला आ रहा है। 'अध्यापयामास पितन्, इस श्लोक का अर्थ स्वामी जी ने पृथक् नहीं किया है। इस श्लोक को प्रमाण में रखा तो क्या हुआ, अंगिरा के पुत्र आंगिरस शिशु कवि ने भी अपने पिता अंगिरा से ही वेद पढ़ा होगा विद्वान् होने के कारण अपने पितरों को पुत्र कहकर पुकारा इस बात से यहाँ कोई मतलब नहीं। केवल वेद परंपरागत पठन पाठन रूप से चला आ रहा है यही स्वामी जी का सिद्धान्त है। वेद आदि सृष्टि से हैं इस बात को विदेशी भारतीय भिन्न विद्वान् मान रहे हैं जो भाषा विज्ञान के महान् पंडित हैं। स्वामी जी प्रत्येक स्थान पर जहां केवल तीन वेद का ही नाम आया वहाँ चौथे वेद अथर्व को लिखते हैं यह वैदिक साहित्य के अनुकूल है तीन में चार के समावेश के लिए कह दिया गया है, उसे यहां विस्तार करना अप्रासंगिक होगा। ऋषि मंत्र द्रष्टा होते हैं मंत्र के रचने वाले मंत्र रचयिता नहीं। मंत्र कर्ता मंत्रकार उस ऋषि को कहा जाता है जो मंत्र का विनियोग=यानी कौन मंत्र यज्ञादिकों में कहां लगाया जाएगा, इसका विधान कर्त्ता होते थे। लौहकार (लोहार लोहा नहीं बनाता, स्वर्णकार (सुनार) सोना नहीं बनाता चर्मकार (चमार) चाम नहीं बनाता, वीनकार (वीणा बजाने वाला) बीन नहीं बनाता बल्कि लोहे से, सोने से, चर्म से अनेक तरह की वस्तु तैयार करता है उसी तरह मंत्रकार मन्त्र बनाता नहीं बल्कि मंत्र के द्वारा अनेक यज्ञों के कार्य सिद्ध करते हैं। कुम्भकार भी कुम्भ की मूल वस्तु मिट्टी को नहीं बनाता ऋषि मन्त्र रचयिता होते तो एक मन्त्र के भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न ऋषि नहीं होते।

विश्वामित्रः प्रथममपश्यत् तान् विश्वामित्रेण दृष्टान् वामदेवो असृजत् (गोपथ ब्राह्मण ६-१) सम्पात ऋचाओं के प्रथम दृष्टा विश्वामित्र थे उन विश्वामित्र से दृष्ट मन्त्रों को वामदेव ने विशेष रूप से सृजा=अर्थात् ज्ञान से देखा।

ऋग्वेद १०-६१ और ६२ सूक्त पहिले मनु को ज्ञात थे पर अब उनका ऋषि मनु पुत्र नाभनेदिष्ट है।

एतामृचमपश्यत् (ऐतरेय ब्रा० २-१६)

एतत् कवयः सूक्तमनश्यन् (ऐत० ब्रा० ३-१६)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गौरवीति एतत् सूक्तमपश्यत् (ए० ब्रा ३-१९)

एतां पदामपश्यत (ऐ ब्रा ४-१०)

ऋषि दर्शनात् (निरुक्त २-११)

ऋषियो मंत्र द्रष्टारः (ऋक् प्रातिशाख्य)

ऋग्वेद ३-४-८ से ११ तक के मंत्रों का ऋषि विश्वामित्र है परन्तु ये ही मंत्र जब ऋग्वेद ६-२-८ से ११ तक में आते हैं तो इनका ऋषि वशिष्ठ हो जाता है। अब समझना चाहिए कि ऋषि मन्त्र द्रष्टा होते हैं, वे स्थायी नहीं रहते समय समय पर बदल जाते हैं।

इषे त्वादि त्वं ब्रह्मान्तं विवस्वान पश्यत् ततः प्रति कर्म विभागेन ब्राह्मणानुसारेण ऋषयो वेदितव्याः परमेष्ठी प्राजापत्योः दर्शपूर्णमास मन्त्राणां ऋषिर्देवा वाप्राजापत्या सर्वानुक्रमणी अर्थात् इषे त्वादि से लेकर त्वम् ब्रह्म पर्यन्त समस्त यजुर्वेद को आदि में विवस्वान ने देखा, इसके बाद ब्राह्मण ग्रन्थ के अनुसार कर्म विभाग के कारण दर्शपूर्णमास मन्त्रों का परमेष्ठी प्राजापत्य ऋषि माना गया। अब स्पष्ट हो गया कि विवस्वान को हटा कर कर्म में सुविधा बताने वाले का नाम ऋषि के स्थान में रख दिया गया। यास्क के समय से पूर्व १२-१३ निरुक्तकारों का नाम आता है। एक कौत्स को छोड़कर सभी निरुक्तकार वैदिक शब्दों को धातुज मानते थे लेकिन यास्क के समय इतिहास मानने वालों का पक्ष भी खड़ा हो गया था। इसलिए यास्क अपने निरुक्त में इतिहास पक्ष भी जहां तहाँ दिखाते गये हैं लेकिन नाम देने के बाद अपना पक्ष भी रखते थे इसलिए नाम की व्युत्पत्ति बताते गए।

आकृति, अंग, काम वर्णन (स्तुति) जड़ पदार्थ का भी चेतन के समान बताना वेद की शैली बताई गई है। दैवत काँड के आरम्भ में ही विस्तार के साथ बता दिया है। अमर कोष में महीसुत, कुज भौम मंगल ग्रह है।

आंगिरस अंगिरा के पुत्र बृहस्पति ग्रह है।

सौरि—यानी सूर्य का पुत्र शनैश्चर का नाम है।

यह भी एक (जड़) पदार्थ है।

कण्व के पुत्र—यानी कण्वप्रभव प्रस्कण्व भी है। असल में कण्व तो ऋषि हैं परन्तु कौन ऋषि हैं। सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे। यजु० ३४-५५ के अनुसार सात ऋषि हमारे शरीर में हैं। सात (मरीच अंगिरा अत्रि पुलत्व्य, पुला कृत वशिष्ठ) ऋषि आकाश के तारे भी हैं ये सप्तर्षि कहाते हैं।

सूर्य सिद्धान्त की भूमिका में उदय नारायण सिंह ने लिखा है 'ग्रयाति एक तारा है' ताराग्रहाणामन्योन्यं स्यातां युद्ध समागमौ (सूर्यसि० अ० ६)

तारा और ग्रहों के परस्पर योग ही युद्ध है। इन्द्र का रूप यास्क ने बहुत तरह से माना है यही सूर्य वायु विद्युत आत्मा हैं। सूर्य ही गन्धर्व है। इसके पास बहुत अप्सरायें हैं। ये अप्सरायें कौन हैं इसे यजुर्वेद १८-३९ में 'सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयो अप्सरसः अर्थात् सूर्य गन्धर्व है और उसकी रश्मियाँ अप्सरायें हैं। इन अप्सराओं के नाम यजु १५-१५-१९ में विश्वासी, उर्वशी मेनका घृताची आदि बहुत गिनाये हैं। ये सूर्य के किरण हैं। आप तो इसे वेश्या ही कहियेगा। क्योंकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुराण में तो मेनका, उर्वशी को वेश्या ही वतलाया गया है।

शान्तनु—एक तरह धान्य (सुश्रुत ४६-२१)

अगस्त्य—एक तारा (उदित अगस्त पंथजल सोखा) तुलसी कृत रामायण

ध्रुव—एक तारा है। इक्ष्वाकु कटु तुम्बिका (सुश्रुत ४४-६)

प्राणावै ऋषयो: दैव्यास: (ऐत० प० २अ ४०) यहां प्राण ही ऋषि है।

चक्षुर्वै जमदग्नि ऋषिर्यदनेन जगत्पश्यत्यथोमनुते तस्माचक्षु-जदग्निमऋषि: शत: का ८ अ० १) यहाँ जमदाग्निऋषि आंख है। कश्यपो वै कर्म प्राणो वै कर्म (शत काँ ७अ-५) यहां कश्यप—प्राण है। अर्थववेद १८-३-१५-८६ में कराव, कक्षी वान् पुरू भी अगस्त्य विश्वामित्र जमदग्नि अत्रि कश्यप वामदेव वसिष्ठ भरद्वाज गौतम ये सब सुशंसास: पितर: अर्थात् प्रशंसा के योग्य पितर हैं।

अत्रिवद्व: क्रिमयो हन्मि कण्ववत् जमदग्निवत्।

अगस्त्यस्य ब्रह्मणा संपिनष्ट्यहं क्रिमीन् (अर्थव २-३२-३) अर्थात् मैं अग्नि कण्व जमदग्नि अगस्त्य आदि के समान कीड़ों को मारता हू क्या ये सब ऋषि कीड़े मारने का काम करते थे? ये कीड़े मारने वाले ऋषि कौन हैं? सुनिये। अथर्ववेद २-३२-१ में लिखा है 'आदित्य क्रिमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिभि:' अर्थात् सूर्य उदय होकर अपनी रश्मियों से क्रिमियों को मारें। या मारता है। ये सब अत्रि कण्व आदि सब सूर्य की किरणें हैं ये पितर कहाते हैं।

Light, especially the light of sun has a truly wonderful effect on nearly all forms of germs. almost with out exception they are killed by the rays of the sun. (medical sciense of today dy Dr. willmott ceuams. m D) "यहाँ सूर्य की रश्मियों में कीड़े मारने की अपूर्व शक्ति वतलायी गयी है। भाषा विज्ञान विशारद प्रो० मोक्षमूलर साहब कहते हैं 'वेदों में जो संज्ञायें (नाम) मिलती हैं वे ठीक-ठाक नाम हैं ऐसा न समझना चाहिए' (हिस्ट्री आफ एन्सेन्ट संस्कृत लिटरेचर) अचेतनान्यप्येवं स्तुयन्ते यथाक्षप्रभृतीन्योपधी पर्यन्तानि' (निरूक्त) अर्थात् अचेतन (जड़ पदार्थ) की भी स्तुति की जाती है जैसे अक्ष से लेकर औषधि पर्यन्त। इसी निरुक्त में यास्क ने कहा है कि जड़ देवता में भी कर्म काम अंग (अवयव आकृति) स्तुति (प्रशंसा वर्णन चेतन के समान ही वेद मन्त्र में किया गया है। ऐसी शैली का वर्णन यास्क ने खूब किया है।

ऋग्वेद १-४५-३ में प्रियमेध अत्रि विरूप अंगिरा का नाम है इन सबों की निरुक्ति की गई है।

प्रियमेध—जिसे मेधा (ज्ञान) प्रिय हो। अंगारेष्वंगिरा—अग्नि में अंगिरा पैदा हुआ। विरुपो नानारूपोमहिव्रतो महाव्रत इति अनेक रूप वाला विरूप और महान काम करने वाला महिव्रत ये जड़ हैं या चेतन। क्या आग से मनुष्य पैदा होगा। अनेक रूप वाला तो बादल अग्नि देखे जाते हैं, महान कर्म तो विद्युत में है। पुराणों की कहानी इसमें मत जोड़िए पुराणों के अनुसार हनुमान् जी सूर्य को निगल गए थे। अगस्त्य जी तीन चुल्लू में

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समुद्र पान कर गये और समुद्र सूख गया था। फिर मूत्र के द्वार से निकाला गया समुद्र खारा मालूम होता है। मैं वेद मन्त्रों का भाष्य या अर्थ नहीं जानता केवल आपको दिखाता हूं कि हठात् इसे इतिहास मानकर पुराणों के नामों से मिलान मत कीजिए। 'वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संज्ञाश्च निर्ममे' मनु के इस श्लोक से मालूम होता हैं कि वेद से ही सभी नाम लिए गए हैं, नकि लोक से वेद में नाम गए हैं। वेद का कृष्ण और अर्जुन भिन्न हैं। अहश्च कृष्णमहरर्जुन च (ऋ-६-९-१) में दिन को ही कृष्ण तथा अर्जुन बताया है। शुनः शेप की कहानी पुराण से लेकर वेद के शुन शेप वाले मन्त्रों में लोग जोड़ देते हैं। इसाई लोग कहते हैं "ईशावास्यमिदं सर्वम् यजुर्वेद में प्रभु ईसा का नाम आया है अर्थ हो गया है कि ईसा से सारा संसार व्याप्त है। उसे मैं क्या कहू ? कोई भी सभ्य पिता अपने लड़के का भद्दा नाम नहीं रखेगा। शुन कुत्ते का शेप—लिंग (कुत्ते का लिंग नाम अति भद्दा है। इस शुन शेप का अर्थ स्वामी जी के भाष्य में देखिए। कोई भी पिता बच्चे पुत्र को माँगेगा और कहेगा कि पुत्र होगा तो आपके लिए बलिदान (हत्या) कर दूंगा अर्थात काट दूंगा फिर वह मांगेगा क्यों वरुण कौन है कहां रहता है उसके प्रसन्न होने से, उसके कहने मात्र से क्या पुत्र हो जाएगा यह तो आजकल के मूर्ख अन्ध विश्वासी लोगों का विश्वास है। वरुण जल का देवता है क्या यह जल में ही रहता है ?

प्राकृत वर्णन को मानव के साथ मत जोड़िए। आष्टिषेणं ऋष्टिषेण का शिष्य कौन था ? ऋषि का सम्बन्ध विद्युत से दिखलाई पड़ता है। आविद्युन्नद्भिमरुतः स्वर्कः रथेभियातः ऋषिमर्भिरश्वपर्णो (ऋ १-८८-१)

यत्रूष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः (ऋ० ५-५२-१३)

विद्युद्रथा मरुत ऋषिमन्तः (ऋ ३-५४-१३)

को वो अन्तर मरुतः ऋष्टि विद्युतो रेजति (ऋ १-१६८-५)

इन चारों मन्त्रों में ऋष्टि का संबंध विद्युत से है। षेण के लिए षेणा उभेयु जन्त रोदिसी सुमेक (ऋ ६-६६-६) षेण तो पृथ्वी और आकाश को अकेला ही जोड़ता है। यहां षेण ऋष्टि के साथ मिलकर उस विद्युत शक्ति का सूचक ज्ञात होता है जो शक्ति का प्रेरक है। पौराणिक मानव की कहानी नाम के सामान्य से मिलाना व्यर्थ है। यह लेख मैं अपनी ओर से लिख रहा हूं। इसमें कोई धर्म या संस्था उत्तरदायी नहीं। जीवों की उत्पत्ति और उसकी भाषा के विषय में विकास वाद क्या जानेगा वह तो लाचार है केवल अनुमान कल्पना से काम लिया जाता है एक अन्न के दाने के विषय में नहीं बता सकता है कि कैसे पैदा हुआ अगर जानता है तो पैदा करके दिखावे। इन बातों पर यहाँ वाद करना व्यर्थ है। देखिये विकास वाद के पंडितों ने क्या लिखा।

How did living creatures begin to be upon the Earth ? In point of science., we do not know. (Introduction to science J· 142, by J.A. Thomson, M.A.)

विज्ञान के द्वारा हम नहीं जानते कि पृथ्वी पर जीवों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

The question is; what was the panner of their being upon the previosuly tenant less Earth? our answer must be that we do not know.

(Evolution P 70 by patrick Geddes)

प्रश्न यह है कि इस उजाड़ जीव हीन पृथ्वी पर जीव के होने का क्या तरीका है इसका उत्तर यही होगा कि हम नहीं जानते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—रामकृष्ण आर्य कोटा

गायत्री के नाम पर बढ़ते ढोंग रोके जाएं

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज और गायत्री मन्त्र

गायत्री एक छन्द का नाम है इसमें निबद्ध—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

मंत्र यजुर्वेद के ३६वें अध्याय का तीसरा मंत्र है इसमें परमात्मा से सुबुद्धि को प्रेरित करने की प्रार्थना की गयी है। संस्कार विधि के वेदारम्भ संस्कार के प्रकरण में महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज लिखते हैं—

"आचार्य एक वस्त्र अपने और बालक के कन्धे पर रख के अपने हाथ से बालक के दोनों हाथ की अंगुलियों को पकड़ के नीचे लिखे प्रमाणे बालक को तीन वार (तीन चरण में) करके गायत्री मन्त्रोपदेश करे ··।"* आगे इसी संस्कार में गायत्री मंत्र का अर्थ करते समय अन्त में लिखते हैं—

"(धीमहि) धारण करें, (यः) यह जो परमात्मा (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को उत्तम गुण-कर्म-स्वभावों में (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे। इसी प्रयोजन के लिये इस जगदीश्वर की स्तुति प्रार्थनोपासना करना और इससे भिन्न और किसी को उपास्य, इष्टदेव, उसके तुल्य वा उससे अधिक नहीं मानना चाहिये"**

सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज

---

*संस्कार विधि—वेदारम्भ प्रकरणम्, पृष्ठ—१३३

**संस्कार विधि—वेदारम्भ प्रकरणम्, पृष्ठ—१३४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिखते हैं—"पिता माता वा अध्यापक अपने लड़का-लड़कियों को अर्थसहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें।"* परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने सत्यार्थ-प्रकाश आदि ग्रन्थों में गायत्री मन्त्र का अर्थ देते समय यह कहीं नहीं लिखा कि गायत्री मंत्र के इतने जप करने से धन-धान्य मिलेगा, इतने पर सन्तान मिलेगी, इतने पर नौकरी और परीक्षा में सफलता मिलेगी या इतने पर मुकद्मे में विजय होगी। कोई प्रचार करता है—"एक किसान की दुधारू भैंस कई दिनों से दूध नहीं दे रही थी। एक गायत्री भक्त ने गायत्री मंत्र पढ़कर किसान से कहा कि अब दूध दुह लो। भैंस ने पिछले कई दिनों का दूध एक साथ दे दिया।" आश्चर्य है यह सब पाखण्ड और अंधविश्वास आर्यसमाज में भी गायत्री मंत्र के नाम पर फैल रहा है।

गायत्री महायज्ञ और यज्ञ में पनप रहा पाखण्ड

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज द्वारा निर्दिष्ट यज्ञ विधि को छोड़ अब आर्यसमाज के अनेक याज्ञिक, उपदेशक एव संन्यासी जो विद्वत्ता का दम भरते हैं; गायत्री यज्ञ करते और कराते हैं। आज आर्यसमाज में ऐसे भी याज्ञिक भरे पड़े हैं जो यह चुनौती देते हैं हमारे पास ऐसी यज्ञ विधि है कि जिसके सम्पन्न करने से यजमान धनवान् और सम्पत्तिशाली बन सकता है।

तीन चार वर्ष हुए इन्दौर में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक आर्य सम्मेलन आयोजित किया गया था। इसमें 'लक्षाहुति गायत्री महायज्ञ' भी सम्पन्न हुआ था। जब उसकी प्रमाणिकता—अप्रमाणिकता का प्रश्न उठा तो अनेक लोग ऋषि के लेख को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत करने लगे। वस्तुत: प्रमाणों से गायत्री महायज्ञ या इसी प्रकार के अन्य महायज्ञ नाम के कोई यज्ञ आर्ष सिद्ध नहीं हो सकते।

दैनिक यज्ञ के सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में महर्षि दयानंद सरस्वती महाराज लिखते हैं—"अग्निहोत्र के प्रत्येक मन्त्र को पढ़कर एक-एक आहुति देवें और जो अधिक आहुति देना हो तो--विश्वानि देव···तन्न आसुव ।। इस मंत्र और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से आहुति देवें।"** दैनिक यज्ञ की १६ आहुतियों के पश्चात् कितनी आहुति इन मन्त्रों से दी जा सकती है थोड़ी विचारने की बात है। इससे 'गायत्री महायज्ञ' कहां से निकल आया? क्या अधिक आहुति का अर्थ लाख दो लाख होता है?

"एक उत्सव में ऐसे ही एक व्यक्ति यज्ञ में ब्रह्मा बने हुए थे। पूर्णाहुति के दिन कई मन गोलों का ढेर लग रहा था। बड़ी रोचक भाषा में कह रहे थे

---

* सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास, पृष्ठ—३४ लेखक दोनों का—महर्षि दयानन्द सरस्वती, प्रकाशक—वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, अजमेर।

**सत्यार्थ प्रकाश तृतीय सम्मुल्लास, पृष्ठ—४१, लेखक प्रकाशक वही।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"जब मैंने यज्ञ कराया तो आस-पास खट्टे आमों के वृक्षों पर मीठे आम आने लगे :"*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य सभा ने बहुत परिश्रम कर प्रामाणिक ब्रह्म (वेद पारायण) पारायण यज्ञ की विधि तैयार की। परन्तु उसको यह गायत्री भक्त छूते भी नहीं हैं। वेद मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करना तो इन गायत्री भक्तों के बस की बात है नहीं, इसलिये यज्ञ के प्रति श्रद्धालु भावुक भोली आर्य जनता को ठगने के लिये इन अंग्रेजी, उर्दू एवं टूटी-फूटी हिन्दी-संस्कृत जानने वालों ने यह गायत्री, शतधारा, सहस्रधारा, छलनी बांधना आदि महायज्ञ चलाकर यह पाखण्ड खड़ा कर लिया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज की दृष्टि में यज्ञ हवन केवल भौतिक और आध्यात्मिक साधना के साधन मात्र थे। परन्तु आज हवन एवं गायत्री अधिकतर आर्यों की दृष्टि में साधन न रहकर साध्य हो गये हैं।

यज्ञ के प्रति हमारा अंधविश्वास इतना बढ़ता जा रहा है कि मन माना संशोधन हम ऋषिकृत यज्ञ प्रणाली में कर बैठे हैं। किसी आर्यसमाज में किन्हीं मन्त्रों की आहुतियाँ कहीं पहले तो कहीं बाद में दी जाती हैं। कहीं साप्ताहिक यज्ञ-पद्धति के वेद मन्त्रों से तृप्ति नहीं मिली तो वेद पारायण के नाम पर यजुर्वेद के १० मन्त्रों की और कहीं ऋग्वेद के १० मन्त्रों की आहुतिया दी जा रही हैं। सामान्य यज्ञ के मन्त्रों का भी जो शुद्ध उच्चारण सीखना नही चाहते वे बहाने बनाते हैं कि वेद पाठ सीखने के लिए यह सब कर रहे हैं। निर्धारित पद्धति में अपने मन से घटाना और बढ़ाना एक प्रकार की अनुशासनहीनता है इस त्रुटि पर ध्यान आकृष्ट करने पर ये लोग कभी-कभी दुर्वासा रूप भी दिखाने लगते हैं।

आर्यसमाज के विद्वान् और सार्वदेशिक सभा के अधिकारी लिखते-लिखते और आदेश देते-देते परेशान हो गए कि विशेष यज्ञों को छोड़ स्विष्टकृत आहुति केवल भात या घी की ही देनी चाहिये। परन्तु सब नामधारी आर्यसमाजी अपने आप को बड़े-बड़े याज्ञिक मानकर पेड़ा, बर्फी, शक्कर, गुड, कलाकन्द, गुलाब जामुन, पेठा एवं नारियल गोला आदि की आहुति देकर आर्यसमाज की ऋषि प्रणीत प्रणाली को दूषित कर रहे हैं। इनकी माया और मान्यता ये ही जानें। श्री पं० राम दयालु शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी तथा अन्य अनेक विद्वान्, यज्ञ में पनप रहे इस पाखण्ड के प्रति जनता एवं विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करते रहते हैं।

---

*दयानन्द सन्देश—दि. ७५। ज. ७६, अंक पृष्ठ २२,
लेख 'आर्यसमाज का पग किस ओर'
लेखक—श्री रामदयालु शास्त्री, अलीगढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु इनके उद्‌बोधन पर कोई ध्यान ही नहीं देता। ये दुःखी विद्वान् ही क्या एक बार अगर ऋषि दयानन्द भी धरती पर उतर आवें और इन जड़ बुद्धि हठी और नकली आर्यों को समझाएं, तो ये उनकी भी एक न सुन कर उनके सामने भी कुतर्क युक्त भाषण झाड़ने लग जाएंगे।

आर्यसमाज के अन्दर गायत्री तथा अन्य मंत्रों के नाम पर इतना भारी पाखण्ड दिन-प्रति दिन फैलता जा रहा है और सार्वदेशिक सभा तथा अधिकतर विद्वान बिल्कुल चुप हैं। वे कभी मिल बैठकर विचारने का प्रयत्न ही नहीं करते फलतः मथुरा के श्री आचार्य श्री राम जी शर्मा एवं उनके विद्रोही शिष्य बोरखेड़ा (कोटा) के श्री शम्भू सिंह जी कौशिक गायत्री मंत्र को साक्षात् देवी बनाकर उसी पूजा, अर्चना, उपासना एवं यज्ञ की पद्धति निकाल कर और युग-निर्माण, युग-साधना जैसे आकर्षक नामों से गायत्री के प्रति अन्ध श्रद्धावान् एवं स्वाध्याय से विरत, आर्य बन्धुओं को बहकाकर स्वयं आर्यों के हाथों ही आर्यसमाज की जड़ कटवाने में लगे हैं। इस खतरे की ओर किसी का भी ध्यान ही नहीं हैं।

गायत्री परिवार का जन्म कैसे ?

मनुष्य बिना महत्वाकांक्षाओं के अपनी सर्वांगीण उन्नति नहीं कर सकता। महत्वाकांक्षाएं निरन्तर कर्म करने की ओर प्रेरित करती रहती हैं। परन्तु जब मनुष्य महत्वाकांक्षाओं पर नियन्त्रण न कर उनका दास बन जाता है तो महत्वाकांक्षाएं मनुष्य को स्वार्थ में अन्धा बनाकर उसे निम्न से निम्न पाखण्ड करने और फैलाने पर उतारू भी कर देती हैं। मनुष्य इनके पीछे अन्धा होकर झूठे यश की प्राप्ति हेतु मानवता के विपरीत कार्य करने में भी कभी संकोच नहीं करता है। इसलिए कहा है कि महत्वाकांक्षाएं जो न कराएं वह थोड़ा है।

कुख्यात नास्तिक हिरण्यकश्यप ने इन्हीं महत्वाकांक्षाओं के वशीभूत होकर अपने पुत्र को घोर कष्ट दिये और अन्त में उसे तलवार के घाट उतारने में भी संकोच नहीं किया। परन्तु परिणाम कितना भयंकर निकला। कुख्यात महाराजा कंस ने इन्हीं महत्वाकांक्षाओं के पीछे अपने पिता, बहिन एवं बहनोई को कष्ट दिये तथा जन्म के साथ ही भानजों की हत्याएं कीं। बाद में भानजे कृष्ण ने मामा कंस की कैसी दुर्गति की। औरंगजेब ने अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिये पिता को जेल में डालकर अपने भाइयों का भी वध कर दिया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षाओं के दास बन गये वे या तो इतिहास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के पृष्ठों से सदा-सदा के लिए मिट गये या कलंक का टीका अपने मस्तक पर लगा इतिहास में कुख्यात हो गये।

आर्यसमाज चौक मथुरा के भूतपूर्व सभासद् सक्रिय कार्यकर्त्ता तथा निरन्तर ६ वर्ष तक उसके प्रधान पद को सुशोभित करने वाले तथा बाद में गायत्री तपोभूमि मथुरा तथा गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्री राम शर्मा महत्वाँकाक्षाओं के दास बनकर महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज वेद, वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के साथ भी विश्वासघात करने तथा उसकी पीठ में छुरा भोंकने से नहीं चूके।

इतना ही नहीं इन्हीं महत्वाकांक्षाओं के पीछे गायत्री परिवार का दो भागों में विभाजन हो गया। बोरखेड़ा कोटा के श्री शम्भू सिंह जी कौशिक श्री आचार्य जी के परम प्रिय शिष्य माने जाते थे। बाद में लोकैषणा एवं वित्तैषणा के पीछे श्री कौशिक जी ने बोरखेड़ा कोटा में एक अलग संस्था स्थापित कर ली। राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के अनेक स्थानों पर आपको दोनों दलों के द्वारा संचालित गायत्री परिवार की शाखा मिल जायेंगी। गायत्री तपोभूमि मथुरा से सम्बन्धित एक परिचित सज्जन से बातचीत हुई तो वे कहने लगे "श्री शम्भू सिंह जी कौशिक तो गुरुद्रोही हैं क्योंकि उन्होंने अलग संस्था का निर्माण कर लिया है।" यद्यपि दोनों गुरु-चेलों में गुरुडम चलाने में प्रतिस्पर्धा लगी है तथापि मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा पुराणों के समर्थन करने एवं फलित ज्योतिष आदि को मानने और उसका प्रचार और प्रसार करने में ये दोनों ही समान हैं। देखा जाये तो दोनों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं।

जहां तक आर्यसमाज का (अप्रत्यक्ष रूप से सदस्यों के माध्यम से) सम्बन्ध का सवाल है वहां तक दोनों ही अप्रत्यक्ष रूप से आर्यसमाज की जड़ों में गर्म पानी डालने में लगे हैं। दूसरे मत-मतान्तर, सम्प्रदाय एवं संस्थाएं इनसे अच्छे हैं। वे प्रत्यक्ष और खुले रूप में हमारे विरोधी हैं। उनसे उतना भय भी नहीं है, जैसा कि गायत्री परिवार आदि संस्थाओं से है। गायत्री परिवार मथुरा का हो, चाहे कोटा का हो उसके सिद्धान्त तथा क्रिया-कलाप एक प्रकार से मीठा विष है, जो वैदिक सिद्धान्त रूपी शीशी में भर आर्यों को पिलाया जा रहा है। वह आर्यसमाज के सिद्धान्तों और कार्यक्रमों पर पाखण्ड का मुलम्मा चढ़ाकर आर्यसमाज को विनाश की ओर ले जाने का एक प्रयत्न है। गायत्री परिवार जैसी संस्थाएं आर्यसमाज के लिए आस्तीन का एक काला सांप है जो एक दिन आर्यसमाज को ही पूरी तरह डस कर छोड़ेगा। केवल गायत्री मन्त्र के जप और यज्ञ का झूठा माहात्म्य चाहे बाहर का हो या अन्दर का —अर्थात् स्व० प्रभुआश्रित जी का हो या आचार्य श्री रामजी शर्मा का---आर्यसमाज रूपी गेहूं में लगने वाला वह घुन है जो अन्दर से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूरा खा-खाकर धोखा कर उसके स्वरूप को विकृत कर देगा। आर्यो इससे बचो! बचो!

गायत्री मन्त्र के द्वारा ईश्वरोपासना, गायत्री साधना या अनुष्ठान की वैदिक विधि--

जैसा कि लेखक ने पिछली पंक्तियों में लिखा है गायत्री यजुर्वेद के ३६वें अध्याय का एक मन्त्र है परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि मात्र गायत्री मन्त्र का ही अध्ययन, मनन और चिन्तन कर लिया जाये तो वेद के अन्य २० हजार मंत्रों का अध्ययन, मनन करने की कोई आवश्यकता ही नहीं रही या केवल गायत्री मन्त्र जो जान लिया तो ईश्वर की सम्पूर्ण महिमा को जान लिया। अगर ऐसा होता तो ईश्वर केवल एक गायत्री मन्त्र का ही प्रकाश करता। अन्य २० हजार मन्त्रों के प्रकाशन की क्या आवश्यकता थी

यह सत्य है कि ईश्वर की वाणी वेदमन्त्र ईश्वरोपासना के उत्कृष्ट साधन हैं। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि वे साधन ही हैं साध्य नहीं। साध्य तो वहां परमपिता परमात्मा ओ३म् हैं। यह भी सत्य है कि गायत्री मन्त्र ईश्वरोपासना के लिए एक उपयुक्त मन्त्र है। क्योंकि इसमें जीवन के आधारभूत तत्व सुबुद्धि या मेधा बुद्धि की प्रार्थना की गयी है। गायत्री मन्त्र या वेद के अन्य मन्त्रों के द्वारा ईश्वर की सही उपासना का यह मार्ग नहीं है कि गायत्री मंत्र या अन्य मन्त्रों के शाब्दिक जप किये जावें। मन्त्र के अर्थो का चिन्तन मनन, और ध्यान ही किया जाना उचित है। जप तो केवल ओ३म् का ही किया जाना चाहिए। वेदादि सत्य शास्त्रों में प्रत्येक स्थान पर ओ३म का ही जप लिखा है। "तस्य वाचकः प्रणवः तज्जपस्तदर्थभावनम्" यह योगदर्शन का सूत्र भी यही दर्शाता है कि जप केवल ओ३म् का ही किया जावे आज के अधिकतर योगी जो योग का आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वय कर रहे हैं मनोवैज्ञानिक आधार पर उन्होंने भी ओ३म् को ही जप करने के लिए सर्वोत्तम माना है। उनका कहना है कि जप करने समय मन्त्र अधिक लम्बा नही होना चाहिये। उनके विचार से मन्त्र में अधिक से अधिक ५ अक्षर होने चाहियें। इस दृष्टि से भी जप के लिये ओ३म् उपयुक्त है। ओ३म् का जप करने वाले को अपने मस्तिष्क पर अधिक जोर नहीं देना पड़ता और प्रत्येक जप के साथ ध्वनि स्पष्ट और शुद्ध निकलती है।

"गायत्री-अनुष्ठान का अर्थ गायत्री के एक-एक पद में निहित ईश्वरीय सन्देश का ध्यान (चिन्तन) करने और उस दिव्य सन्देश को व्यावहारिक जीवन में कार्यान्वित करना है। मन्त्र में विचार होते हैं सन्देश होते हैं, उनका चिन्तन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनन किया जाता है। .... "*

"अतः परमपिता परमात्मा और आदेश को भली प्रकार जानने के लिये आप एकान्त, शान्त स्थान में सुखासन से बैठकर प्रथम अर्थ विचार पूर्वक प्रणव—जप (ओंकार जप) द्वारा मन की एकाग्रता सम्पादित कीजिए पश्चात् महामन्त्र गायत्री के एक-एक पद में सन्निहित दिव्य संदेशों की गहराई में उतरिये। अनुभव कीजिये कि आप शक्ति के स्रोत प्रभु के समीप ही नहीं उस विश्वधात्री मां की गोद में बैठे हैं और तब आत्मबल युक्त होकर गायत्री के एक-एक पद में गुंथी हुई दिव्य भावनाओं को अपने व्वावहारिक जीवन में उतारने का सत्य संकल्प कीजिये..... यही गायत्री का सच्चा अनुष्ठान है, यही है गायत्री की सच्ची साधना। इसमें समय और संख्या का उतना महत्व नहीं है जितना कि तन्मयता और गहरा डूबने का है।"**

परन्तु गायत्री परिवार ने सब उलटा ही कर दिया और क्यों न किया जाता? आर्यसमाज से पृथक् संस्था के निर्माण की भूख तथा अपने को ऋषि, महर्षि, गुरू एवं ईश्वरावतार कहलाने की मन में आकांक्षा जो थी।

गायत्री परिवार में गायत्री और यज्ञ का विधि विधान—

गायत्री परिवार संस्थान में गायत्री की मूर्ति या फोटो लगा होता हैं सब उसकी पूजा (पौराणिक पूजा) करते हैं तथा उसी के सामने माला गिनकर गायत्री मंत्र के जप करते हैं तथा यज्ञ में गायत्री मंत्र की आहुतियां इस भावना से देते हैं कि एक-एक आहुति गायत्री माता के मुंह में जा रही है। आश्चर्य है कि वेद मंत्र भी साकार सशरीर देवी देवता बनकर जप-यज्ञ से प्रसन्न और न करने से अप्रसन्न होते हैं। क्या वेद के मंत्र भी जीवित चलते फिरते प्राणी हैं? गायत्री परिवार के संस्थापकों एवं साधकों को चुनौती है कि वे हमें वेद के किसी भी मंत्र से गायत्री की मूर्ति सिद्ध कर दें, हम उसी समय आर्यसमाज छोड़कर उनके शिष्य बन जायेंगे। नहीं तो क्यों अज्ञान एवं पाखण्ड में पड़े हो दिल खोलकर आर्यसमाज का साथ क्यों नहीं देते हो? समझ में नहीं आता कि अपने को वैदिक धर्मी और पौराणिकों से पृथक् मानते हुए भी गायत्री मंत्र को हाथ, पैर, मुंह, आँख, कान से युक्त देवी-देवता के रूप में मानकर एक अलग सम्प्रदाय खड़ा कर देने में कौन सी बुद्धिमत्ता थी? एक ओर गायत्री मंत्र में सुबुद्धि की प्रार्थना और दूसरी और मंत्र को देवी मानने की बुद्धि हीनता। आश्चर्य! आश्चर्य!! महा आश्चर्य!!!

---

*तपोभूमि, जून—१९७१, गायत्री गौरव विशेषांक, लेखक—ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' मथुरा, पृष्ठ —११

** " " " पृष्ठ—१२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यज्ञ करने कराने की विधि भी इनकी प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा निर्दिष्ट विधि से भिन्न है। महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने बहुत कठिन श्रम करके गृह्यसूत्रों ब्राह्मण-ग्रन्थों तथा वेदादि के आधार पर स्वच्छ, स्पष्ट एवं प्राचीन प्रामाणिक आर्ष यज्ञ-प्रणाली को पुनर्जीवित किया। यज्ञार्थ कलश यात्रा, यज्ञ कुण्ड की परिक्रमा, वेदी का पूजन, नारियल के गोलों में घी भरकर पूर्णाहुति देना, गणपति एवं नवग्रह आदि की स्थापना एवं पूजन आदि गायत्री परिवार द्वारा समर्थित अनार्ष यज्ञ विधि का प्रतिपादन महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने अपने किसी भी ग्रन्थ में नहीं किया। और न यह लिखा कि लगातार चार-चार, पाँच-पाँच घन्टे तक एक ही मन्त्र गायत्री से आहुति दी जाये।

संस्कार विधि में अढ़ाई हजार से लेकर दो लाख आहुतियाँ देने के उपयुक्त यज्ञकुण्ड बनाने का निर्देश किया है परन्तु यह कहीं नहीं लिखा कि लगातार चार या पांच घण्टे तक अकेले गायत्री मंत्र की आहुति ही देते रहें।

कई वर्षों के विचार के बाद हमें एक बार बोरखेड़ा कोटा स्थित गायत्री परिवार के वसन्त पंचमी वार्षिकोत्सव में जाने का अवसर मिला तथा वहां जो कुछ देखा और सुना, उससे समझा किस प्रकार वहाँ पर गुरूडम और व्यक्ति पूजा को प्रोत्साहन मिल रहा है। कोटा के एक पुराने आर्यसमाज में साप्ताहिक सत्संग में उसके मंत्री ने जो गायत्री परिवार के सक्रिय सदस्य हैं सत्संग समाप्ति पर सूचना दी कि हम सब लोगों को गायत्री परिवार को भी पूर्ण सहयोग करना चाहिये, क्योंकि वहाँ ९९.५% कार्य अपने समाज के ही होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि अगर आकर्षण के लिए उन्होंने मूर्तिपूजा रख भी छोड़ी हो तो भी हमें उस ओर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिये। इस सूचनात्मक प्रचार को आर्यसमाज के मंत्री द्वारा किये जाते देखकर उसी समय कोटा क्षेत्र के एक आर्य सन्यासी स्वामी परमानन्द जी खड़े हो गये और उन्होंने इस पाखण्ड-प्रचार का पुरजोर युक्ति-युक्त खण्डन किया। उक्त स्वामी जी की ही प्रेरणा से गायत्री परिवार जैसे ढके हुए पाखण्ड का विस्तृत खण्डन करने पर विवश होना पड़ रहा है। प्रत्येक को अपने-अपने धार्मिक-मतों-विचारों और उनके अनुरूप प्रचार करने की स्वतन्त्रता है। परन्तु गायत्री परिवार की आन्तरिक इच्छा यह है कि कैसे भी कर भोले आर्यों को बहकाकर, आर्यसमाजों पर अपना कब्जा कर लें। इस प्रकार एक प्रयोग वे कोटा क्षेत्र में मध्य प्रदेश की सीमा पर लगे हुए मध्य भारत की एक समाज पर कर चुके हैं तथा एक और समाज पर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वह तो कुछ कर्मठ कार्य-कर्त्ताओं, विद्वानों और संन्यासियों का धन्यवाद कहिये कि उन्होंने सिर हथेली पर रखकर उस समाज पर काबू पाया।

———

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गायत्री परिवार के सामाजिक कार्यक्रम

जहाँ तक गायत्री परिवार के सामाजिक कार्यक्रमों पर विचार का प्रश्न है वहां तक लेखक इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के उपकारों को गायत्री परिवार के संस्थापक एवं साधकों द्वारा स्मरण न करना संस्थापक एवं साधकों को महान् कृतघ्नी मानता है। अगर महर्षि दयानन्द स्त्रियों एवं शूद्रों को वेद तथा अन्य पठन-पाठन का प्रमाणिक अधिकार नहीं दिलाते तो कैसे गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्री राम जी शर्मा एवं श्री शम्भू सिंह जी कौशिक शूद्रों एवं स्त्रियों में गायत्री का प्रचार कर सकते थे। छुआ-छूत, जाँत-पात, नरबलि तथा पशुबलि के विरुद्ध सर्वप्रथम आन्दोलन करने वाला कौन था? बाल-विवाह के विरुद्ध सर्वप्रथम किसने कानून बनवाया फिर भी लेखक गायत्री परिवार के संस्थापक एवं साधकों को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता क्योंकि इसके संस्थापक ने सामाजिक चेतना का आधार १८ पुराणों, उप-पुराणों, राम-चरित्र मानस और हनुमान-चालीसा आदि अनार्ष ग्रन्थों को छोड़ कर वेद के एक मंत्र को बनाया है। सब को वेद पढ़ने एवं यज्ञ करने का अधिकार देने, पशु बलि एवं यज्ञ अभक्ष्य पदार्थों के खान-पान को छुड़ाने, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, अनमेल-विवाह को रोककर विधवा-विवाह का प्रचार करने, नारी चेतना, दलितोद्धार एवं पंचमहायज्ञ का प्रचार करने, दहेज, मृतक—भोज, जाति-पाति के विरुद्ध बगावत करने में उन्होंने भारी पुरुषार्थ किया है। श्री शम्भू सिंह जी कौशिक के द्वारा देवी देवताओं के आगे बकरे-भैंसे आदि पशुओं की बलि के निषेध में जो आन्दोलन चलाया गया और उसमें सैंकड़ों गायत्री साधकों के साथ असह्य कष्ट सहकर बलि प्रथा को बन्द करने में आपने जो सफलता प्राप्त की उसे कौन भुला सकता है? परन्तु दूसरी ओर गुरुडम का पाखण्ड, गायत्री मंत्र का मिथ्या माहात्म्य तथा अवतार वाद का समर्थन करके और मूर्तिपूजा को प्रोत्साहन देकर जो अज्ञान एवं धार्मिक अन्धविश्वास फैलाया है उससे मानव-समाज का कितना अनिष्ट हुआ है और होगा इस को कोई निष्पक्ष गायत्री साधक ही जान सकता है।

जिस मूर्तिपूजा के खण्डन में महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने १७ बार जहर पिया। उसको बन्द करने के लिये उन्हें वित्तैषणा एवं लोकैषणा पूर्ति के बड़े-बड़े लालच दिये गये परन्तु उन्होंने उसका खण्डन नहीं छोड़ा। यदि वे चाहते तो ईश्वर का अवतार बनकर भविष्य में अपने को पुजवा सकते थे। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उस महर्षि के शिष्य गायत्री-परिवार द्वारा किये जाने वाले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उक्त सुधारात्मक कार्यों का समर्थन करें इसमें आपत्ति की कोई बात नहीं है परन्तु वे परिवार के सदस्य बनकर मूर्ति पूजा के प्रचार में भागीदार नहीं बन सकते।

एक बार आर्यसमाज के एक पदाधिकारी से जो गायत्री परिवार के भी सक्रिय सदस्य हैं—मैंने पूछा, आखिर गायत्री परिवार में आप और आपके आर्य साथी क्यों जाते हैं? क्या उनके उद्देश्य आर्यसमाज के उद्देश्यों से भी बढ़कर है? उन्होंने उत्तर दिया "देखो! कौशिक जी ने लोगों का मांस छुड़वाया, शराब छुड़वाई, बाल विवाह रोके, और गायत्री मंत्र सिखाया, बताओ आर्यसमाज ने क्या किया? मैंने उनसे कहा आर्यसमाज ने क्या किया? और क्या नहीं किया, उसे आधे से अधिक विश्व जान चुका है। उन्होंने पुरुषार्थ करके मांस, शराब छुड़वाया परन्तु मूर्ति पूजा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, देवी-देवतावाद तथा अन्य पौराणिक मिथ्या विश्वासों को कौशिक जी ने और भी सुदृढ़ किया। इस प्रकार अच्छाई और बुराई का संतुलन कर देने से बात बराबर रही। ये ही मिथ्या विश्वास आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों लोगों को छोड़े दुर्व्यसनों की ओर अवश्य वापस ले जायेंगे। अतः यह आवश्यक है कि जहां मांस, शराब छुड़वाई वहां जीवन-पथ भी सत्य सत्य बतलाना चाहिये था, जिससे गायत्री साधकों की निरन्तर उन्नति होती रहती। यदि यह कहा जाए कि चूंकि गायत्री-परिवार के लोग पुरुषार्थ करते हैं अतः उनका समर्थन करना चाहिए, तो हम कहना चाहते हैं, पुरुषार्थ तो ईसाई हमसे अधिक करते हैं। बांसवाड़ा (राज०) और झाबुआ (म० प्र०) के क्षेत्र में देखो! ईसाई पादरियों ने कठिन तप और त्याग कर भीलों को सभ्य इन्सान बनाने में सारा जीवन खपा दिया फिर भी हम और आप उनके धर्म (मत) का खण्डन और प्रयत्नों का विरोध करते हैं। क्यों? क्या चोर कम पुरुषार्थ करता है? तो क्या चोरी हम भी सीख जायें? क्या चोरी करना उत्तम कार्य है? आधुनिक वैज्ञानिकों से अधिक कौन पुरुषार्थ करता है, परन्तु क्या आप केवल प्रकृतिवाद स्वीकार करोगे? और माना गायत्री परिवार पुरुषार्थ करता है, तो आप आर्यसमाज की सदस्यता छोड़कर पूरा समय उसी के प्रचार में क्यों नहीं लगाते? या फिर क्या आप आर्यसमाज में रहकर वैसा पुरुषार्थ नहीं कर सकते? आपको किसने रोका है? वस्तुतः ये गायत्री परिवार के भक्त किन्तु आर्यसमाज में अन्दर-अन्दर गायत्री परिवार की मान्यताओं का प्रचार करने के लिए ये छद्मवेशी आर्य बने हुए हैं। वास्तव में गायत्री परिवार के सदस्यों को आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से भी अवश्य वंचित रखा जाना चाहिए जिससे आर्यसमाज किसी अन्य संस्था के षड्यन्त्र का शिकार न बन सके।

श्री बद्रीनारायण जी शास्त्री के लेखों की समीक्षा—

गायत्री परिवार किस प्रकार पौराणिक अंधविश्वास का प्रचार करता है और किस प्रकार आर्यसमाज के पदाधिकारी और सक्रिय सदस्य गायत्री परिवार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में जाकर आर्यसमाज की मान्यताओं पर कुठाराघात करते हैं, इसका एक उदाहरण देखिए—

गायत्री परिवार साधना आश्रम बोरखेड़ा कोटा द्वारा प्रकाशित 'युगसाधना' पत्रिका में आर्यसमाज के वर्षों से पुरोहित रहे बहु चर्चित आर्य वक्ता एवं सक्रिय आर्य सभासद् साहित्य दिवाकर वैद्य बद्रीनारायण शास्त्री एम.ए. साहित्य-आयुर्वेद फलित ज्योतिष रत्न, विद्यावाचस्पति ने यज्ञ एवं गायत्री महिमा पर कुछ लेख लिखे हैं। उनके कतिपय अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

"गायत्री में पाप हरण की क्षमता··· ·"

कांटे से काँटा निकलता है पुण्य कार्य भी समनान्तर कर्म है जो पाप कर्म को नष्ट कर देता है।*

समीक्षा :—कल्पना कीजिए किसी व्यक्ति ने किसी बालिका से बलात्कार कर जघन्य पाप किया। वह घर आकर गायत्री का १००० जप कर ले। तो क्या जप के पुण्य कर्म से बलात्कार का पाप कट जायगा? अर्थात् नहीं कटेगा। आर्य-समाज की तो स्पष्ट मान्यता है कि पुण्य कर्म के फल अलग और पाप कर्म के फल अलग हैं। अगर पाप किया है तो चाहे १,००,००० गायत्री के जप कर लो पाप का फल तो भुगतना ही पड़ेगा। जो पाप कर लिया उसको गायत्री तो क्या ईश्वर भी क्षमा नहीं कर सकता।

"वेद बीज रूपा—बीज से वृक्ष बनता है—गायत्री वेद-बीज है। ब्रह्मा ने समाधि में प्रणव युक्त गायत्री का अनहद नाद के द्वारा सुना। उसके निरन्तर अनुष्ठान से सम्पूर्ण वेद श्रुतिगोचर हुए। अतः गायत्री वेद बीज रूपा है वेद माता भी वह इसीलिये है।"**

समीक्षा:—गायत्री को वेद माता मानने वाले अधिकतर अथर्ववेद का "स्तुता मया वरदा वेदमाता ··" मंत्र प्रमाण में देते हैं। श्री ब्र० वेदव्रत जी मीमांसक ने अपने एक लेख में इसकी बड़ी सुन्दर समीक्षा करते हुए लिखा है—गायत्री वेद की माता नहीं हो सकती। माता जन्मदात्री को कहा जाता है। गायत्री मंत्र ने वेद को जन्म नहीं दिया है। परमात्मा से वेद आविर्भूत है। अतः वेद माता का अर्थ ओ३म् है। गायत्री मंत्र नहीं है।***" गायत्री मंत्र को वेद की माता मानना स्पष्टतः

---

*युग साधना, अप्रैल—मई, १९७४, सावित्री उपाख्यान, लेखक—श्री बद्री-नारायण शास्त्री, कोटा, पृष्ठ १३

** ,, ,, ,, ,, पृष्ठ १७

*** दयानन्द सन्देश, अगस्त, १९७६, लेख—श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी की गति किधर को। लेखक—श्री ब्र० वेदव्रत मीमांसक।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पौराणिक मान्यता है । क्योंकि पौराणिक नासमझ लोग ईश्वर को साकार पुरुष मानते हैं और साकार पुरुष बिना स्त्री के कुछ नहीं कर सकता है । इसलिए लक्ष्मी आदि को विष्णु आदि को पत्नी माना है । उसी प्रकार यहां भी बुद्धि के शत्रुओं ने वही कल्पना दौड़ाई कि बिना स्त्री-पुरुष के कोई उत्पत्ति नहीं हो सकती इसलिए परमेश्वर को वेद के पिता हो गये और गायत्री वेद की माता हो गई । उन्होंने यह नहीं देखा कि वेदों में परमेश्वर को दोनों लिंगों से सम्बोधित किया गया है । वह हमारी माता भी है और पिता भी है ।

दूसरी बात श्री शास्त्री जी ने यह दिखाई कि सबसे पूर्व वेद ब्रह्मा को श्रुतिगोचर हुए जब कि आर्य मान्यता में अग्नि, वायु आदि चार ऋषियों को सर्व प्रथम वेद ज्ञान मिला । महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज सत्यार्थ-प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं—

"अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्
दुदोह यज्ञसिध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम् ॥"

"जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु आदित्य. और अंगिरा से ऋग्यजु, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया ।*

नवग्रहों की समिधाएं—सूर्य की प्रसन्नता हेतु अर्क की समिधा हो । अर्क आँकड़े का नाम है । सफेद आंकड़ा लक्ष्मीप्रद माना है । चन्द्रमा के लिए पलाश, मंगल की खैर, बुध की अपामार्ग की समिधा से प्रसन्नता होती है । गुरु के लिए पीपल, शुक्र को गूलर, शनि को शमी, राहु को दूब तथा केतु को कुश की समिधा प्रशस्त है ।

अर्क समिधा से व्याधिनाश, पलाश सर्वकामनाप्रद, खैर से आर्थिक लाभ की प्राप्ति, अपामार्ग से इष्ट दर्शन, पीपल से सन्तान लाभ, गूलर सुखप्रद, शमी पाप नाशक, दूर्वा दीर्घायुप्रद, कुशा सर्वकामनाप्रद होती है । तान्त्रिक प्रयोगों में विभिन्न प्रकार की समिधाओं का प्रयोग हमारी लिखी "पंचमुखी वीर हनुमान साधना" पुस्तक में देखिए ।**

समीक्षा—नव ग्रह पौराणिक है या वैदिक, आर्य पाठक गण स्वयं जान लें । श्री शास्त्री जी की दृष्टि में तन्त्र शास्त्र प्रामाणिक है तो खुले दिल से आर्यसमाज के पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इनका प्रचार क्यों नहीं करते और 'पंचमुखी वीर

---

*सत्यार्थ-प्रकाश, सप्तम समुल्लास, पृष्ठ १९०, लेखक—महर्षि दयानन्द सरस्वती, प्रकाशक—वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, अजमेर ।

**युगसाधना, यज्ञ पद्धति व्याख्या अंक नव. दिस. ७४, लेख—यज्ञ की पृष्ठ भूमि एवं साधन सभार, पृष्ट ६, लेखक—श्री बद्रीनारायण जी शास्त्री ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हनुमान साधना'* पुस्तक आर्यसमाज को भेंट क्यों नहीं करते ?

(१) "तिल की अधिकता से लक्ष्मी की प्राप्ति हो, जो की अधिकता से दरिद्रता आती है। घृत की अधिकता मुक्ति प्रद है, शर्करा सर्व सिद्धि प्रद है।

(२) "वशीकरण के लिए गन्ने के टुकड़े से हवन करें।"

(३) "पुत्रेष्टि में प्रफुल्ल कनेरे के पुष्पों का हवन करें।"

(४) "वशीकरण के लिये तीन दिन तक मधु से हवन करें।"

(५) "ग्रह पीड़ा, कृत्यादोष, भूतादि प्रकोप शान्ति के लिए व्याघ्र चर्म पर बैठकर १० हजार आहुति तिल और घृत की करें।"

(६) "कारागार से मुक्ति के लिये कृष्ण पक्ष की ८ अष्टमी से चतुर्दशी तक ७ दिन नित्य तीन हजार आहुति तिल, तंदुल, मधु एवं घृत से दें मध्य रात्रि को बलि प्रयोग करें। ··· यशस्विता व लक्ष्मी मिले। शत्रु नष्ट हों। मुकदमा विजयी हो। मित्र बढें।"

---

*'पंचमुखी वीर हनुमान साधना' पुस्तक बड़ी खोज के बाद हाल ही में प्राप्त हुई। इसके सम्पादक व लेखक श्री बद्रीनारायण जी शास्त्री हैं तथा एक और आर्यसमाजी श्री भगवती प्रसाद जी शर्मा 'श्याम' आयुर्वेदरत्न प्रबन्ध सम्पादक हैं। प्रकाशन ज्योति प्रकाशन मन्दिर, कोटा, संवत् २०२७, मूल्य—भेंट एक रुपया।

सनातन सत्संग आश्रम समिति गोदावरी धाम, कोटा के संस्थापक संचालक बाबा गोपीनाथ जी भार्गव ने पुस्तक में आशीर्वचन लिखते हुए कहाहै — "साहित्य दिवाकर श्री बद्रीनारायण शास्त्री, एम. ए. हमारे सदा सहयोगी रहे हैं। वैदिक तान्त्रिक और पौराणिक साहित्य के आप विद्वान् हैं। श्री शास्त्री जी ने इस पुस्तक में संस्कृत के दुरुह स्थलों को सरल रूप में उपस्थित करके प्रशंसनीय कार्य किया है।"

पुस्तक को हमने आद्योपान्त पढ़ा और पाया कि यह मारण, मोहन, वशीकरण उच्चाटन, विद्वेषण, स्तम्भन आदि तान्त्रिक क्रियाओं के लिये ही लिखी गई है। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम रामभक्त हनुमान की भक्ति का उपहास उड़ाया है। महर्षि दयानन्द के मतानुसार तथा वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर तन्त्र-शास्त्र कोरा असत्य और पाखण्ड से भरा है। आश्चर्य तो यह है कि आर्यसमाज की वेदी से महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के सिद्धान्तों का धारावाही भाषा में समर्थन कर प्रचार करने वाले शास्त्री जी इस प्रकार की पुस्तक लिखकर पाखण्ड फैला रहे हैं।" आर्यसमाजियों के लिए विचारणीय है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(७) उशीर, चन्दन, कूठ, कुंकम, श्वेतार्क मूल, खदिर, बिल्वमूल, चूर्ण कर गोमय में मिला पिण्ड बना मन्त्रों द्वारा यज्ञ कुण्ड में रख भस्म करें। दस हजार मंत्र पढ़के इसे अभिमन्त्रित कर लें। इस भस्मी का त्रिपुण्ड लगावें। प्रबल वशीकरण है।"

(८) "लाल पुष्पों की एक हजार आहुति से वशीकरण।"

(९) "सरसों के हवन से शत्रु नाश हो"

विशेष रहस्य योग्य अधिकारी को बताये जाते हैं"*

समीक्षा :—स्थानाभाव के कारण बहुत थोड़े अंश उद्धृत किये हैं। उक्त प्रकार के पदार्थों की आहुतियों से अगर प्रबल वशीकरण होता है तो शास्त्री जी अपने विरोधियों या इस पुस्तक के लेखक को क्यों नहीं आज तक वश में कर पाये हैं? भारत सरकार को उक्त यज्ञ विधि और पदार्थ बताना चाहिये जिससे राष्ट्र के शत्रु वश में हो जाएं।

"गायत्री उपासना में पीले लाल फूलों का गेंदा हजारा शुभ है। कनेर लाल या पीला लेना चाहिए। गुलाब, चमेली, मालती के पुष्प भी ठीक हैं।"**

समीक्षा :—गायत्री उपासना (जप) में फूलों का क्या काम परन्तु आप तो गायत्री मंत्र को साकार देवी मानते हैं अतः फूल तो आपको चाहिए ही। परन्तु पीले लाल फूलों का गेंदा हजारा शुभ क्यों? क्या कनेर, गुलाब, मालती आदि फूलों के बिना गायत्री उपासना सिद्ध नहीं होगी?

"नारियल सड़े हुए न हों यह ध्यान रखा जावे। सकाम यज्ञों में प्रसाद हेतु चढ़ाये नारियल से ही पता लग जाता है कि काम पूरा होगा कि नहीं। नारियल अच्छा निकले तो कामना पूरी होती है।"***

समीक्षा :—धन्य है शास्त्री होकर तथा दुनिया भर की अपने नाम के आगे उपाधियाँ लगाकर भी आपके अन्दर इतना अज्ञान! आश्चर्य!! महा आश्चर्य!!! मैं जब पौराणिक था। तब सैंकड़ों नारियल फोड़े। अनेक बार नारियल अच्छा भी निकला पर कार्य सिद्ध नहीं हुआ। लाल फूल लाकर खूब सुन्दर काण्ड का पाठ और गायत्री का जप किया परन्तु परीक्षा में असफल ही हुआ।

"पूर्णाहुति भी नारियल से की जाती है। पूर्णाहुति में समर्पण हेतु नारियल

---

*युग साधना, यज्ञ पद्धति व्याख्या, अंक नव. दिस. ७४, लेख—यज्ञ की पृष्ठ-भूमि एवं साधन संभार, पृष्ठ ७,८, एवं ९

** ,, ,, ,, ,, पृष्ठ ११

** ,, ,, ,, ,, पृष्ठ १२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का गोला लें। उसमें घी शक्कर भर लें। फिर भेंट करें।"*

समीक्षा : महर्षि दयानन्द ने उक्त पूर्णाहुति विधि को अपने किसी भी ग्रन्थ में नहीं लिखा। (इस सम्बन्ध में विस्तृत समीक्षा भी रामदयालु शास्त्री अलीगढ़ द्वारा लिखित लेखों में देखिए, दयानन्द-सन्देश, मई ७५ एवं दिसम्बर-७५ जनवरी ७६)

वाममार्गीय यज्ञ में पूर्णाहुति के समय पशुओं के सिर काट कर डाले जाते थे। अब पशुओं के सिर के स्थान पर नारियल को सिर का प्रतीक मान लिया है।

"भारत के सभी देवी देवता जनेऊ पहनते हैं।"**

समीक्षा :—देवी देवता से क्या तात्पर्य लिया है। देवता तो सूर्य भी है, वायु भी है, और अग्नि भी है। क्या ये भी जनेऊ पहनते हैं।

"८ पान, ६ रौली (कुंकुम) १० लच्छा (मौली+कलावा) ११ सुपारी (१३) श्री फल (नारियल) बड़े हवन में 'पंच देव पूजा' हेतु पांच नारियल हों।***

समीक्षा :—ऋषि यज्ञ प्रणाली में पान, रोली, लच्छा, सुपारी एव श्री फल का विधान कहीं नहीं है। 'पंच देव पूजा' से तात्पर्य अगर, सूर्य विष्णु आदि पांच पौराणिक देवताओं से है तो यह पूरी मूर्ति पूजा है। अगर माता, पिता आदि देवता से है तो गायत्री-यज्ञों में इनकी पूजा कहीं नहीं दिखाई पड़ती।

उक्त वर्णन के कतिपय अंश को उद्धृत कर प्रस्तुत करने से पाठक गण गायत्री परिवार की नीयत का भली प्रकार अनुमान लगा सकते हैं और समझ सकते हैं कि गायत्री परिवार ६६.५% आर्यसमाज का काम करता हैं या निरा अज्ञान और पाखण्ड फैलाता है।

गायत्री परिवार में हमने जाकर देखा कि आर्यसमाज के पदाधिकारी और सदस्य किस प्रकार गायत्री परिवार के साथ मिलकर आर्यसमाज की जड़ खोदने में लगे हुए हैं—वहाँ हमने यह भी देखा किस प्रकार कुछ नामधारी संन्यासी, उपदेशक और भजनोपदेशक प्रचुर दक्षिणा के लोभ में उनके पाखण्ड-प्रसार में सहयोगी होते हैं।

श्री विजय सिंह जी आर्यसमाज के एक पुराने भजनोपदेशक तो कमाल कर गये। वे—

सतगुरू कौशिक ज्ञान बंसुरिया बजाय रहे हैं।
सबको गायत्री महायज्ञ सिखाय रहे हैं।।

---

*युग साधना, यज्ञ पद्धति व्याख्या, अंक नव. दिस. ७४, लेख – यज्ञ की पृष्ठ-भूमि एवं साधन सभार, पृष्ठ १२

** ,, ,, ,, पृष्ट १५

***युग साधना, यज्ञ पद्धति व्याख्या, अंक नव. दिस. ७४ लेख—यज्ञ की पृष्ठभूमि एवं साधन संभार, पृष्ठ ११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जैसे गीत बना-बनाकर श्री शम्भू सिंह जी कौशिक* को कौशिक अवतार, प्रभु कौशिक आदि के जय के नारे लगवाकर अपने को आर्यसमाजी मानते हुए भी इस पाखण्ड प्रसार में सहयोगी हो रहे हैं। आर्यसमाज बारा द्वारा सीतावाड़ी में आयोजित आध्यात्मिक शिविर श्री ईश्वरी प्रसाद जी प्रेम की अध्यक्षता में लगा था। उसमें आर्य सेवकों ने उक्त स्वार्थी एवं विश्वासघाती भजनोपदेशक को आर्यसमाज की वेदी पर चढ़ने के विरुद्ध आन्दोलन किया था पौराणिक संस्कारों से युक्त कुछ आर्य पदाधिकारियों ने बीच में पड़कर मामला सुलझाया।

अतः लेखक विश्वास के साथ यह लिखने पर विवश हो रहा है कि आर्य-समाज के अन्दर और बाहर के घुले-मिले इस गायत्री परिवार से फैले ढके हुए पाखण्ड से अगर आर्यसमाज को दूर नहीं रखा गया, तो वह दिन दूर नहीं जब कि आर्यसमाजों के क्रिया-कलापों एवं उद्देश्यों एवं नियमों पर पाखण्ड का मुलम्मा चढ़ जाएगा और आर्यसमाज का स्वरूप पूर्णतया विकृत हो जायेगा।

---

*इस पुस्तक के लेखक ने सुना है कि अनेक गायत्री साधकों के साधना मंदिर में श्री शम्भु सिंह जी कौशिक का चित्र भी पूजा जाता है। 'प्रभु कौशिक की जय ! का नारा तो हमारे मित्रों ने प्रत्यक्ष देखा और सुना है। क्या आर्यसमाजी अब भी इस गुरुडम और पाखण्ड का समर्थन करेंगे।

स्वस्थ और सुन्दर आंखों के लिए

भीमसेनी काजल

आंखों को नीरोग और सुन्दर बनाता है।

मुरारी ब्रदर्स

जी०-७, माडल टाऊन, दिल्ली-११०००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० प्रह्लाद कुमार

वैदिक धर्म : सार्वभौमिक धर्म

डा० प्रह्लाद कुमार गत वर्ष अपनी ३२ वर्ष की अल्पायु में १५ जुलाई, १९७७ को अकस्मात् ही हम सबको छोड़कर चले गये। डा० प्रह्लाद कुमार गत अनेक वर्षों से पी. जी. डी. ए. वी. कालेज में पढ़ा रहे थे और संस्कृत विशेषतः वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड पंडित थे। उनका शोध ग्रन्थ ऋग्वेदालंकार विज्ञसमाज में बहुत ही समाहत हुआ। उनकी वैदिक उदात्त भावनाएं पुस्तक भी बहुत ही लोकप्रिय है। ११ सितम्बर को उनका ३४वां जन्म दिन है। इस अवसर पर हम उनका शोध पूर्ण व उपयोगी लोक 'वैदिक धर्म' 'सार्वभौमिक धर्म' पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत कर उनका पवित्र स्मरण कर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि दे रहे हैं।

—सम्पादिका

'वेद' का अर्थ है विश्वात्मक ज्ञान।[1] वेद-विद्या का लक्ष्य मानव जीवन और विश्व-जीवन की रचना की व्याख्या करना है। इस प्रकार सृष्टि-विद्या ही वेद विद्या है। सृष्टि-विद्या अनन्त है। उसी प्रकार वेद-विद्या का भी कोई अन्त नहीं। तुच्छ से तुच्छ भूत के कार्यकलाप पर दृष्टिपात कीजिये उसी में एक विश्व समाया हुआ है। अणु-परमाणु-विद्युदणु (इलैक्ट्रन) के संघटन-विघटन के परीक्षण द्वारा पदार्थों व भूतों

१. विदन्ति जानन्ति – सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्या यर्थेषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते 'वेदाः' (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पृ० २०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की जानकारी लेना विज्ञान की प्रक्रिया है। किन्तु प्रत्येक भूत के भीतर विद्यमान अक्षर प्राणतत्व का दर्शन करना यह ऋषियों की पद्धति है। आचार्य यास्क के शब्दों में 'ऋषि' वह है जिसने धर्म का साक्षात्कार अर्थात् स्वयं अनुभव किया हो।१ धर्म का अर्थ है 'धारणात्मक तत्व२ कोई मत, संप्रदाय व पंथ धर्म नहीं। धर्म उन नियमों की संज्ञा है जिनसे यह सृष्टि-प्रक्रिया गतिशील है। यह सहज प्रतीत होता है कि क्षण-क्षण परिवर्तनशील जगत् के मूल में कोई ध्रुवतत्व अवश्य है। यह प्रत्यक्ष दृश्यमान ब्रह्माण्ड भौतिक पदार्थों से संपूर्ण भौतिक प्रपच प्राणी समूह से और फिर जड़-चेतन रूप उभयविध सृष्टि किसी परात्पर सूत्र से परस्पर आवद्ध है।३ धर्मचक्षुओं एवं तर्कादि से अगोचर इस 'सूत्रस्य सूत्रम्' चक्षुओं ने अन्तः प्रत्यक्ष द्वारा दर्शन प्राप्त किया है।४ मनुष्य के सम्मुख सृष्टि का जो अनन्त विस्तार है वह उसी सच्चिदानन्द स्वरूप, निर्विकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी विश्वात्मा की कृति हैं। सृष्टिकर्त्ता परमात्मा की यह जड़ चेतन सृष्टि उसकी माया या छाया नहीं अपितु उसके कुछ शाश्वत नियम सूक्ष्म और विराट् विश्व के अनन्त रूपों को एक सूत्र में ग्रथित किये हैं। विज्ञान बतलाता है कि कोटि-कोटि प्रकाशवर्षों की दूरी पर स्थित नक्षत्रों में परमाणु के विकास व विलय के जो नियम कार्य कर रहे हैं वे ही हमारी इस पृथ्वी पर भी हैं। दसों दिशाओं और सभी कालों में विश्व-प्रवाह की एक अखण्ड धारा वह रही है। अगणित परीक्षणों के उपरान्त भी इन नियमों की अस्खलित गति में किसी प्रकार का विपर्यय नहीं पाया जा सका। इन्हीं नियमों की ध्रुवता में दृढ़ विश्वास से ही आज वैज्ञानिक निःशंक होकर यहीं भूलोक पर बैठे-बैठें चन्द्र लोक व मंगल ग्रह की यात्रा की योजना तैयार कर देते हैं। इसका कारण विश्व का अखंड नियम है जो सर्वत्र फैला हुआ है। वैज्ञानिक इसे 'सुप्रीम ला' कहकर श्रद्धा से नत हैं। वैदिक भाषा में यही 'ऋत' कहलाता है। जड़-चेतन सब में ऋत का एक तंतु ओत-प्रोत है। चन्द्र-सूर्य, ग्रह-उपग्रह ये सभी ऋतपथ के अनुयायी हैं। देवगण भी ऋत से बढ़ने वाले (ऋतावृधः) कहे गये हैं। अग्नि-देव ऋत का रक्षक (गोपामृतस्य) ऋत से उत्पन्न हुआ (ऋतजातः) ऋत से घिरा हुआ (ऋतप्रवीत) है। वैदिक ऋषि कहता है कि ऋत के फैले हुए

---

१. साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। (निरुक्त १।२०)

२. धारणाद्धर्मः।

३. यो विद्यात् सूत्रं विततं यस्मिन्नौताः प्रजाः इमाः।
सूत्रस्य सूत्रं यो विद्यात् सो विद्यात् ब्राह्मणं महत् (अथर्व० १०।८।३८)

४. (क) अन्तरिच्छन्ति तं जनं रुद्रं परो मनीषया।
गृभ्णन्ति जिह्वा समम् (ऋ० ८।७२।३)
(ख) वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा यत् (अथर्व० २।१।१) (यजु० २५।८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तन्तु को देखने के लिए मैं लोक-लोकान्तर घूम आया ।१ द्युलोक और पृथिवी, लोकान्तरों और दिशाओं में सर्वत्र मैंने ऋत के तंतु को फैला हुआ देखा ।२ ऋत और सत्य उत्पन्न करने के लिए ईश्वर ने भी तप किया ।३—इस कल्पना में अनुभव की सच्चाई निहित है। ऊपर प्रतिपादित ऋतविधान में जगन्नियन्ता के सत्यसंकल्प का स्पष्ट प्रभाव है। सत्य और जीवन का गहरा सम्बन्ध है। सृष्टि-प्रवाह में जो स्थान ऋत का है मानव के नैतिक व्यवहार में वही स्थान सत्य का है। मनसा वाचा कर्मणा समरूप होना ही सत्य है। इस सत्य के प्रसाद पर आरूढ़ होने के लिए व्रत की सीढ़ी की जरूरत है। व्रत-विहीन जीवन उस नौका की भाँति है जिसके नाविक ने अपने गंतव्य स्थान का निश्चय न किया हो। देव सदा सत्यमय बने रहते हैं, क्योंकि उनके व्रत नित्य हैं। जो जीवन में सत्य के व्रत को अपनाता है उसी का जीवन दीक्षित हैं।४ वेद बताता है कि सत्यवादी का प्राण उसे उत्तमलोक में धारण करता है।५ अर्थात् सत्यवादी का जीवन ऊंचा उठता है।

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में यज्ञमय परमात्मा से संसार की उत्पत्ति का वर्णन है कि सृष्टि का सृजन करते समय आदिपुरुष ने अपनी निरन्तर आहुति देकर संसार की प्रत्येक चीज बनाई। ब्रह्माण्ड में निरन्तर एक यज्ञ हो रहा है। ब्रह्माण्ड में जो यज्ञ हो रहा है वह परोपकारार्थ है। अतः यज्ञ का सबसे प्रधान गुण त्याग है। इसके बिना यज्ञ के अन्य अंग सर्वथा पंगु हो जाते हैं। यह वह दिव्य संकल्प है जो पूर्णशक्ति पूर्णरूप से दिव्य बुद्धि द्वारा प्रेरित होता है। यज्ञ वह शक्ति है जिससे सत्य चेतना क्रिया किया करती है। यज्ञ का भाव है कि मनुष्य के पास अपनी सत्ता में जो कुछ है उसे वह ब्रह्मार्पण कर दे। भगवान् मनु का कथन है कि पंचमहायज्ञों व इतरयज्ञों के अनुष्ठान से मनुष्य अपने शरीर को ब्राह्मी अर्घात् वेद और परमेश्वर की भक्ति का

---

१. परि विश्वा भुवनान्यायम्।
ऋतस्य तन्तुं विततं दृशेकम्॥

२. परिद्यावा पृथिवी सद्य इत्वः
परि लोकान् परि दिशः परि स्वः।
ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य
तदभवत् तदपश्यत् तदासीत्॥

३. ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्।
तपसो ध्यजायत (ऋ० १०।१९०।१)

४. यः सत्य वदति स दीक्षितः (कौ० ७।३)

५. प्राणो ह सत्यवादिनमुत्तमे लोक आदधत् (अथ० ११।प्राण सूक्त)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधाररूप बना लेता है।१ शतपथ ब्राह्मण में अत्यन्त मार्मिक ढंग से अग्निहोत्र कर्म से सम्बद्ध विभिन्न वस्तुओं की आध्यात्मिक व्याख्या की गई है। इसमें बताया गया है कि यज्ञ केवल भौतिक ही नहीं होता, अपितु उसका मर्म समझने के लिए या उसका उत्कृष्ट फल प्राप्त करने के लिए उसको आध्यात्मिक दृष्टि से समझकर उसका आध्यात्मिक अनुष्ठान करना आवश्यक है। संदर्भ इस प्रकार है "अग्निहोत्री गौ इस अग्निहोत्र की वाणी है। उसका बछड़ा इसका मन ही है। तो यह मन और वाणी समान से होते हुए भी भिन्न हैं अत: बछड़े और उसकी माता को एक समान रस्सी से बांधते हैं। तेज अर्थात् अग्नि ही अग्निहोत्र की श्रद्धा तथा इसका आज्य (घी) सत्य है।"—उस याज्ञवल्क्य ने कहा—"निश्चय ही यहाँ तब (सृष्टि के आरम्भ में) कुछ भी नहीं था, फिर भी सत्य का श्रद्धा में हवन किया जाता था।"

वस्तुत: यज्ञ वैदिक जीवन का आधार है। यह वह है जिस पर ज्ञान, कर्म, उपासना, योग, दर्शन विज्ञान आदि अपना कृत्य पूरा करते हैं। यज्ञ उस आन्तरिक और बाह्य प्रक्रिया का नाम है जिसके द्वारा यजमान यज्ञ पुरुष के प्रति समर्पित हो जाता है।

उपर्युक्त समग्र विवेचन का अभिप्राय यह है कि समस्त वेद दर्शन के केन्द्रीभूत विषय हैं—आत्मा परमात्मा प्रकृति ऋत-सत्य-व्रत-यज्ञ। जगत् के कारणभूत तीन मूल तत्वों का याथातथ्य उपदेश कर यज्ञमयी सृष्टि में निहित ऋत सत्य एवं व्रतों का दर्शन ही वेददर्शन है और वैदिक धर्म भी यही हैं आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का सम्यग् विज्ञान प्राप्त कर 'ऋत' के आधीन सत्यशील और व्रतपरायण होकर यज्ञकर्मों को करते हुए पूर्ण वैभवशाली जीवन व्यतीत करना, उस सर्वान्तर्यामी परमसत्ता का अन्त: प्रत्यक्ष करना तथा सब भूतों में एक आत्मतत्व के दर्शन द्वारा समदृष्टि बनकर प्राणिमात्र का उपनाद करना, अपनी, समाज की, राष्ट्र की तथा सारी मानवता की शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करना। वेद में धर्म-कर्म, विज्ञान, दर्शन एवं उपासना योग कोई पृथक् विषय नहीं है। वहां जीवन एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है। व्यक्ति का संपूर्ण जीवन एक अविच्छिन्न इकाई है। वहां व्यक्ति की सपूर्ण शक्तियों का उपभोग कर एक ऐसी पूर्ण और सहज जीवन पद्धति के विकास करने पर बल दिया जाता है जिसमें भौतिक एवं मानसिक शक्तियों को व्यक्तित्व के सर्वांग सुन्दर विकास और समाज निर्माण के मार्ग में सहभोगी बना लिया जाता है।

---

१. महाद्यज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनु: (मनु० २।२८)

२. द्र० शत० ब्रा० ११।३।१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्पष्ट है कि वेद के इस धर्म, दर्शन और जीवनपद्धति को किसी मत, संप्रदाय या पंथ के साथ नहीं जोड़ा जा सकता। वह तो ऋततत्व के पुजारी सत्यान्वेषी ऋषियों की सत्यानुभूति का फल है। वह देश-काल की सीमाओं में न बाँधा जाने वाला सार्वभौम सत्य हैं। संसार के विभिन्न मतमतान्तरों की अनेक मान्यताएं तर्क और विज्ञान की कसौटी पर असत्य सिद्ध होती हैं। किन्तु वैदिक धर्म और दर्शन इन कसौटियों पर खरा उतरता है। प्राणिमात्र में आत्मतत्व के दर्शन कराने वाले इस उदात्त धर्म एवं इस विश्ववारा संस्कृति में किसी प्रकार के द्वेष, भेदभाव और अत्याचार की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। वेद स्वयं कहता है कि आत्मदर्शी के लिए तो समस्त विश्व एक घोंसले की तरह बन जाता है—"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।" ज्ञान-कर्म उपासना की जो त्रिवेणी इसमें प्रवाहित हुई है वह मनुष्यमात्र के लिए समान उपयोगी है।

वैदिक दर्शन कोरा ऊहात्मक दर्शन शास्त्र नहीं है और न ही वैदिक धर्म थोथा आदर्शवाद है। इस दर्शन में विश्व मिथ्या या भ्रम अथवा ब्रह्म की माया या छाया नहीं है। यह भी विश्वात्मा की तरह अनादि और अनन्त है। इसमें उत्पन्न होने वाले जीवों की भी अपनी पारमार्थिक सत्ता है। ऋग्वेद में जीवात्मा, परमात्मा और प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध को एक मनोहर दृष्टान्त द्वारा समझाया गया है। वहां कहा गया है कि नित्य प्रकृतिरूपी वृक्ष पर आत्मा और परमात्मा नामक दो पक्षी बैठे हैं जो नित्यता की दृष्टि से समान परस्पर मित्र हैं। उनमें से एक जीव तो अपने कर्मानुसार मधुर या कटु फलों का भोग करता है और दूसरा अर्थात् परमात्मा, भोग न करता हुआ केवल साक्षी बनकर उसे देखता है।१ यहाँ पर हर जीवन की

---

१. (क) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥
(ऋ० १।१६४।२०)

(ख) शतभिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसा तन्नाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो, मध्या रीरिषतायुगन्तोः॥
अर्थात् – हे देवताओ! आपने सौ वर्ष के आस पास ही हमारे तनों का बुढ़ापा बनाया है। तब तक हमारे पुत्र भी पिता हो चुके होते हैं। हमारा जीवन इसी प्रकार चले। बीच में ही यह टूट न जावे।

(ग) मा नो हेतिर्वि व स्वतः,
आदित्या कृत्रिमा शरः।
पुरा न जरसो वधात् (ऋ० ८।६७।२०)
अर्थात्—हे आदित्यो! हमारा जीवन बुढ़ापा तक ठीक चले कहीं उससे पहले ही काल की कटनी इसे काट न दे या और कोई अन्य अस्वाभाविक मार इसे मिटा न दे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सार्थकता है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त शरीर प्राणी के लाभ एवं उपयोग के लिए हैं। उसकी दी हुई अन्य भौतिक वस्तुएं भी जीव के उपयोग के लिये हैं। उनमें हेयता या तुच्छता कैसी ? वैदिकदर्शन परमेश्वर को निर्णखिल विश्व में पूर्णतया ओतप्रोत मानता है और उस ब्रह्म के सच्चिदानन्दस्वरूप होने पर यह विश्व भी तद्रूप ही है। इस प्रकार यह विश्व दुःखरूप, मिथ्या वा भ्रांति नहीं हो सकता। अतः संसार को दुःखमय मानकर उससे डरकर भागने का उपदेश यहां नहीं मिलता। यहाँ तो हर ऋषि अपनी सब इन्द्रियों के उपभोग सामर्थ्य को रखते हुए पूरे सौ वर्ष व इससे भी अधिक ही जीना चाहता है। उसे जीवन के सब वैभव चाहियें—दुधारू गौएं चाहियें प्रजननशक्ति संपन्न साँड चाहियें तीव्रगामी बलवान् घोड़े चाहियें, उत्तम रथ चाहियें, अन्न चाहिये, धन चाहिये, स्वर्ण चाहिये, वीरपुत्र चाहिये।१ अतः वेद मानव जीवन की लोकयात्रा की सिद्धि का मार्ग भी प्रशस्त करता है। उसमें मनुष्योपयोगी सब ज्ञानों का मूल विद्यमान है—गणित. ज्योतिष, आयुर्वेद, नौविमानादि विद्या, सृष्टि विद्या विविध प्रकार की कलाएं उद्योग-धन्धे, व्यापार देशाटन, काव्यशैलियाँ काव्यालंकार आदि कितने ही विषय वेद में समाविष्ट हैं। स्वामी दयानन्द का कथन है कि वेद के चार विषय हैं—"विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान। इनमें भी विज्ञान मुख्य है क्योंकि इसमें परमेश्वर से लेकर तृणपर्यन्त सभी पदार्थों का साक्षात् ज्ञान है।' इस सृष्टि वर्णन के संदर्भ में ही यज्ञविद्या, उद्गीथविद्या, भूतविद्या, अक्षरविद्या, आदि न जाने कितनी विद्याओं के संकेत वेदों में स्थान-स्थान पर प्राप्त होते हैं। उन सबका स्वरूप और मर्म क्या है ? यह आज भी वेद के विद्वानों के लिए चुनौती है। यह सब देख-जानकर स्वामी दयानन्द की यह धारणा हृदय में घर कर लेती है कि वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। विज्ञान और दर्शन दोनों के मूलभूत सिद्धान्त वेद में प्रतिपादित हैं। वर्णाश्रम की पद्धति पर एक सुदृढ़ समाज व्यवस्था की नींव वैदिक महर्षियों की एक अमूल्य देन है।

वेद ने मानवमात्र के कल्याण के लिए सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक नीतिशास्त्र का विधान किया है। राजा और प्रजा के धर्म व पारस्परिक संबन्ध नियत कर मनु ने सुदृढ़ शासन व्यवस्था की है। अतः भगवान् मनु के ये वचन सर्वांशतः सत्य है—

"सेनापतित्व, राज्यशासन, दण्डविधान नेतृत्व तथा चक्रवर्ती राज्य शासन इन सबके लिए वह योग्य होता है जो वेद शास्त्र को जानता हो। भूत वर्तमान और भविष्यत् सब वेदों से सिद्ध होते हैं। सनातन वेदशास्त्र ही संसार के सब प्राणियों के लिए परम साधन है। वृद्धों, विद्वानों और साधारण मनुष्यों के लिए वेद ही

---

१. आ गावो अस्मन्नुत भद्रमक्रन्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावती : पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः। (ऋ० ६।२८।१)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सनातन चक्षु है। इसकी इयत्ता असीम है—दुर्विज्ञेय है।१ भगवान् व्यास का भी मंतव्य है कि इस लोक में समस्त आगतशास्त्र तथा सभी प्रवृत्तियां वेद को ही आधार बनाकर प्रवृत्त हुई हैं।२ मुनि याज्ञवल्क्य का कथन है कि वेदशास्त्र के अतिरिक्त कोई अन्य शास्त्र नहीं है। सभी शास्त्र सनातन वेद शास्त्र से ही निःसृत हुए हैं।३

वेद के सम्बन्ध में पाश्चात्य वैदिक विद्वानों ने अनेक भ्रांतियां उत्पन्न कर दी हैं। इसका कारण उनकी विकासवाद में अंधभक्ति है जिसके अनुसार प्रारम्भिक मनुष्य जंगली थे तथा मानव ने भाषा, विज्ञान तथा आत्म-विज्ञान में उत्तरोत्तर उन्नति की है। ऐसे ही एक जर्मन विद्वान् ओल्डनबर्ग का विचार है कि वेद में—प्राचीन गडरियों के विस्मय व आशंका से भरे गीतों के अतिरिक्त रखा क्या है? वेद केवल पुरुषरूप में कल्पित प्राकृतिक घटनाओं के प्रति की गई भद्दी पूजा है। अथवा, इसमें कर्मकाण्ड में बोले जाने वाले अर्धधार्मिक, अर्थ जादू भरे स्तोत्र हैं, जिनको पढ़कर आदिकाल के अर्ध श्रद्धालु पशुप्राय मानव आशा करते थे कि इन मन्त्रों के प्रभाव से उन्हें सुवर्ण, अन्न और पशु मिलेंगे और वे रोगों अनर्थों एवं राक्षसी प्रभावों से बच सकेंगे और इस प्रकार ऐहलौकिक स्वर्ग के स्थूल आनन्द भोग सकेंगे। इन जंगली पुरोहितों के देवता भी जंगली ही थे, जिनका काम, जब चाहा, घोड़ों और रथों पर आसमान चीरते हुए थोड़ी सी पुरोडाश, मक्खन, मांस के टुकड़े और एक प्याला सोम के लिए दौड़ते चले जाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।—न वैदिक धर्म में आध्यात्मिक अभ्युदय के लिए कोई दैवी स्तुति ही है। ऐसा लगता है कि जैसे उनका काम वैदिक कविता और स्वर्ग की कामना के अतिरिक्त कुछ नहीं था।"४ विण्टरनित्स लिखते हैं—"ऋग्वेद के सूक्तों में सपिण्ड्य और सगोत्र विवाह, स्त्रीअपहरण, व्यभिचार, भ्रूणहत्या तथा धोखा, चोरी और डकैती का भी उल्लेख है। आधुनिक जातियों की वर्गीकरण विद्या (Ethnology) सत्युगी पुरुषों का अस्तित्व

---

१. सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति॥
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति।
विभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रं सनातनम्॥
पितृदेव मनुष्याणाँ वेदश्चक्षुः सनातनम्।
अशक्यमप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः॥ (मनु० १२।१००, ९७, ९४)

२. यानीहागमशास्त्राणि याश्चकाश्च प्रवृत्तयः।
तानि वेदं पुरस्कृत्य प्रवृत्तानि यथाक्रमम्॥ (महाभा० अनु० १२२।४)

३. न वेदशास्त्रादन्यत्तु किंचिच्छास्त्रं हि विद्यते।
निःसृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात् सनातनात्॥

४. Religion des Veda Berlin, 1894.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि नहीं मानती, मानवजाति का वर्गीकरण विद्या (Ethnology) का आधुनिक विद्वान् जानता है कि पहला मनुष्य अति असभ्य था। अति विभिन्न सांस्कृतिक अवस्थाओं की अनन्त सीढ़ियां चढ़कर उन्नति होते होते अर्धसभ्य जातियां और सभ्य जातियां बनी हैं। किन्तु यह विकासवाद वेदों के आगे टिक नहीं सकता। विश्ववाङ्-मय में प्राचीनतम माने जाने वाले ग्रन्थ ऋग्वेद में एक परमसत्ता की स्पष्ट स्वीकृति, सृष्टि से विद्यमान एक अटूट नियम 'ऋत' का अन्वेषण, विश्वबन्धुत्व, उन्नत सामाजिक व्यवस्था इत्यादि तथ्यों से इस काल्पनिक विचार का निराकरण हो जाता है।

इसके विपरीत मैक्समूलर, केगी, पिशेल, गेल्डनर आदि कुछ ऐसे भी विद्वान् हैं जोकि वेद के उत्कर्ष और उत्तम काव्य के काफी प्रशंसक हैं तथापि वे वेद को मात्र गाथाशास्त्र और कर्मकाण्डपरक पुस्तक मानते हैं तथा वेद के आध्यात्मिक तथा नैतिक महत्व की उपेक्षा करते हैं। उनकी यह भ्रान्ति वस्तुतः प्रसिद्ध वेदभाष्यकार आचार्य सायण के भाष्य से उत्पन्न हुई है। सायणभाष्य के अनुसार वैदिक शिक्षा का उपयोग ऐसे आचार सम्बन्धी धर्माचरण में नहीं है, जिसके नैतिक तथा आध्यात्मिक परिणाम होते हैं किन्तु याज्ञिक क्रियाकलाप के यांत्रिक तौर पर किये जाने में हैं जिसके भौतिक फल मिलते हैं। इसी कर्मकाण्ड के सांचे के अन्दर वह वेद की भाषा को ठोक पीटकर ढालता है।

वेद-रहस्य को प्रकाशित करने वाली एक किरण स्वामी दयानन्द के भाष्य में उदित हुई। स्वामी जी ने आचार्य यास्क के निरुक्त तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के सूक्ष्म अध्ययन तथा वेद की अन्तःसाक्षी से इस रहस्य को जान लिया कि वैदिक शब्द यौगिक तथा योगरूढ़ हैं, रूढ़ नहीं। इस प्रकार स्वामी जी ने बहुदेववाद (Polytheism) तथा मेक्समूलर द्वारा प्रतिपादित सर्वेश्वरवाद (Henotheism) का प्रबल खण्डन किया। वस्तुतः इन पाश्चात्य विद्वानों ने तुलनात्मक भाषाशास्त्र (Comparative Philology) तुलनात्मक गाथाशास्त्र (Comparative Mythology) आदि का जो बखेड़ा खड़ा कर रखा है वह अभी अटकल पच्चू ही है तथा उसके परिणाम परिवर्तनशील हैं। वैदिक मन्त्रों के आधिभौतिक,

जन-ज्ञान के नए संपादक

आरम्भ से ही सब की इच्छा थी कि जन-ज्ञान का संपादन पं० भारतेन्द्र नाथ संभालें। पर उन्होंने कभी यह स्वीकार नहीं किया।

अब सुमेधा के विवाह के बाद जब नया संपादक बनाने की आवश्यकता अनुभव हुयी तो हमने फिर उनसे आग्रह किया और हर्ष का विषय है कि उन्होंने यह दायित्व स्वीकार कर लिया। पाठक! अब जन-ज्ञान को नए संपादक की चिर-परिचित प्रतिभा से और भी अधिक उपयोगी पाएंगे विश्वास है।

—अध्यक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में हजारों ईसा है

एक अमरीकी पादरी थे, नाम था पादरी रेवरेंड आवर। ईसाई धर्म के प्रचारार्थ उन्हें भारत भेजा गया वे भारत आए और पूना के समीपस्थ अंचल में आरम्भ किया उन्होंने ईसाई मजहव का प्रचार कार्य।

एक दिन वह कुछ लोगों के साथ हिन्दू धर्म की धुआँधार आलोचना करने में तल्लीन थे। वहीं एक सज्जन पं० सीताराम गोस्वामी भी उपस्थित थे। उनसे रहा न गया और उन पादरी महोदय को सम्बोधित करते हुए बोले 'बिना सोचे-विचारे ही आप हिन्दू धर्म की निन्दा क्यों करते हैं? उचित तो यह है कि हिन्दू धर्म की निन्दा करने के पूर्व आप वैदिक धर्म को भली भांति समझ लें।'

पादरी महोदय एक विचारवान स्वयं जिज्ञासु व्यक्ति थे। उन्हें पंडित जी की बात लग गई। उन्होंने संस्कृत भाषा एवम् मराठी भाषा का ज्ञान भी प्राप्त किया। दोनों भाषाओं का समुचित ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने अनेक हिन्दू धर्म ग्रन्थों एवम् महाराष्ट्रीय संतों के साहित्य का गहन अध्ययन तथा चिन्तन व मनन किया। बस फिर क्या था। उनके मानस पटल पर पड़े भ्रान्तियों के सघन घन विदीर्ण हो गए। वैदिक ज्ञान के पावन आलोक ने अंधकार को हटाकर उन्हें एक नवीन प्रकाश प्रदान किया। परिणामतः वैदिक धर्म का कल तक का निन्दक हिन्दू धर्म के सत्य स्वरूप को समझकर उसके प्रति अनुरक्त हो गये। यह इस धर्म की महानता से इतने अधिक प्रभावित हो उठे कि उन्होंने अमरीकी मिशन को पत्र लिखा —

'भारत में हजारों ईसा हैं अर्थात ईसा जैसे संत हो चुके हैं। अतः भारत में ईसाई धर्म के प्रचार का कोई औचित्य नहीं है। भारत में ईसाई धर्म के प्रचार कार्य को पूर्णतः बन्द कर देना चाहिए। मैंने संत ग्रन्थों का अध्ययन किया है। मैंने जान लिया है कि भारत तो सत्य धर्म का अगधि सागर है। मैं मिशन से त्यागपत्र देता हूं आज के पश्चात मैं ईसाई धर्म का प्रचार नहीं करूंगा।'

उन्होंने ईसाई धर्म के प्रचार कार्य से विरक्त होने का निश्चय तो किया ही साथ ही हिन्दू धर्म की निन्दा और आलोचना पर प्रायश्चित करने के लिए उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति जो उन दिनों लगभग आठ लाख रुपये की थी, उसे भी उन्होंने पूना स्थित भारतीय इतिहास शोधका मण्डल को समर्पित करने का निश्चय कर लिया है और अपने उपरोक्त पत्र से ही अपने इस निर्णय की सूचना भी अमरीकी मिशन को दे दी।

उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति से प्राप्त होने वाली राशि इस हेतु मंडल को समर्पित किया था कि उससे मंडल भारतीय संत ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित करता रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—मनुदेव "बन्धु" शास्त्री, एम० ए०
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

आचार्य दयानन्द की आचार संहिता

जिस समय समग्र संसार के लोग दीपकावलियों से अपने गृह को विभूषित कर रहे थे; तथा आमोद-प्रमोद में निरत थे। उस समय भारत के भाग्य विधाता ब्रह्मचर्य की साक्षान्मूर्ति और सदाचार के प्रतीक आचार्य दयानन्द का शरीर रूपी दीपक टिम-टिम करके जलता हुआ अपनी अन्तिम सांसे गिन रहा था; मानो उस समय उद्घोषणा करते हुए कह रहा हो कि ऐ दुनियां वालों! मैंने अपने जीवन दीप से लाखों निर्जीव दीपकों को जीवन दिया है, जिसके प्रकाश में आज तुम विचरण कर रहे हो। सचमुच मेरे आचार्य ने अपने जीवन ज्योति से लाखों निस्सहायों की सहायता, अनाथों को सनाथ, भूखों को भोजन, तथा अपने धर्म से भ्रष्ट हुए लोगों को धर्म के सच्चे स्वरूप का पाठ पढ़ाया।

पाठकम हानुभाव! आपको स्मरण होगा जिस समय आचार्य प्रवर मृत्यु शय्या पर लेटे हुए थे उस समय उनके प्रसन्न चित्त वाले मुखमण्डल को देखकर कट्टर नास्तिक विचारों वाला गुरुदत्त विद्यार्थी आस्तिक बन गया, उसका समस्त जीवन आस्तिकता से ओत-प्रोत हो गया एवमेव पं० लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी समर्पणनन्द जी, इत्यादि पुरुषों को अपने पथ का पथिक बनाया तथा संन्यासाश्रम सेवी बनाया; जिन्होंने अपना समस्त जीवन आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार में लगाया।

भद्र पुरुषो! अब मैं अपने लेख के मुख्य विषय की ओर आता हूं। हमें देखना है कि आचार्य दयानन्द क्या आचार्य पद के योग्य थे; सबसे पहले हमें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य शब्द के ऊपर विचार करना होगा। निरुक्तकार महर्षि यास्क आचार्य पद की निरुक्ति करते हुए लिखते हैं— आचार्यः कस्माद् आचारं ग्राहयत्याचि नोत्यर्थाना चिनोति बुद्धिमिति वा अर्थात् जो आचार की शिक्षा देता है, और शिष्यों की बुद्धि का चयन करता है, बुद्धि का परिष्कार करता है तथा बुद्धि का विकास करता है।

दूसरी और मनु महाराज आचार्य का लक्षण निम्न प्रकार करते हैं— "उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् गुरुः। सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते यानि जो गुरु अपने शिष्य को उपनयन संस्कार करके कल्प और रहस्य सहित वेद पढ़ाता है वह आचार्य कहाता है।

कोई अन्य विद्वान् आचार्य शब्द का लक्षण करते हुए लिखता है— आम्नाय-तत्वविज्ञानाच्चराचरसमानतः। यमादि योग सिद्धत्वादाचार्य इति कथ्यते" इस प्रकार जो आम्नाय का ज्ञाता हो, यम नियमादि योग के अष्टयंगों की सिद्धि जिसेप्राप्त हो, अपने मत की प्रस्थापना कर रहा हो, अपने मत का प्रचार कर रहा हो तो उसे आचार्य कहते हैं। वहीं मनुष्यों की बुद्धि को खींच कर एकत्र लगाता है। इस प्रकार आचार्य शब्द के अर्थ पर विद्वानों के अनेक मत हैं।

आचार्य दयानन्द सदाचार को अपने जीवन के उत्थान का प्रमुख अंग मानते थे। केवल अपने जीवन का ही नहीं अपितु समस्त मानव समाज के लिए अत्यन्तोपयोगी मानते थे। इसका विवरण आप उनके साहित्य में पाते हैं। दयानन्द के प्रत्येक ग्रन्थ में ब्रह्मचर्य के पालन से राजा और प्रजा का उत्थान होता है।" अन्यत्र शिक्षा विषय में लिखते हैं "जब आठ वर्ष की सन्तान हो जाए तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरुष व स्त्री दुष्टाचारी हो, उनसे शिक्षा न दिलावें। किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों, वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं। विद्या पढ़ाने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए। और वे लड़के और लड़कियों की पाठ-शाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पाच वर्ष की लड़की न जाने पावे। जब तक वे ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी रहें, तब तक स्त्री व पुरुष का दर्शन-स्पर्शन, एकान्त सेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग ननको इन बातों से बचावें, जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, स्वभाव शरीर और आत्मा के बल से युक्त हो के आनन्द को नित्य बढ़ा सकें।"

इन पक्तियों में सदाचार की झलक दृष्टि गोचर होती है आचार्य दयानन्द ब्रह्मचर्य को सभी सुधारों का सुधार मानते हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम तो सभी आश्रमों का मूल है। आधार है। अगर हम मूल को ही समाप्त कर देते हैं तो "छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्" वाली उक्ति चरितार्थ हो जायेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य संहिता का पाठ पढ़ाने वाले आचार्य दयानन्द की एक घटना मेरे स्मृति पथ पर अवतरित हो रही है—एक बार आचार्य महोदय ध्यानावस्थित थे। तभी एक सुन्दरी आकर उनके चरणों में नतमस्तक होकर बोली कि मैं आप जैसा पुत्र चाहती हूं। तब मेरे आचार्य ने कहा था—अर्चनीय माता ! आज से तुम मेरी माता हो और मैं तुम्हारा पुत्र हूं। कितनी महती निष्ठा थी ब्रह्मचर्य के प्रति मेरे आचार्य की। ऐसी निष्ठा ऐसी अगाध श्रद्धा संसार के किसी भी मानव में नहीं मिलेगी।

विवेकशील पुरुषो ! मुझे तो आचार्य दयानन्द के साहित्य के प्रत्येक पन्ने से ब्रह्मचर्य की सुगन्ध आती है, मानो वे पन्ने दुनियां वालों को अपने लेखक की यशोगाथा सुना रहे हों। अगर आप थोड़ा सा पुरुषार्थ करेंगे तो आप भी इस सुगन्ध को सूंघ कर अपना जीवन सफल बना लेंगे।

इतना ही नहीं, आचार्यवर्य गृहस्थियों को भी ब्रह्मचर्य और सदाचार की शिक्षा देते हैं। अखण्ड ब्रह्मचारी ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश का अधिकारी है। मनु महाराज के श्लोक को उद्धृत करते हुए लिखते हैं—"वेदानधित्य वेदो वा वेदं वापि यथाक्रमम्। अविप्लुत ब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत" जब यथावत् ब्रह्मचर्य में आचार्यनुकूल वर्त्तकर, धर्म से चारों तीन वा दो अथवा एक वेद को साङ्गोपांग पढ़के जिसका ब्रह्मचर्य खण्डित न हुआ हो, वह पुरुष वा स्त्री गृहाश्रम में प्रवेश करे।" आगे आचार्य प्रवर विवाह का समय निर्धारित करते हुए जोरदार शब्दों में उद्घोषणा करते हैं—सोलहवें वर्ष से लेकर चौबीसवें वर्ष तक कन्या और पच्चीसवें वर्ष से लेकर ४८ वें वर्ष तक पुरुष का विवाह होना उत्तम है। इसमें सौलह वर्ष से कम लड़की तथा २५ वर्ष के कम के पुरुष का विवाह होना ही नहीं चाहिए। क्योंकि ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहण पूर्वक विवाह के सुधार से ही सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।',

क्या हमारी सरकार प्रजा को ब्रह्मचर्य और सयम की शिक्षा दे रही है ? क्या विवाह के लिए २५ व १६ वर्ष की आयु निर्धारित कर रही है ? दूसरी ओर जब जनसंख्या बढ़ती है तो उसको रोकने के लिए नसबन्दी और लूप जैसे कृत्रिम संसाधनों का प्रयोग करती हैं। प्रत्येक शिक्षणालयों में वही पाश्चात्य शिक्षा दिलायी जा रही है। अगर सरकार आचार्य दयानन्द के कथनानुसार अपना कार्यक्रम जनता के समक्ष प्रस्तुत करती है तो उसे जनता सहर्ष स्वीकार करेगी।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि दयानन्द सदाचार को, ब्रह्मचर्य को सर्वोपरि मानते हैं इसके अभाव में कोई भी मानव आचार्य की पदवी नहीं पा सकता। केवल उपाधि प्राप्त कर लेने से ही आचार्य नहीं बन सकता। वास्तविक आचार्य बनने के लिए तो आचार्य दयानन्द का सान्निध्य प्राप्त करना होगा। अगर देश को अर्थहीनता से उन्मुक्त करना है तो संयम का पालन करना होगा। अगर अपने देश को सभी देशों में अग्रगण्य बनाना हो तो सदाचार का ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य रूपेण करना होगा। यही मेरे आचार्य प्रवर का आचार्यत्व है। दीपमालिका का मनाना तभी सार्थक होगा जब हम आचार्य दयानन्द के आचार्यत्व को समझें तथा उस पर चलने का प्रयत्न करें अन्यथा दीपमालिका का मानना निरर्थक ही रहेगा। वास्तव में सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

सुश्री उर्मिलार्य "भारती"

सेवा की जीत

❀ ❀

मृदुला आज कुछ अनमनी सी गम्भीर सी और अपने में खोई-खोई सी है।

कई दिन हुए उसके भैया बनारस गये हैं शायद आज लौटकर आ जायें। यह सोच कर ही जैसे वह गुदगुदा उठती थी। भैया उसके रिश्ते की बात निश्चित करने गये हैं। रात को ग्यारह बजे जब वे लौटकर आये तब तक वह सो चुकी थी। उनकी आहट पाकर जाग गई, और अपने पलंग पर लेटे-लेटे ही भैया एवं भाभी का वार्तालाप को सुनने लगी।

अरे, यह क्या भैया तो रो रहे हैं भाभी पूछ रही थी "क्या बात है आपकी तबीयत तो ठीक है, सब कुशल तो हैं।

"हाँ सब कुशल है शीला, मगर अब क्या होगा ?' भैया रुंधे कण्ठ से बोले, "क्यों क्या कहा उन्होने ? आप इतने हताश से क्यों हैं ?" भाभी बोलीं।

"उन्होंने साफ इन्कार कर दिया है। क्योंकि वे विवाह में अच्छा खासा दहेज तथा साथ में एक मोटी सी रकम चाहते हैं। मैंने बहुत कहा, पिताजी का वचन भी उन्हें याद दिलाया, परन्तु उन्होंने एक न सुनी। वे तो पैसे के लोभ में जैसे सब कुछ भूल गये हैं" यह कहते हुए भैया पुनः रो पड़े।

इस समाचार से भाभी अत्यन्त दुःखित हो उठी, यह स्वाभाविक ही था। बोलीं हमने न जाने क्या-क्या आशायें लगा रखी थीं पर अब तो जैसे सब मिट्टि में मिल गई। क्या आपने 'आलोक' से भी बातें की थीं ?" "हां, उससे बातें की थी, मगर उसने कहा मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता।

"एक बात सोचता हूं शीला, यह मकान सम्पत्ति के रूप में है, क्यों न इसे बेचकर मृदु का विवाह कर दें।"—भैया कह रहे थे।

"हाँ-हां यदि वे सहमत हो जाए, तो कर दीजिए। जहां भी शादी करेंगु दहेज तो देना पड़ेगा। फिर क्यों न वहीं कर दें, घर वर अच्छा है।"

"ठीक है, पर देखो मृदु को कुछ, पता न चले इस बात का ध्यान रखना वह बहुत ही भावुक लड़की है" सस्नेह भैया बोले।

परन्तु उन्हें क्या पता था कि वे जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ उससे छिपाना चाहते हैं वह मृदुला ने भी सुन लिया है उसकी सारी पुलकन और खुशी जैसे छूमन्तर हो गई। अपने भाग्य को कोसती हुई बड़बड़ा उठी—"नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता। यह घर नहीं बिकेगा। अपने भैया के एकमात्र सम्पत्ति को वह नहीं छीनेगी, भैया ने उसके लिए क्या नहीं किया। उसकी हर छोटी से छोटी खुशी को, आकंक्षाओं को उन्होंने सहर्ष पूर्ण किया है, उसे उच्च शिक्षा दिलाई, बढ़िया खिलाया, पहनाया—और आज वह उनका वही एक मात्र मकान बिकवाकर उन्हें दर-दर का भिखारी नहीं बनने देगी" संकल्प की आभा से उसका चेहरा जैसे चमचमा उठा।

☼ ☼ ☼

उसे याद आया एक बार उसके पिता जी के मित्र उसके घर पर आये थे। मृदुला को देखकर उन्होंने कहा था कि मृदुला को अपने आलोक के लिए आप से मांग लूं और बात की बात में दोनों वचन बद्ध हो गये थे। फिर उनके आदेशानुसार ही मृदुला की पढ़ाई लिखाई चलती रही थी। पिता जी की मृत्यु हो गई। मां तो उनके शैशव काल में ही प्रभु को प्यारी हो गई थीं, पिता जी भी चले गये परन्तु उसके भैया व भाभी ने कभी भी उसे यह अभाव नहीं खटकने दिया। उसकी हर खुशी उनकी अपनी खुशी थी। अपने भैया के समस्त उपकारों को स्मरण कर वह उनके प्रति श्रद्धा से भर उठी। आज भी तो वे कितना बड़ा त्याग करने जा रहे हैं?

आलोक को लेकर क्या नहीं सोचा उसने। उसके हृदय में उस परिवार के प्रति कितनी अधिक श्रद्धा है, कभी ऐसा दिन भी आ सकेगा वे लोग कल्पना भी तो नहीं कर सकते थे। ये सभी बातें एक-एक कर उसे याद आती रहीं और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

सुबह मृदुला को उठने में देर हुई, तो भाभी अन्दर आई। सप्रेम उसके सिर पर हाथ फेरते हुई बोली—'उठो मृदु, देखो तुम्हारे भैया आ गये हैं।

'तुम्हें बुला रहे हैं। उठो-उठो न।"

"नहीं मैं नहीं जाऊंगी उनके पास, मैं अपना मुंह नहीं दिखाऊंगी कितनी अभागी हूं मैं भाभी मेरे कारण भैया को यह अपमान सहना पड़ा। एक ही श्वांस में सब कुछ कहती गई मृदु और रो पड़ी।

भाभी उसकी यह बातें सुनकर आश्चर्य चकित हो उठी, "यह क्या हो गया तुम्हें, लगता है यह तुमने कोई दुःस्वप्न देखा है।"

भाभी मैंने तुम्हारी और भैया की सारी बातें सुन ली हैं। मैं विवाह नहीं करूंगी, मैं यह घर नहीं बिकने दूंगी।"

"मगर यह कैसे सम्भव है मृदु! विवाह तो करना ही है और विवाह में दहेज तो देना ही पड़ता है" भाभी ने समझाते हुए कहा।

"नहीं-नहीं यह गलत है भाभी क्या तुमने यह भी सोचा है कि मकान को बेचकर फिर क्या होगा क्या यही एक ऐसी समस्या है कि न सुलझाई जा सके? इसके पश्चात् कोई और समस्या नहीं है? भाभी और भी तो बच्चे हैं। कल ही तो रजनी की शादी करनी है तब क्या बेचोगी बोलो?" नहीं मैं इतनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभागी नहीं हूं कि किसी का हक छीन लूं। आपने मुझे हर प्रकार से योग्य बनाया है, मैं इस दिशा में कोई कदम उठाऊंगी मगर अब विवाह नहीं करूंगी।"

"परन्तु ऐसा करने से हमारी कितनी बदनामी होगी कोई लड़कियों को भी घर में बैठाता है? विवाह तो अवश्य होगा, वहां नहीं तो और कहीं" यह कहते हुए भैया ने अन्दर प्रवेश किया।

"भैया आप विश्वास रखिए, मैं ऐसा कोई भी कार्य नहीं करूंगी जिससे मेरे भैया की और मेरे कुल की अपकती हो। मैं तो कोई ऐसा कार्य करूंगी जिससे मेरे कुल की सुकीर्ति हो" मृदुला दृढ़ता से बोली।

मृदुला ने समाज सेवा व्रत की दीक्षा ले ली है। आजकल शहरों में बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए कार्य हो रहा है मृदु उसमें सोत्साह सेवा कर रही है। सर्वत्र उसका नाम चमक रहा है। सभी उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते पीड़ितों को कपड़े बांटना, राशन बांटना, बच्चों को मिठाई, खिलौने और पुस्तकें देना और हर प्रकार से उनकी सेवा करना बस यही काम है मृदु का।

बाढ़ पीड़ितों की चिकित्सा के लिए बनारस के सुप्रसिद्ध डा० आलोक को राज्य की ओर से नियुक्त किया गया है। अभी उन्हें आये २-३ दिन ही हुए है। मृदु की ऐसी सेवा-भावना, त्याग एवं पीड़ित जनों के प्रति इतनी महान निष्ठा को देखकर आश्चर्य चकित सा हो उठा आलोक एक विशेष आकर्षण एवं सम्मान सा उत्पन्न हो गया है उसे मृदु के प्रति। अपने साथ के कार्यकर्त्ता से उसने मृदु के बारे में पूछा।

उत्तर मिला—क्या नहीं जानते ये मृदुला देवी हैं, हमारे नगर की एक विशिष्ट समाज सेविका।

क्या इनका विवाह नहीं हुआ? नहीं, उन्होंने अपना विवाह नहीं किया और न करेगी क्योंकि जिस लड़के से इनका विवा होनाह निश्चित हुआ था उसके पिता विवाह में नगद रुपये के रूप में एक अच्छा खासा दहेज भी चाहते हैं, जिसे इनके भाई दे सकने में असमर्थ हैं। अतः इन्होंने विवाह करने से इन्कार कर दिया।

उत्सुकता वश डा० आलोक ने उसके भाई का नाम पूछा और उसे विश्वास हो गया कि यह मृदुला वही है जिससे उसका विवाह होना था मृदुला अपना कार्य समाप्त कर घर लौटी तो सामने ही बैठा देखा डा. आलो को। वह चिन्तित सी हो उठी, आज डाक्टर क्यों आये हैं इसी उधेड़ बुन में वह उन्हें नमस्ते कर अन्दर प्रविष्ट हुई। भाभी बड़ी प्रसन्न दीख पड़ीं। "भाभी यह डा० क्यों आये हैं?" मृदुला ने पूछा। "हमारी मृदुला को लेने" भाभी ने हंस कर कहा।

क्या? आखिर बात क्या है भाभी साफ-साफ कहो न बड़ी प्रसन्न दीख रही हो, मैं तो सोच रही थी कहीं किसी को कुछ हो न गया हो।

और तब भाभी ने बताया, यही तो हैं बनारस के डा० आलोक हमारी मृदुला के देवता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तब और अब

जनता अब भी वही खिलौना,
कहने को आसन है बदला,
धनिया होरी कल रोते थे,
अब भी हाल उन्हीं का पतला।
वह दिन थे जब एक तर्जनी,
पर जनता नाचा करती थी,
वह जो कुछ भी कह देती थी,
मन्त्र समझ बांधा करती थी।
सबकी पलकें झुकी-झुकी थी,
श्वासें सहमी रुकी-रुकी थी,
बहुत शोर था अनुशासन का,
पर किस्सा था सिंहासन का।
किन्तु आज मौसम आवारा,
होता आसन का बटवारा,
अपनी ही पतवारें तब भी,
छलती जाती थी माँझी को,
अब भी छत का फूस उड़ रहा,
कौन पूज ले इस आंधी को।
उसको हम सब झेल गए थे,
मौसम में बन रहे खिलौना,
किन्तु नई दुल्हन है ऐसी,
उसका वो झिलमिल रूप सलोना।
धर्म और नैतिकता के स्वर,
तब भी दबे-दबे थे रहते,
कहने को मौसम बदला है,
किन्तु अभी भी ताने सहते।
तब रोने पर ही बन्दिश थी,
अब भी किन्तु नहीं हंस पाते,
वे क्षण दर्दों से घायल थे,
अब भी पीड़ा की बरसातें।
एक बात से सब डरते थे,
जो कहता पंछी करते थे,
किन्तु आज की यह मजबूरी,
मंजिल पास लक्ष्य की दूरी।
तब वसनों के कफन बने थे,
अब कफनों से बने वसन हैं,
तब अंधेरों पर हास्य नहीं था,
आज हास्य में वजन नहीं है।

—बच्चेश

"मगर ये तो दहेज चाहते हैं भाभी" मृदुला आश्चर्य भरे स्वर में बोली। नहीं, ये कह रहे हैं "हमें केवल मृदु चाहिए सचमुच हमसे बड़ी भूल हुई, हम क्षमा चाहते हैं।"

"लेकिन मेरा सेवा कार्य का व्रत, उसका क्या होगा ?"

"मृदु यह तो और भी सुन्दर संयोग है। तुम्हें डा० साहब के साथ सेवा करने का और भी अधिक अवसर मिलेगा।" भैया ने सस्नेह कहा।

मृदुला हर्ष पुलकित हो उठी आज उसकी साधना फलवती हो उठी थी।

दहेज का अभिशाप अपनी मौत मर चुका था, और उसकी समाधि पर जल रहा था मानवता का आशा दीप, जिसके पुण्य प्रकाश में आज दो चिर तृषित आत्मायें एकाकार हो रही थीं। मृदुला और आलोक अब प्रणय—सूत्र में बन्ध चुके थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—के० नरेन्द्र

क्या भारत में नये पाकिस्तान को आप जन्म देंगे ?

हिन्दुओं का विनाश

आज इसदेश में हिन्दुओं या हिन्दूहितों का जिक्रभी एक साम्प्रदायिक अपराध हो गया है, परन्तु अपराधी कहलाते के डर से मैं खोमश रहना भी एक अपराधपूर्ण लापरवाही समझता हूं। इसलिए कि समस्या इतनी नाजुक है कि अपने देशवासियों को इससे सावधान करना अपना कर्तव्य समझता हूं। इसका कोई प्रभाव होता है या नहीं, यह तो मुझे मालूम नहीं लेकिन इतना भी जानता हूं कि इलामा इकबाल के कथानानुसार 'बात जो मुंह से निकलती है असर रखती थी। तथ्यों से ज्यादा देर आंखें बन्द करना मुश्किल होता है।

आज एक खतरा यह है जिसे नजरअन्दाज करना कठिन है। मुसलमान और ईसाई परिवार नियोजन नहीं मान रहे। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्यों नहीं मान रहे। मुसलमान और ईसाई इस देश ही में नहीं। वह दूसरे अनेक देशों में भी हैं, लेकिन जहां भी देश विकास शील है वहां जनसंख्या के विस्तार पर रोक लगायी जा रही है। और देशों को छोड़िए। पाकिस्तान हमारा पड़ौसी है और हमारे मुस्लिम देश बन्धुओं का इससे कुछ विशेष रिश्ता है। वहां भी जन संख्या को नियंत्रित करने के लिए उपाय किए जा रहे है। ईरान में भी ऐसा किया जा रहा है।

पूर्व में इन्डोनेशिया और मलयेशिया में ऐसा किया जा रहा है। यह सबके सब मुस्लिम देश हैं, लेकिन हमने आज तक कभी नहीं सुना कि किसी मौलवी या मुल्ला और किसी कट्टरपंथी मुसलमान ने इस पर आपत्ति प्रकट की हो कि परिवार नियोजन इस्लाम-विरोधी है। ऐसी हालत में उचित रूप से प्रश्न किया जायगा कि भारत की हालत में मुसलमान क्यों आपत्ति करने लग जाते हैं। आज तक इसका कोई उचित या युक्तियुक्त उत्तर नहीं दिया गया।

यहां तोते मैना की कहानियां खूब सुना दी जाती हैं, लेकिन ऐसे मुसलमानों की आपत्तियों पर जिन्होंने विश्वास करना है वह तो तब भी इन पर विश्वास करेंगे, जब वह दिन के बारह बजे कह देंगे कि रात के १२ बजे हैं। इसलिए में जानना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहता हूं कि ऐसे लोगों की नीयत पर मैं क्यों न शक करूं और फिर यह कैसे हो सकता है कि मैं १९४७ को भूल जाऊं। १९४७ में भारत का विभाजन इसलिए किया गया, क्योंकि उन क्षेत्रों में मुसलमानों का बहुमत था और वह हिन्दुओं के साथ मिलकर रहने को तैयार न थे। इसलिग उन्होंने पाकिस्तान की मांग करदी और इस तरह भारत का एक तिहाई हिस्सा भारत से कटकर पाकिस्तान बन गया। क्या कोई मुझे बता सकता है कि इसके ७ास इस बात की क्या गारंटी है कि कल को यदि किसी सरहदी क्षेत्र में फिर से मुसलमानों का बहुमत हों गया तो वह फिर से यह मांग न कर देंगे कि इसे काटकर पाकिस्तान में मिला दिया जाए। आज जिस तेजी से हिन्दू आबादी में कमी हो रही है उसे देखते हुए तो यह ही कहा जा सकता है कि कुछ ही साल के बाद अपने आप सारा हिन्दुस्तान पाकिस्तान बन जाएगा क्योंकि हिन्दू बहुमत अल्पमत में हो जाएगा। मैं ऐसा क्यों कहता हूं? कि मेरे सामने भारत सरकार द्वारा नियुक्त कमेटियों के आंकड़े हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि अकेला केरल ही नहीं जहाँ हिन्दू घट रहे हैं बल्कि इस परिवारनियोजन का विनाशकारी प्रभाव और कई राज्यों में भी हो रहा है। नीचे मैं एक तालिका देता हूं, जिससे पाठकों को पता चले कि हिन्दुओं की जनसंख्या की तुलना में इनमें परिवार नियोजन कितना ज्यादा है और इसके मुकाबले में मुसलमानों और ईसाइयों की जनसंख्या के मुकाबले में परिवार नियोजन का प्रभाव कितना कम है। यह आँकड़े ५ वर्ष अर्थात १९७१ से १९७५ तक के हैं और यह अवधि वह है जब परिवार नियोजन पर ज्यादा से ज्यादा अमल हुआ है। इसके बाद श्रीमान संजय जी का युग शुरू हुआ और तब तो अंधेर ही मच गया। इस युग के आँकड़े अभी तैयार नहीं हुए और जब होंगे तो इन्हें भी पेश कर दूगा। इस समय जो कुछ मेरे पास है, उसे पेश करता हूं। पहली तालिका में हिन्दुओं की जनसंख्या और परिवार नियोजन की रफ्तार के आंकड़े दिए गए हैं—

क्षेत्र	हिन्दू जनसंख्या	परिवार नियोजन का प्रतिशय
भारत	८४ प्रतिशत	९० प्रतिशत
उत्तर प्रदेश	८५ प्रतिशत	९१ प्रतिशत
पश्चिम बंगाल	७८ प्रतिशत	८७ प्रतिशत
असम	७२ प्रतिशत	७९ प्रतिशत
केरल	५४ प्रतिशत	७३ प्रतिशत

इन आंकड़ों से पाठक अनुमान कर सकते हैं कि सारे भारत में और इन प्रांतों में हिन्दुओं की औसत जनसंख्या किस तरह कम हो रही है। यदि इतना ही होता तब भी था। इसके मुकाबले में मुसलमानों और ईसाइयों की जनसंख्या उसी रफ्तार से बढ़ रही है। इसका अर्थ यह हुआ कि हिन्दुओं को दोहरी मार पड़ रही है। नीचे मुसलमानों में परिवार नियोजन के कम असर के आंकड़े पेश किए जाते हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षेत्र	मुस्लिम जनसंख्या	परिवार नियोजन का प्रतिशत
कुल भारत	१० प्रतिशत	५ प्रतिशत
उत्तर प्रदेश	१५ प्रतिशत	६ प्रतिशत
पश्चिम बंगाल	२० प्रतिशत	१२ प्रतिशत
असम	२४ प्रतिशत	१८ प्रतिशत
केरल	१६ प्रतिशत	१० प्रतिशत

इन आंकड़ों से सिद्ध होता है कि मुसलमानों ने अपनी जनसंख्या के अनुसार कहीं भी परिवार नियोजन को उतना नहीं अपनाया, जितनी हिन्दुओं ने अपनाया है। सब जगह कम औसत में परिवार नियोजन अपनाया है। इसके मुकाबले में हिन्दुओं की हालत में उलट हुआ है।

यह ही हाल ईसाइयों का है:—

क्षेत्र	ईसाई जनसंख्या	परिवार नियोजन का प्रतिशत
कुल भारत	२ प्रतिशत	१½ प्रतिशत
उत्तर प्रदेश	एक प्रतिशत	
पश्चिम बंगाल	एक प्रतिशत	½ प्रतिशत
असम	एक प्रतिशत	½ प्रतिशत
केरल	२२ प्रतिशत	१८ प्रतिशत

मतलब यह है कि मुसलमानों की तरह ईसाई भी परिवार नियोजन का प्रतिरोध कर रहे हैं। वे भी यही कहते हैं कि उनका धर्म उन्हें इस बात की अनुमति नहीं देता कि वे परिवार नियोजन का समर्थन करें। इस प्रकार मुसलमानों और ईसाईयों की आपत्ति पर हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार का जोर केवल हिन्दुओं पर रह जाता है लेकिन वह क्यों भूल जाती है **कि यदि हिन्दू ही न रहे तो भारत का नामो निशान ही मिट जाएगा।** कुछ लोग कहते हैं कि भैंस के सामने बीन बजाने का क्या लाभ ? बात तो ठीक है लेकिन मैं तो अपने देशभाइयों को आने वाली तबाही से आगाह कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि सरकार को इन बातों की चिन्ता नहीं। यदि जनता आशंकित विनाश को अपने ध्यान में रखें तो सरकार की सब चालें और कोशिशें विफल हो सकती हैं। प्रश्न सीधा है। यदि परिवार नियोजन होना है तो सबका होगा। यह नहीं कि हिन्दू तो यथापूर्व कम होते जाएं और मुसलमानों और ईसाइयों को इस बात की छूट हो कि वे अपनी आबादी यथाअपूर्व बढ़ाते चले जाएं। जिन लोगों ने आंखें रखते हुए अन्धे बने रहने का निश्चय कर रखा है, उन्हें मैं कुछ नहीं कहता, लेकिन जो लोग परिस्थितियों को सही दृष्टि से देखना चाहते हैं, उनसे मैं यही कहूंगा कि ये आंकड़े पढ़कर अपनी सरकार से पूछें कि यह केवल हिन्दुओं पर ही क्यों लागू हो रहा है। गैर हिन्दुओं को उससे क्यों मुक्त रखा जा रहा है ? क्या भारत में फिर से १९४७ की हालत पैदा करने की तैयारी की जा रही है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद-प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

१. सर्वश्री L. S. Thoroat, अहमदनगर, २३१ रु०, २. वेदकुमारी, चंडीगढ़, २०२ रु०, ३. हरिराम क्षत्रिय, नयानगर, २०१) ४. लक्ष्मी देवी, कानपुर, तथा जी. डी. भोलत, फैथोल, १५१) ५. विजेन्द्र कुमार, मुजफ्फरनगर, १२५) ६. दादूसिंह, सेठी, १२०) ७. गंगानन्द पारधी, बैतूल, १०६) ८. चन्द्रकला दूबे, १०५) ९. किशनलाल, हैदराबाद, १०२) १०. डा० धर्मपाल, किलेधारूर, ७०) ११. सत्यनारायण, श्रीगंगानगर, ६२) १२. यशोदादेवी दीवान, बम्बई, ६०) १३. पन्नालाल, बुलन्दशहर, ५२) १४. बलदेवप्रसाद, ५०) १५. मारुती, वंकटेश्वरराव, ५०) १६. जयकृष्ण, मुरादाबाद ५०) १७. देवमुनि, बम्बई ५०) १८. राजेन्द्रकुमार, रामपुर, ५०) १९. रामपाल आर्य, सौरों, ४८) २०. आर. डी. भल्ला, सुमही, ४०) २१. आसाराम, सरहिन्द, ३९) २२. बाबूरामजी, बांदा, ३१) २३. वेदव्रत आर्य, गोरखपुर, ३१) २४. राजपाल आर्य, राजपुरा, ३१) २५. तरसेमलाल, फाजिल्का, ३१) २६. एस. आर. कश्यप, नयी दिल्ली, ३१) २७. जे. सी. सूबेदार, ३१) २८. गिरिराज शर्मा, बीकानेर ३०) २९. शिवचैतन्य महेश्वर २४) ३०. लक्ष्मी नारायण लाल, करीमनगर, २१) ३१. श्रीकिशन पो. खास २२)

२५ रु० देने वाले महानुभाव

सर्वश्री १. हरिनारायण प्रसाद, बेतिया, २. योगेश्वरप्रसाद भागलपुर, ३. आर. शाह, रायपुर, ४. आर. एन. शुक्ल, रायपुर, ५ जगदीश यादव. दीमापुर. ६. पी. टी। महबूबानी, पूना, ७. रामजीतसिंह, मिर्जापुर, ८. कु. वीरेन्द्रप्रतापसिंह, लखनऊ, ९. श्रीकान्तप्रसाद, धनबाद, १०. रामलाल ओबराय, दिल्ली, ११. नारायण हरिणी, १२. कमलरानी अग्रवाल, बम्बई, १३. हैडमिस्ट्रेस १४. रमणीकलाल, जूनागढ़, १५. डी. एस. ठाकुर, झारिया, १६. निर्मला, मेरठ, १७. लखनसिंह आर्य मक्खनपुर, १८. फूलचन्द हरीज, मेहसाना, १९. मत्ता सतिआह, हैदराबाद, २०. गोविंदसहाय गुप्त, नयी दिल्ली, २१. दसई यादव, भाँडुप, २२. साधुराम आर्य, २३. दूधनाथ सिंह, रामगढ़, २४. पूरनसिंह नैनीताल, २५. किशनलाल आर्य, खेदर, २६. गुलाबराय, बम्बई, २७. डा. अश्विनीकुमार, विजलपुर, २८. विजयबहादुर,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मरुनाथमंजन २९. जयनारायण मिश्र ३०. हरिनारायणप्रसाद बेतिया, ३१. विष्णुभक्त रोता, ३२. जयरामप्रसाद मिश्र, महेन्द्रगढ़,

२१ रु० देने वाले महानुभाव

१. जी. डी. औदीच्य दतिया २. मैं. कमल क्लाथ हाउस हैदराबाद, ३. गंगाराम आर्य, निजामाबाद, ४. गोविंदराम आर्य, भिवानी, ५. दिनेशकुमार अग्रवाल, बरेली, ६. विद्याधर मुरादाबाद, ७. एम. एल. अग्रवाल, कलकत्ता, ८. शांतिकुमार, अकोला, ९. श्री नन्हकूवर्मा नं० ११६३२ HAV १०. मायाराम तिनसुखिया, ११. मैसर्स लच्छीराम, सहारनपुर, १२. विद्याशरण गोस्वामी, होशियारपुर, १३. श्री सुधाकर, नासिक. १४. देवदत्त दूबे, रायपुर, १५ मदनलाल अग्रवाल, रायपुर, १६. श्री ए. के. गॉगुली, रायपुर, १७. ओ ऐन. कौल; रायपुर, १८. गणेशप्रसाद खेतान, रायपुर, १९. शशिभूषण श्रेष्ठ, शीतलमाझा, २०. एस पी-सुशीलकुमार, अमृतसर, २१. देशराज मेहता, लुधियाना, २२. सुनील तलेवान, लुधियाना, २३ नाबीलाल सर्राफ, भरतपुर. २४. रामकिशन चावला, हिसार, मामचन्द गुप्त, नानोता, २६. त्रिनाथ Dobugow २७. कैलाश कटपीस गंगावती २८. विहार खेड़ो स्टोर्स, मुगेर, २९. कमलनयन सरोनी, कलकत्ता, ३०. बाबा बोधगिरी, बहोड़ा कलाँ, ३१. जगन्नाथ शर्मा, अमृतसर, ३२. काँशीराम शर्मा, कलकत्ता, ३३. कांतिचंद बंसल, एटा, ३४. क. ला. द्विवेदी बिलासपुर, ३५. नन्दराम आर्य, बर्दवान्, ३६. आर गजानन्द, बैतूल, ३७. एम. ऐल. बावर्जा, डिब्रूगढ़, ३८. श्रीमति गायत्री त्यागी, सहारनपुर ३९. जी. डी. वार्ष्णेय, बरेली, ४०. सरोज आर्य, मेरठ. ४१. बी. एस. अग्रवाल, धनबाद, ४२. सूरजभान, आगरा, ४३. शांति स्वरूप गुप्त, हसनपुर, ४४. शांतिदेवी गुप्ता, झांसी, ४५. एस. एस. हिंद कटलरी वर्क्स, मुरादाबाद, ४६. त्रिनाथ Singisri ४७. आर्य मुनिवर्मा, चंडीगढ़, ४८. गायत्री वर्मा, छत्री मंडी ४९. गुलाबसिंह राठौर दुर्ग, ५०. सरस्वती आर्या, दिल्ली।

२० रु० देने वाले महानुभाव

१. टी. एन. श्रीवास्तव, दिल्ली, २. रामलाल पाण्डेय लखीमपुर, खीरी, ३. नानकचन्द रस्तोगी, पिथौरागढ़, ४. देवव्रत त्यागी, माटुंगा, ५. मोहनलाल, कुतीयाणा, ६. धर्मपाल जी, श्रीविजयनगर ८. डालचन्द, विजनौर, ८. यशपाल, रतनगढ़, ९. प्रमोदकुमार, धनबाद, १०. बी. के. शर्मा, लुधियाना, ११. ओमप्रकाश १२. मुन्नालाल, सहसवान, १३. रामचन्द्र यादवार्य, नागौर, १४. ऊषागुप्ता, सौन्दा, १५. श्री मगनभाई, परनेरा, १६. बदरीलाल रावत, बीकानेर, १७. श्रीकृष्ण मोहन पांडे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१५ रु० देनेवाले महानुभाव

सर्वश्री १. सत्यानन्द शर्मा, खिदिरपुर, २. देवनन्दनराय, संबलपुर, ३. जगदीशसिंह, बिजनौर, ४. रामकुमार मांढूर, ५. भगीरथी गोकर्ण, कुमुद, ६. ओम दाल मिल्स, बाड़, ७. अचपलसिंह त्यागी, मुजफ्फरनगर, ८. सुमनचंद मलखानसिंह, शेरपुर पेलों, ९. काशीराम अग्रवाल, जालंधर, १०. ओमप्रकाश, जाखौली।

५ रु० देने वाले महानुभाव

सर्वश्री १. बी. पी. पटेल, नीमच, २. कंवरभान, पटियाला, ३. मोहनलाल कुणिपाली, ४. मांगीलाल शर्मा, जयपुर, ५. रतनचन्द, जबलपुर, ६. चंपालाल पारख, भावनगर, ७. महामंत्री दयानन्दवल्लभभाई संस्थान, कबीरपुर ८. बी. डी. नागर, वाराणसी, ९. भवरसिंह, दिल्ली, १०. रामकृष्ण कपाही, मुगलसराय, ११. वसगिपतसिंह कुशवाहा मुरादाबाद, १२ रामकिशोर विश्नोई, मुरादाबाद १३. ओंकारनन्द यात्रो शाँतिनिकेतन १४. रामरतन जोशी, ग्वालियर, १५. डॉ० पंचानन उपेक्षित, मथुरा, १६. डालचन्द वर्मा, मनकुआ, १७. भगवतीप्रसाद, मेहरोत्रा, फैंजाबाद, १८. जे. पी. पमार, रतलाम, १९. भूपसिंह आर्य, विसराम, २०. भंवरलाल जोशी, उदयपुर, २१. हरिचरण साहू, हजारी बाग, २२. जगदेव प्रसाद अग्रवाल, पडरोना, २३. कमलप्रसाद, सहसाना, २४. बृजसुन्दर त्रिवेदी, उन्नाव, २५. स्वदेशकुमार, दिल्ली, २६. हुक्मसिंह आर्य, खरौला, २७. सुमनलता, दिल्ली, २८. सरोजलता, नयी दिल्ली, २९. पीताम्बर राभू कील्हे, जलगाँव, ३०. रामस्वरूप, पन्ना, ३१. डॉ० महेश्वरप्रसादजी दमोह, ३२. फिरंगी मिस्त्री, ३३. द्विवेदी लेखराज शर्मा, बाड़मेर, ३४. तुलसीरामजी, जीन्द, ३५. लोकनाथजी मेहत्ता, दिल्ली, ३६ विशम्बरदास पुरी रब्बासपुर, ३७. मोहनलाल आर्य, मथुरा, ३८. कृष्णगोपाल गुप्त मथुरा, ३९. नर्मदानन्द, सिहोरा, ४०. यू. एस. गुप्त, नयी दिल्ली, ४१. श्री कनकसिंह व्यास मांडवी, ४२. श्री राजेन्द्र प्रकाश वैद्य मेरठ, ४३. शी पुरुषोत्तम नारायण ललितपुर, ४४. शी भूप्रकाश शर्मा वाराणसी, ४५. श्री मुरलीधर साहा बम्बई, ४६. शी देवेन्द्र शर्मा भिलाई नगर, ४७. शी युगल किशोर लाल आर्य भैरमपुर, ४८. शी आर्यसमाज अमौली, अमौली, ४९. शी भगवान चैतन्य मण्डी, ५०. शी तारीराम आर्य द्वारा हाट, ५१. शी रामधार आर्य भमुआ, ५२. की कालीकिंकर आर्य महिसामुंडा, ५३. नी डा० हरि नारायण प्रसाद समस्तीपुर, ५४. शी जे० एन० सहाय गया, ५५. शी देवीदास आर्य नारायणपुर, ५६. शी वारीराम आर्य द्वारहाट, ५७. शी रतनलाल जैन आर्यपुरा, ५८. शी रामदयाल चौधरी बगाऊगाँव, ५९. शी रा० प्र० नायक रायपुर, ६०. शी बी० के० चौधरी रायपुर, ६१. रा० ल० कश्यप रायपुर, ६२. षी स० वडवलवार रायपुर, ६३. षी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एस० पी० गुप्त रायपुर, ६४. श्री आर० के० वर्मा रायपुर, ६५. श्री आर० के० देवाराम रायपुर, ६६. श्री एस० डी० बनारसी रायपुर, ६७. श्री डी० एन० भाखमबार वर्धा, ६८. श्री रमेशचन्द्र मिश्र, लालसोट, ६९. श्री अमृतलाल इलाहाबाद ७०. श्री विजय कुमार धाराशिव, ७१. श्री मन्त्री आर्यसमाज सहारनपुर, ७२. श्री रमेशचन्द्र मिश्र बरेली, ७३. श्री मनीराम गुप्त ग्वालियर, ७४. श्री सुरिन्द्र कुमार गुप्त लुधियाना, ७५. श्री रामचन्द्र सिरमौर, ७६. श्री मेलुराम भारद्वाज सिरमौर, ७७. श्री तुलसीराम जी सिरमौर, ७८. श्री मन्त्री आर्यसमाज वीड़, ७९. श्री सत्यानन्द शर्मा मुजफ्फरपुर, ८०. श्री राजेश्वर प्रसाद मुरैना, ८१. श्री लक्ष्मीचन्द आर्य फैजाबाद, ८२. ऊी रामकिशोर जिंदल गाजियाबाद, ८३. श्री बालकृष्ण गुप्त डबरा, ८४. श्री राम नारायण गुप्त विजनवारी, ८५. श्री बनवारी लाल गुप्त हनुमनी, ८६. श्री राज़वीर सिंह आर्य अलीगढ़, ८८. श्री बिहारीलाल जी पीलीभीत, ८९. श्री पन्चूराम वाराणसी, ९०. श्री काशीराम जी अग्रवाल, जालन्धर, ९१. श्री बाबूराम जी बदायूं, ९२. श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्त हिसार, ९३. श्री वि० रा० मुंगे तरोंजा, ९४. श्री श्री एन० शंकरराव हैदराबाद, ९५. श्री पूरनलाल पटेल पीलीभीत, ९६. श्री कन्हैया लाल आर्य गोरखपुर, ९७. श्री दमड़ी लाल जाटव जबलपुर, ९८. श्री गंगा शरण वैद्य लाड़नू, ९९. श्री सत्यवती सिंह गंगवार शाहजहांपुर, १००. श्री मदनलाल भंगवार शाहजहांपुर, १०१. श्री महेन्द्रपाल वार्ष्णेय रीवा, १०२. श्री डा० किशोरी प्रसाद आर्य मिर्जापुर, १०३. श्री मन्त्री आर्यसमाज छोटी सादड़ी, १०४. श्री कैलाश रुंगटा भागलपुर, १०५. श्री होरीलाल वाराणसी, १०६. श्री बनवारी लाल उझयानी, १०७ श्री हरचरण सिंह तवर बाहरी बरोवा, १०८. श्री रामविलाख ढधीची गुलाबपुरा, १०९. श्री जगदीश प्रसाद एडवोकेट जगाधरी, ११०. श्री रामेश्वर प्रसाद देवरिया, १११. श्री गंगा प्रसाद बैतूल, ११२. श्री एस० एस० तोमर, बैतूल ११३. श्री आर० एल० चौकसे बैतूल, ११४. श्री वृज वल्लभ शुक्ल बैतूल, ११५. श्री दुवेणा बैतूला, ११६. श्री एम० के० सिन्हा बैतूल, ११७. श्री आर० एस० एस० तोमर बैतूल, ११८. श्री शिरीधर दुरकट बैतूल, ११९. श्री बद्री सेठ बैतूल, १२०. श्री नारायण दास मौर्य बैतूल, १२१. श्री प्रमोद जुनेजा भौंरा बैतूल, १२२. श्री शंकरलाल नायक भौंरा बैतूल, १२३. श्री एस० के० तिवारी बैतूल, १२४. श्री आर० के० तिवारी बैतूल, १२५. श्री आर० एस० वाघेला बैतूल, १२६. श्री जे० एल० उजवने बैतूल, १२७. श्री के० बी० पंडागर बैतूल, १२८. श्री शान्तिलाल लल्लूभाई पटेल बैतूल, १२९. श्री कु. प्रभारश्मि बैतूल. १३०. श्री वेद प्रकाश आर्य नई दिल्ली १३१. श्री शिव वचन दुबे गाजीपुर, १३२. श्री रामकुमार मुरादाबाद, १३३. श्री रामकिशन जी देवांगन रायपुर, १३४. श्री दिलीप कुमार विश्वकर्मा मुंगेर, १३५. श्री बुद्धि वल्लभ जोशी ढिकुहानी,

 Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१३६. श्री रविशेखर दास ओधरिया गोला, १३७. श्री लवकुश कुमार रेहड़, १३८. श्री महाशय विशनदास एटा, १३९. श्री मोरमुकुट शर्मा गढ़ उमराव, १४०. रामवृक्ष सिंह चेरो, १४१. श्री अमरचन्द खण्डेलबाल अकबरपुर, १४२. श्री ओमप्रकाश सिकन्दराराऊ, १४३. श्री प्रसाद हलवाई हसनपुर, १४४. श्री प्रेमराम आर्य पराओ, १४५. श्री अतुलसिंह आर्य मुजफ्फर नगर, १४६. श्री पीताम्बर रामू कोल्हे कामलदा, १४७. श्री मधुकर मादूवेंडाके कामलदा, १४८. श्री भाखचन्द्र वासन कामलदा, १४९ श्री बसन्त तुकाराम कामलदा, १५०. श्री डा० तारू भंगावे कामलदा, १५१. श्री प्रकाश विष्णुकर खेड़े कामलुदा, १५२. श्री राज सन्यासी इज्जतनगर, १५३. श्री सुदामा वसैकू वैतूल, १५४. श्री प्रतापसिंह आर्य आर्यनगर, १५५. श्री अमरचन्द्र खण्डेलवाल अकबरपुर. १५६. श्री विदेश्वर बैठाकाटा, १५७. श्री जानकी प्रसाद दुवे गंगावसौदा, १५८. श्री एम० सबई नई दिल्ली, १५९. श्री आर० बी० यादव कुंडा. १६०. डी० सी० बहल रोहतक, १६१. श्री रमेश कुमार शुक्ल पड़रा, १६२. श्री गीतसिंह बाघाईखुर्द, १६३. श्री होरीसिंह अध्यापक सहारनपुर, १६४. श्री प्रमोद कुमार अमरोहा, १६५. श्रीमती जानकी देवी सीवन १६६. श्री गरीबदास जी बरखेरी, १६७. श्री विजय काशवानी राजकोट, १६८. श्री श्री निवास संघ मोदीनगर, १६९. श्री रामलाल नरैसय्या रामारेड्डी, १७०. श्री ब्यानन्दसिंह मुगना, १७१. श्री विन्दु बैठा कांटा विरौंधा, १७२. श्री शीतल प्रसाद सिंह हाजीपट्टी, १७३. श्री हरिपाल जी हलालपुर, १७४. श्री वृतराम उनियाल टिहरी गढ़वाल, १७५. श्री माँगीलाल जी मौर्य मुरैना, १७६. श्री दरयाव सिंह मूनक, १७७. श्री रमेश उपाध्याय उज्जैन, १७८. श्री एस० डी बनारसी रायपुर।

सभी का हार्दिक धन्यवाद।

भारतेन्द्र नाथ
प्रबन्धक

पत्र व्यवहार M. O, आदि वेद मंदिर ही भेजें

सभी सदस्यों से प्रार्थना है कि वे सभी पत्र M.O. आदि वेद मन्दिर दिल्ली-३६ के पते पर ही भेजें।

दिल्ली आने पर वेद मन्दिर में अवश्य पधारें। आजादपुर से वेद मन्दिर के लिए ८ बसें १३४ नं० प्रतिदिन जाती हैं। ६.२०। ७.४० ९.००। ११.००। १४.५०। १६.१०। १५.३०। १९.३०।

बस आजादपुर—इब्राहीमपुर चलती है। इब्राहीमपुर से वेद मन्दिर १ फर्लांग है।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्येन्द्र

आभास ! विरोधाभास !!

हमें बचाओ-बचाओ-बचाओ दर्दनाक आर्त्तनाद—प्रायः ८० मीलकी रफ्तार से भागती हुई तेज कार का पीछा—एक असफल प्रयास ·· दुर्भाग्य की छाया स्कूटर भी बिगड़ गया था उसका । थाने में प्रवेश ··दो बालकों का किसी व्यक्ति द्वारा कार में अपहरण कर लिए जाने की सूचना पुलिस का रवैया । भारत का दिल है यह महानगरी और उसकी एक प्रमुख सड़क पर यह सब काँड । दो निरपराध बालकों की निर्मम हत्या···लोकसभा, में इस कांड पर राजनीतिक उठापटक—वोट क्लब पर एक मंत्री महोदय पर पथराव···छात्र-छात्राओं का उग्र प्रदर्शन-सिर किसने फुडवाया । यह है तीस वर्षीय युवा भारत का श्रेष्ठतम अभिनय क्यों चौंक गए आप यह किसी फिल्म का दृश्य नहीं है यह दिल्ली में पिछले दिनों हुए एक हत्याकाँड का अंशमात्र है ।

जिसने भी सुना और पढ़ा उसी का दिल दहल उठा-मानवता द्रवित हो उठी ··इस दिखावटी प्रेम, स्नेह और वात्सल्य पर आठ-आठ आसूं बहा रही है ।

जी सच ! यहां प्रेम भी दिखावटी होता है जब तक इन्सान जीवित है··· उसमें साँस बाकी है तो कोई उसकी आपदा-विपदा में सहभागी बनने को तैयार नहीं देखने नहीं आप अपंग-असहाय को बिलखते देखकर कोई ही होता है, जो अपनी जेब कुछ ढीली करता है ··किन्तु जब उसकी लाश सडक पर पड़ी मानवता पर मुस्कराती है तो उस समय उस राह-से गुजरते राहगीर पैसे बरसाते हैं और आँखों को पुरनम कर फरमाते हैं ··मर गया बेचारा बेसहारा ।

कैसी विचित्र है यह दुनिया-जिन्दा लाश को तो कोई रोटी के लिए भी पूछता नहीं और जब रोजी रोटी के झगड़े से बेनियाज हो गया तो मगरमच्छी आंसू बहाने वालों की कतारें लग गयीं ।

नौकरी से बर्खास्त बेचारा वह । ग्रेजुएट···लगभग पांच वर्ष से सरकारी नौकरी पक्की हो जाने की उम्मीद के सहारे अपने जीवन के छकड़े को ज्यों-त्यों कर लुढ़काता रहा । सहसा ही रोग ने घर दबोचा । पाँच-सात दिन की गैर-हाजरी । फिर दफ्तर के कमरे में । आदेश मिला बड़े अधिकारी से मिलो पहले ·· वहां पहुंचा तो सुना बर्खास्त तुम जा सकते हो । क्योंकि उसके स्थान पर कोई चहेता बैठाया जा चुका था बड़े साहब का । निराश जीवन को और एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थपेड़ा। बहाली की याचना-प्रार्थना सभी बेकार।

जीवन से उद्विनता। इरादों की ऊंचाई से भी ऊंचा भवन। उसकी जिन्दगी की संध्या। धम धम का स्वर। वह ऊपरी मंजिल से नीचे-जीवन की निराशा दूर इस लोक में ठोर ठिकाना न रहा तो उस अनजाने की राह ले ली।

फिर साथियों का हो हल्ला-जिन्दाबाद, मुर्दाबाद के उद्घोष। एक और नाटक। कहां थे ये सब जब वह जीवित शव-जीवित रहने की लड़ाई लड़ रहा था। अपनी वृद्धा माँ के लिए, अपनी भोली भाली संतान को दो कौर जुटाने के लिए। कहाँ था उनका मजदूर-मजदूर भाई-भाई का नारा। जब वह जिन्दा लाश दो समय की रोटी जुटाने के लिए जद्दो जहद कर रही थी तो कौन आया था उसके प्रति सहयोग का हाथ बढ़ाने।

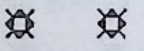

एक ग्राम का सजीला-छबीला नौजवान। १६ वर्षीया-अपने माता-पिता का छौना सलौना। शव पर लगे चाकू के दर्जनों घाव। वह बोल तो नहीं सकता कि किसने किया है यह सब कुछ। तडफते पिता की पुकार और गुहार पर मिला उसे क्या? कोरे आश्वासन। जांच का वचन। उस युवक के शव का अन्तिम 'दर्शन' करने अनेक आते हैं-स्वर उभरता है हाय कितना निर्दयी था वह! जिसने यह सब कुछ किया। अपने माता-पिता का सहारा मारा गया बेचारा। किन्तु जब वह वार पर वार झेल रहा था तो कौन आया था उसकी मदद करने।

नौका के कर्णधारों से दो मासूम बच्चों की निर्मम हत्या पर पूछा जाता है, तो जवाब आता है—जी वाशिंगटन में तो प्रतिदिन ही ऐसी घटनाएं घटित होती है।

देश के स्तम्भों के सपूतों की करतूतों पर उनकी पत्नियाँ मातम करती हो, और सपूत प्रेम का दम भरते हों और जिनसे प्रेम का दम भरा जाता है, उन्हें भी बदनामी के डर से धत्ता बताया जाता हो तो कौन कह सकता है कि तूफान न आएगा। ऐसे में कौन इस समाज को डूबने से बचाएगा।

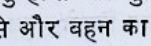

शायद गीता सी पावन बाला सत्य मर्यादा के लिए समर्पित बालक दूसरी दुनिया से कर रहे हैं—पिता जी! प्यारी-प्यारी मां—क्यों आँसू बहा रही हो। तुम्हारी उस दुनिया में भाई का बहन से और बहन का भाई से सच्चा प्यार भी तो जुर्म है। क्योंकि उस दुनिया के लोग प्यार की जीवित जागृत प्रतिभाओं को सदा के लिए क्षति-विक्षत करके चिर निद्रा में सुलाना और उसे जन्म देने वालों को रुलाना ही अपना ईमान मानते हैं। वे बता रहे हैं अपने साथियों को प्यार की कीमत आसुओं से नहीं रक्त की धाराएं बहा कर चुकानी पड़ती है। प्यार की कहानियां लिखना और बात है। इतिहास के पन्नों में वर्णित शहादत का वृतान्त सुनना या सुनाना, पढ़ना या पढ़ाना एक बात हैं और स्वयं इतिहास का अमर पृष्ठ बन जाना और...।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी समर्पणानन्द जी का

शतपथ ब्राह्मण छपाएं

स्वामी समर्पणानन्द जी का अनमोल ग्रन्थ "शतपथ ब्राह्मण" छपनी चाहिए। उनका यह महान् ग्रंथ सम्पादन कर रहे हैं देश के सुप्रसिद्ध विद्वान् अनवेषक—प्रो० धर्मवीर अध्यक्ष संस्कृत विभाग दयानन्द कालिज, अजमेर।

क्या आप केवल ५०००) का प्रबन्ध इस महान् ग्रंथ के लिए नहीं कर सकते ? दानी का चित्र भी भाष्य में देंगे। —अध्यक्ष

जन-ज्ञान का सम्पादन

जन-ज्ञान जबसे आरम्भ हुआ, मैं इसके संपादक से दूर रहा। मेरी नीति रही है कि धीरे-धीरे सभी दायित्व दूसरों को सौंप दिए जाएं।

इस बार सुमेधा के विवाह के पश्चात् अन्य कोई मार्ग न होते हुए मैंने इस दायित्व को संभालना तब तक के लिए स्वीकार किया है जब तक अन्य व्यक्ति नहीं मिल जाता। अब देह साथ नहीं दे रही, तब नए दायित्व उठाना संभव भी नहीं रहा।

जिन हाथों में शक्ति है वे अपना बलिदान देकर हमारे दायित्व संभालें, यह हमारी इच्छा है, जो पता नहीं कब पूरी होगी। आप सभी का स्नेह सहयोग मुझे मिलेगा, विश्वास है। —भारतेन्द्र नाथ

हम उऋण नहीं हो सकते

यदि हम पेट के बल रेंग कर चलें हमारा रोम-रोम नोच लिया जाए। और हमारे शरीर की खाल भी उतार ली जाए तो भी हम दयानन्द के ऋण से उऋण नहीं हो सकते।

स्वामी स्वतन्त्रता नन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज प्रमाद त्यागे

आर्य समाज को अपने जन्म काल से ही विविध समस्याओं से जूझना पड़ा है। ऐसा होता भी क्यों नहीं जब उसके संस्थापक प्रातः स्मरणोय महर्षि दयानन्द ने संसार का उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य निर्धारित कर दिया था। अब भी हमारे राष्ट्र के सामने विशेष रूप से और समस्त संसार के सामने सामान्य रूप से जो गम्भीर समस्याएं उपस्थित हैं उनका निराकरण जितने अच्छे ढंग से आर्यसमाज द्वारा अथवा आर्यसमाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों के अनुसार आचरण करने पर हो सकता है उतना अन्य किसी उपाय से सम्भव नहीं है।

जन्म के आधार पर बनी जाति प्रथा हिन्दुओं का विशेष रूप से और अन्ततोगत्वा समग्र भारतीय राष्ट्र का जितना अहित कर रही है वह अब पक्षपात रहित विवेकशील मनुष्यों से अप्रगट नहीं है। घोर दुःख का विषय है कि स्वयं आर्य समाज भी अभी तक इस कुप्रथा से छुटकारा नहीं पा सका। इससे भी घोरतर दुःख की बात यह है कि आर्य समाजी बन्धु-गण जन्म पर आधारित जाति पांति की प्रथा के अभिशाप के प्रति अब प्राय. उदासीन हो गए हैं। उनकी दृष्टि धूमिल हो गई है और आर्यसमाज का वह स्वरूप जो इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द को अभिप्रत था उनकी दृष्टि से लुप्त हो गया है। यदि यह प्रमादपूर्ण स्थिति कुछ दिन और चलने दी गई तो अतुल सन्ताप के साथ कहना पड़ता है कि वह दिन दूर नहीं जब आर्यसमाज केवल इतिहास की वस्तु बन कर रह जायेगा।

इस समय समस्त भारतीय राष्ट्र इस जन्मगत जातिबंधन के प्रति विचलित हो उठा है। राष्ट्र के नेता जिनके हाथों में इस समय शासन की बागडोर है इस विचार में निमग्न हैं कि राज नियमों में कौन-कौन से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिवर्तन किये जावें जिनसे इस दूषित प्रथा पर प्रभावकारी ढंग से प्रतिबन्ध लग सकें। समाज सेवी संस्थाओं से भी वे अपेक्षा रखते हैं कि इस भयंकर सामाजिक बुराई के उन्मूलन में शासन को सहयोग प्रदान करें। हिन्दू समुदाय के अन्तर्गत कोई भी संस्था पूर्ण मनोबल से इस कुप्रथा को नष्ट करने में शासन का साथ नहीं दे सकती किन्तु क्या आर्य समाज भी, जो सिन्द्धान्ततः इस प्रथा को भ्रम-जनित और सर्वथा मिथ्या मानता है, चुप्पी साधे निष्क्रय बैठा रहेगा ?

इस कुप्रथा के कारण सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्र की जो महति हानि हो रही है वह तो अब सर्वविदित है ही किन्तु स्वयं आर्यसमाज का पौधा, जो कुछ काल पूर्व तक बड़ा हरा भरा दिखलाई पड़ता था और एक विशाल छायादार वृक्ष के रूप में जिसके बढ़ जाने की सम्भावना प्रतीत होती थी, वह अब बड़ी तीव्र गति से सूखने लगा है और यदि समय रहते इसको नष्ट होने से बचाना है तो नितान्त आवश्यक है कि आर्यसमाजी बन्धुगण जन्म पर आधारित जाति-पाँति की दलदल से अविलम्ब ऊपर उठें और वेद-सम्मत वर्ण व्यवस्था को अपनावें। वर्तमान समय में हिन्दुओं में प्रचलित जाति प्रथा को प्राचीन काल में आर्यों में प्रचलित वर्ण व्यवस्था का ही आवश्यक परिणाम समझकर अधिकाँश सुधारवादी लोगों को वर्ण व्यवस्था के नाम से ही घृणा होने लगी है और सम्प्रति उनकी केवल एक धुन है कि जन्म मूलक मनुष्य मनुष्य के मध्य भेद कारक जाति प्रथा को जैसे बने वैसे मटियामेट कर दिया जावे। यह सब ही जानते हैं कि किसी भी वस्तु का विध्वंस कर देना जितना सरल है उसका निर्माण करना उतना सरल नहीं। अतः आर्यसमाज से सम्बद्ध जनों का यह पुनीत कर्तव्य है कि जन्म पर आधारित जाति प्रथा का जो मल उनके कलेवर से अब भी चिपटा हुआ है उसे वे अविलम्ब धो डालें और इस कुप्रथा के स्थान पर गुण कर्म स्वभाव के आधार पर पारस्परिक सम्बन्धों की स्थापना की ओर अपने पग बढ़ावें।

न केवल सर्व सामान्य हिन्दुओं में अपितु आर्य समाजियों में भी जो वैवाहिक सम्बन्ध आजकल स्थापित किये जा रहे हैं उनका आधार कदाचित ही वर-वधु के गुणों की पारस्परिक अनुकूलता रहती हो अन्यथा अधिकांशतः ये सम्बन्ध उभय पक्ष की आर्थिक स्थिति और उससे भी बढ़कर वधु पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिये जाने वाले दहेज की मात्रा रहता है। ऐसे वैवाहिक सम्बन्धों के कारण न केवल वधु पक्ष को प्रायः अकथनीय विपत्तियों का सामना करना पड़ता है अपितु दहेज हेतु विपुल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धनराशि जुटाने के उद्देश्य से लोगों को भाँति-भाँति के भ्रष्ट आचरण भी करने पड़ते हैं। गुण कर्म स्वभाव के आधार पर एक ही वर्ण के दम्पती न होने के कारण वे जिन बालकों को जन्म देते हैं उनका वर्णसंकर एवं कुसंस्कारी होना सुनिश्चित है। बड़े होकर ऐसे बालकों का सुनागरिक वनना और देश एवं जाति की अच्छी सेवा करना अत्यन्त कटिन है। आज जो हमारा देश एक बड़ा पागलखाना दिखलाई पड़ रहा है और इसमें विविध प्रकार के दुराचार, अनाचार एबं भ्रष्टाचार पनप रहे हैं। उसका मूल कारण वेद-सम्मत वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था का सर्वथा लोप हो जाना है। आर्यसमाज का यह गुरूतर दायित्व है कि अब और अधिक समय व्यर्थ खोए विना यह जन्म मूलक जाति प्रथा का परित्याग कर गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था को अपनावें और समस्त राष्ट्र के सामने एक सच्चे पथ प्रदर्शक के रूप में उभरे।

बाबूलाल गुप्त एम. एस. सी
प्रधान आर्य समाज लश्कर (ग्वालियर)
एवं
भूतपूर्व संचालक शिक्षा, विभाग (म. भा)

स्वस्थ और सुन्दर आंखों के लिए

भीमसेनी काजल

आंखों को नीरोग और सुन्दर बनाता है।

मुरारी ब्रदर्स

जी०-७, माडल टाऊन, दिल्ली-११०००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की
औषधियां प्रयोग करें

गुरुकुल कासारि

खांसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोग किसी भी कारण से हुई खांसी, नजला, जुकाम आदि में लाभदायक है। सेवन विधि दिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाट।

✡✡✡

आंखों के अनेक रोगों के लिए

भीमसेनी सुरमा

✡✡✡

च्यवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट रसायन
शरीर को बलिष्ठ और कान्तिमय बनाता।
शारीरिक क्षीणता एवं फेफड़ों के लिए प्रसिद्ध
आयुर्वेद रसायन

पो. गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (सहारनपुर)

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६ फोन नं०—२६१४३८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुन्दर फरनीचर का प्रगतिशील नाम

डिलाईट

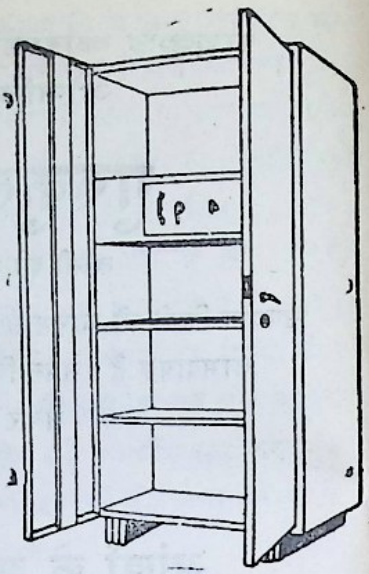

वर्षा उपवन व और कार्य कुशलता के कारण आज डिलाईट पक्की अलमारियां और फर्नीचर सारे भारत में प्रसिद्ध हैं क्योंकि यह देखने में सुन्दर, मजबूत टिकाऊ और पक्के रंगों में उपलब्ध हैं। मकान हो या घर, विवाह हो या कोई शुभ अवसर, यह सबकी शोभा बढ़ाता है।

आप भी आज डिलाईट फरनीचर खरीद कर अपने घर, आफिस व दुकान की शोभा बढ़ावें और आनन्द पावें।

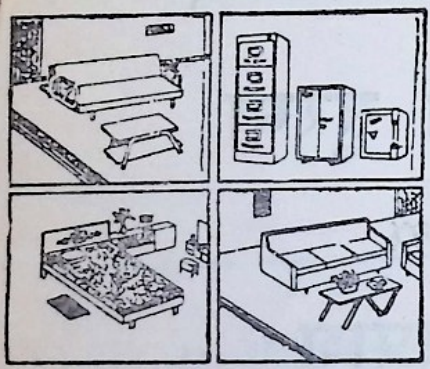

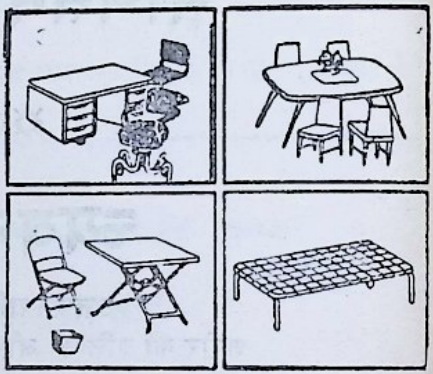

डिलाईट सेफ बक्स

कुतुब रोड, दिल्ली-६. फोन 511380

विक्रेता

१. काटेंज स्टोर, २० विनय नगर मार्कीट, नई दिल्ली।
२. काश्मीर क्राकरी हाऊस, लक्कड़ बाजार, लुधियाना।
३. मित्तल ब्रादर्स, सिरकी बाजार, भटिण्डा। ४. निहालचन्द गोपालदास, अबोहर।
५. महेन्द्रा ब्रादर्स, कोर्ट रोड, मोगा।
६. जेम सेल्स कार्पोरेशन, सेक्टर ७-सी दु० नं० ३०, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़।
७. हरयाणा आयरन एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज, बाजार हिसारिया, सिरसा।
८. लीला इलैक्ट्रिक कं०, ७० कोतवाली रोड, श्री गंगानगर (राज०)।
९. राणा इण्डस्ट्रीज, लाडपुरा बाजार, कोटा (राज०)।
१०. आदर्श इलक्ट्रिक एण्ड जनरल सप्लायर्ज, नैकोली, नीमच (म० प्र०)।
११. ओबरसीज ट्रेड एजेन्सीज, केसरगंज, अजमेर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द के जीवनपरक महाकाव्य

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर की स्नातकोत्तर हिन्दी (चतुर्थ समसत्र) की परीक्षा १९७८ के अन्तर्गत अष्टम प्रश्नपत्र के विकल्प में प्रस्तुत

लघु-प्रबन्ध

प्रस्तुतकर्त्री

श्रीमती ज्योत्स्ना

निर्देशक

प्रो० ओम्प्रकाश

प्रकाशक

दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान-प्रकाशन का २१९वां पुष्प

प्रकाशक :
पंडिता राकेश रानी, अध्यक्ष
दयानन्द संस्थान (पंजीकृत धर्मार्थ न्यास)
१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६६६३९

मूल्य : सजिल्द १०) रुपये
साधारण ५) रुपये

दीपमाला : संवत् २०३५
नवम्बर : १९७८

मुद्रक : रायसीना प्रिंटरी
४ चमेलियन रोड
दिल्ली-११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुक्रम

			पृष्ठ-संख्या
	:	अपनी ओर से	४
	:	आत्म-निवेदन	६
	:	प्रमाण-पत्र	७
	:	लेखक-परिचय	८
प्रथम उल्लास	:	महाकाव्य : लक्षण, विमर्श एवं परम्परा	९
द्वितीय उल्लास	:	महर्षि दयानन्द : राष्ट्र को देन	१९
तृतीय उल्लास	:	धर्मदिवाकरोदय	३३
चतुर्थ उल्लास	:	दयानन्दायन	४५
पंचम उल्लास	:	बोधरात्रि	५५
षष्ठ उल्लास	:	ऋषि गाथा	७३
सप्तम उल्लास	:	दयानन्द प्रकाश	८७
	:	उपसंहार	९८
	:	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	९९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी ओर से

व्यक्ति की महत्ता जब जन-मानस को उद्वेलित कर देती है और युग अपनी कामनाएं जब किसी के द्वारा मुखरित होते देखता है तब कवि का हृदय व्यक्ति की गरिमा को गुंजाता हुआ उसकी अमरता और भावों की सफलता के लिए महाकाव्य को जन्म देता है।

१८वीं शताब्दी में भाव और भावनाएं जब सोयी थीं, पशुता के पहरे में मानस पर अंधियारा अधिकार कर अपनी विजय के मद में गर्व से इठला रहा था, तब देव दयानन्द ने समय को स्वर, स्वर को गीत, गीत को भाषा और भाषा को संबल प्रदान कर अंधकार को पदच्युत कर नवनिर्माण की आधारशिला रखी थी। दयानन्द सर्वतोमुखी प्रतिभा की प्रतिमा थे। वे युग की सभी समस्याओं के प्रखर व्याख्याता ही नहीं अपितु नवनिर्माण के लिए अहर्निश संघर्ष करने वाले स्रष्टा थे। उनकी वाणी में जन-मानस की आकांक्षाएं मुखर हो उठी थीं।

भारत के नए जागरण के हर क्षेत्र पर दयानन्द की अमिट छाप है। उनकी दृष्टि से देखकर सभी ने आत्म-पथ निर्मित किया है। अज्ञान, अन्याय और अभाव पर एक साथ प्रहार करने वाला धरती पर दयानन्द अकेला महामानव था।

ऐसे युग-पुरुष पर कवि की वाणी मुखर न हो यह कैसे सम्भव था। कुछ महाकाव्यों का प्रणयन हुआ और उनके द्वारा कवि ने जन-मानस को जागरण का संदेश सुनाया।

राजस्थान विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर परीक्षा में प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध श्रीमती ज्योत्स्ना का अपने ढंग का प्रथम प्रयास है। उन्होंने इसके द्वारा दयानन्द को ही नहीं, उन कवियों को भी ज्योतिर्मय किया है जो काल प्रवाह में आंखों से ओझल हो चुके थे।

शोध प्रबन्ध की अपनी सीमाएं होती हैं। उनमें काव्य के गुण-लक्षण-भाव-रस-अलंकार का विश्लेषण प्रमुख होता है। प्रबन्ध पाठ से पाठक यह जान पाएंगे कि दयानन्द पर लिखे गए महाकाव्य साहित्य-कला की दृष्टि से भी हिन्दी की श्री-वृद्धि करने में सफल हुए हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर ऋषि के प्रति कविता श्रद्धा सुमन भी हमने यत्र-तत्र स्थान बचने पर सजाने का प्रयास किया है। ये प्रबन्ध का अंग न होते हुए भी पाठकों के लिए उपयोगी होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बेटी ज्योत्स्ना का यह प्रथम प्रयास वस्तुतः उसके पारिवारिक संस्कारों की प्रेरणा का परिणाम है। हमें विश्वास है कि साहित्य में ज्योत्स्ना की प्रतिभा सत्य और कला के मिश्रण से विश्व के मानस के हृदय को झंकृत कर प्रकाश किरणों का आह्लाद गुंजाने में सफल होगी।

दीपमाला के ज्योतिर्मय पर्व पर ज्योत्स्ना के जीवन का यह प्रथम प्रयत्न प्राणों में पावनता की प्रतिमा को जन्म देने में सफल होगा, इस विश्वास के साथ यह लघु प्रयास आपके हाथों में सादर अर्पित है।

मंगल कामनाओं सहित,
भारतेन्द्रनाथ
प्रबन्ध संचालक,
दयानन्द संस्थान,
वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

सत्य ही शाश्वत अमर है,
सत्य ही है सार जग का।
सत्य ही था लक्ष्य ऋषि का,
सत्य ही पाथेय अपना॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्म-निवेदन

सामान्य से विशिष्ट प्रत्येक मानव की स्वाभाविक कल्पना है। यही कल्पना मेरे मानस में भी थी, जब लघु-प्रबन्ध के विषय-चयन का प्रश्न सन्मुख उपस्थित हुआ। आकांक्षा थी कि विषय इतना महत्वपूर्ण हो, साथ ही बुद्धिजीवियों की दृष्टि से अछूता भी रहा हो, जिसे देखकर सबके मन में 'अरे···' भाव उत्पन्न हो।

पिछली दो पीढ़ियों से आर्यसमाजी परिवार होने के कारण महर्षि दयानन्द पर कुछ लेखन की भी इच्छा थी। विषय बहुत सामने थे, तभी 'बोधरात्रि' महाकाव्य को जो पराधीन भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा वर्षों प्रतिबन्धित रहा है, देखकर मन में भाव उठा कि संभवतः अन्य महाकाव्य भी ऋषि से प्रेरणा ग्रहण कर मुखरित हुये हों, और अजमेर में आर्यसमाजविषयक सभी जानकारियों के केन्द्र हैं श्रद्धेय डॉ० भवानीलाल भारतीय, उनसे जब इस विषय में उत्सुकता प्रकट की तो उन्होंने साथ में चार ऋषि-जीवनपरक महाकाव्य भी दिए कि इन पर अब तक कार्य भी नहीं हुआ है, तुम करो, अच्छा रहेगा। बस ! कुछ नया करने की इच्छा तो पूर्ण हुई, सफलता की कल्पना तो महाकवि कालिदास के शब्दों में—'आपरितोषाद् विदुषां व साधु मन्ये प्रयोग-विज्ञानम्' के अनुसार विद्वदालोचकों के निर्णय पर ही है। यद्यपि कार्य से मैं भी पूर्ण सन्तुष्ट नहीं, तथापि सीमित काल में जो प्रस्तुत कर सकती थी, वह प्रयास अवश्य ही किया है।

ग्रन्थ पढ़कर जो ज्ञान प्राप्त हुआ, उसके लिए मैं आदरणीय डॉ० भवानीलाल भारतीय जी की कृतज्ञ हूं। साथ ही आभारी हूं अपने गुरुवर्य प्रो० ओम्प्रकाश जी रैना की, जिनके स्नेहाशीर्षपूर्ण निर्देशन में यह प्रबन्ध प्रस्तुत हो सका। मेरी बात अपूर्ण ही रहेगी यदि मैं अपने हिन्दी-विभागाध्यक्ष डॉ० लक्ष्मीकान्त जी शर्मा के प्रति कुछ न कहूं। उन्होंने समय-समय पर मेरे सन्मुख उपस्थित हुई समस्याओं का समाधान कर मुझे उपकृत किया। अपने ही महाविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता डॉ० देव-शर्मा के प्रति भी मैं धन्यवाद प्रकट करती हूं, जिनके अमूल्य परामर्श से मेरा कार्य सुकर हो सका।

इस अवसर पर वन्दन है अपने पूज्य पिता-माता के चरणों में, जिनके कर्मठ जीवन का आदर्श ही मेरे प्रत्येक कार्य की प्रेरणा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और क्या कहूं अपने जीवन-पथ के सहयात्री प्रो० धर्मवीर (प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, दयानन्द कालेज, अजमेर) के विषय में ! भावनाओं के उस साम्राज्य में जब शब्द अपनी सत्ता खो रहे प्रतीत होते हैं, तभी सूक्ष्मतम भावों के चितेरे प्रसादजी मेरी इस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर देते हैं—तुम्हें अर्पण, और वस्तु त्वदीय ।

अन्त में आशापूर्ण निवेदन है सभी विद्वद्वरों की सेवा में कि वे मेरे इस सर्वथा अछूते व विस्मृत विषय पर किए गए प्रथम प्रयास को उचित मार्गदर्शन देकर अनुगृहीत करेंगे ।

२४/२६६ चांद बावड़ी रोड
केसरगंज, अजमेर

जिज्ञासु छात्रा
ज्योत्स्ना

प्रमाण-पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि दयानन्द कालेज, अजमेर की छात्रा श्रीमती ज्योत्स्ना द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय की सन् १९७८ की स्नातकोत्तर चतुर्थ समसत्र की परीक्षा में अष्टम प्रश्नपत्र के लिये मेरे निर्देशन में 'महर्षि दयानन्द के जीवनपरक महाकाव्य' पर लघु-प्रबन्ध प्रस्तुत किया गया है ।

यह कार्य सर्वथा मौलिक एवं उसके स्वयं के प्रयासों का फल है ।

(प्रो०) ओम्प्रकाश रैना
प्रवक्ता
हिन्दी विभाग
दयानन्द कालेज, अजमेर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योत्स्ना

प्रस्तुत शोध निबन्ध की लेखिका श्रीमती ज्यो[illegible]ना का जन्म १९५३ (गाजियाबाद) में हुआ। [illegible]म तिथि ३ अप्रैल १९५३।

[illegible]ता पंडिता राकेश रानी और पिता पं० भारतेन्द्र नाथ का लाड़-दुलार-संस्कार पाकर बचपन से ही सौष्ठव के भावों से पूर्ण होती गयीं।

चन्द्रमा की किरणों सी शान्तिदायिनी ज्योत्स्ना में नारी सुलभ गुणों की पूर्णता के साथ धैर्य, साहस और उत्साह का जो संगम है, उसकी तुलना मिलनी सहज नहीं।

१८ वर्ष की अल्पायु में आंग्ल भाषा में एम० ए० किया। अध्ययन के साथ-साथ जन-ज्ञान का हिन्दी-अंग्रेजी भाषाओं में सम्पादन। गृह कार्यों में निपुणता और सामाजिक दायित्वों का वहन।

दयानन्द संस्थान को वर्तमान स्थिति में पहुंचाने की मूर्त साधना। १९७३ में सम्पादन कला में प्रवीणता का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

२५ मई १९७५—महाराष्ट्र वासी प्रो० धर्मवीर अध्यक्ष संस्कृत विभाग दयानन्द कालिज अजमेर से विवाह।

और १९७८ में हिन्दी में ७० प्रतिशत अंक लेकर सफलता। उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी साधारण शारीरिक कार्यों में अटूट श्रम भावना।

१९७८ सितम्बर—यमुना की भीषण बाढ़ से ग्रस्त वेद मंदिर में १५ दिन अकेले उ[illegible]च में रहकर जो श्रम किया, उसे देख आस-पास के सभी ग्रामवासी दंग रह गए

[illegible]त निबन्ध में उनकी सूझ-बूझ साहित्यिक भावना-सुरुचि प्रत्यक्ष है। यह उनका [illegible]थम प्रयास है।

ज्योत्स्ना में विद्युत्, चन्द्रमा और सूर्य के गुणों का जो मिश्रण है उससे अनेक आशाएं भविष्य में उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं।

अपूर्व भावनाएं संजोए, कामनाओं से दूर, शाश्वत वरदान सी ज्योत्स्ना का यह शोध प्रबन्ध स्वयं उनका परिचायक है।

—सं०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रथम उल्लास

महाकाव्य . लक्षण, विमर्श एवं परम्परा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द के प्रति !

* * *

आदि मनुज से सुन्दरतम तुम,
आदि 'प्राण' से सुन्दर प्राण।
तुम 'मानव' थे युग मानव या,
मानवता के ही अभियान !
तुम अद्‌भुत थे, मंजुल कवि की,
शाश्वत वीणा के अनुरूप।
तुम में झांक रहा था ऋषिवर !
सतयुग का अभिनव प्रारूप !!
बीच भंवर जग नाव पड़ी थी, तुम ही खोज सके पतवार।
हे युग-स्रष्टा ! हे युग-द्रष्टा ! हे युग-गौरव ! युगाधार !!!

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

o o o

संगीत की स्वरलहरी आत्मत्व तक पहुंचने का सीधा और सर्वोत्तम मार्ग है। उपासना में इसी कारण साम का सर्वोच्च स्थान है। वही संगीत की सुधाधारा काव्य-परम्परा की जन्मदात्री है, इसके द्वारा विचारों और संस्कारों को उनके गहन स्तर तक प्रभावित किया जा सकता है। काव्य का अस्तित्व, विस्तार और अनिवार्यता ही इसका स्वयंसिद्ध प्रमाण है। काव्य का संस्पर्श अन्तःकरण तक, और प्रभाव बड़ा व्यापक होता है। उसका स्वारस्य एवं सारल्य उसे आकर्षक एवं उपादेय बना देते हैं। जिस प्रकार बालकों को छोटी-छोटी कहानियां उनकी जिज्ञासा एवं औत्सुक्य को जाग्रत् कर उन्हें पूर्ण तृप्ति का अनुभव कराने वाली बड़ी-बड़ी कथाओं व उपन्यासों तक पहुंचाने वाली हुआ करती हैं, यही आनन्दोन्मुख मूल प्रवृत्ति मानव के काव्य से महाकाव्य तक पहुंचने में भी लक्षित होती है।

काव्य के सहज प्रभाव को आचार्य मम्मट ने 'कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' कहकर प्रकाशित किया है। सौन्दर्य, स्वारस्य एवं आकर्षण का स्थान जड़ वस्तुओं में प्रमुप्रसूत प्रकृति है तो चेतनप्रसूत सौन्दर्य का चिरन्तन सत्य काव्य है, जो परमेश्वर के काव्य की भांति 'न ममार न जीर्यति' होकर दिनानुदिन देश, जाति व मानवता के लिए प्रेरणा का अजस्र स्रोत बनकर प्रवाहित होता रहता है। यही महाकाव्य का महत्त्व है।

महाकाव्य

'महच्चेदं काव्यं महाकाव्यं' अर्थात् वह काव्य जो महान् हो। इस प्रकार महाकाव्य का शाब्दिक अर्थ हुआ—'बड़ा काव्य'। जो सामान्य काव्य से आकार और प्रकार में बड़ा हो। काव्य या साहित्य की सभी शाखाओं में महाकाव्य का विस्तार, क्षेत्र, सीमा तथा आकार सबसे बड़ा होता है, अतएव महाकाव्य को अपनी महत्ता की रक्षा के लिए जीवन की महानतम वास्तविकता से सम्बद्ध वर्ण्य विषयों का प्रतिष्ठापन, जीवन के उच्चतम सौन्दर्य का चित्रण, मानव जीवन के चरम लक्ष्य का साध्य रूप में उपस्थापन, जगत् एवं जीवन के महान् व चिरन्तन सत्य का तात्पर्य एवं महत्त्व-प्रतिपादन तथा मानवता के स्थायी शिवत्व का दर्शन उपस्थित करना चाहिए, जिससे विश्व के अधिकाधिक लोग उसे पढ़कर अधिकाधिक काल तक अपने जीवन का पथ, प्रेरणा एवं साध्य पा सकें, उससे अपने जीवन की समस्याओं का प्रकाश प्राप्त कर सकें उससे अपनी चेतना का विस्तार कर सकें एवं जीवन के असामाजिक तत्त्वों को दूर कर सकें। महाकाव्य के इसी महत्तत्त्व को लक्षित कर दिनकरजी ने लिखा है : "विश्व के महाकाव्य मनुष्यता की प्रगति के मार्ग में मील के पत्थरों के समान होते हैं, वे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यंजित करते हैं कि मनुष्य किस युग में कहां तक प्रगति कर सका है।[१]

महाकाव्य की चर्चा हमें सर्वप्रथम प्राचीनतम महाकाव्य रामायण में उपलब्ध होती है। इस प्रसंग में राम ने लव-कुश से इस महाकाव्य के आकार-प्रकार, नायक आदि के विषय में प्रश्न करते हुए कहा है—

किं प्रमाणमिदं काव्यं का प्रतिष्ठा महात्मनः।
कर्ता काव्यस्य महतः क्वचासौ मुनिपुंगव :॥

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट रूप में महाकाव्य के तीन लक्षण हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। राम ने लव-कुश से तीन प्रश्न किये हैं, वे ही महाकाव्य की परिभाषा को स्पष्ट कर रहे हैं—यह काव्य कितने प्रमाण (बड़ा) का है (इससे महाकाव्य का आकार-प्रकार जाना जा रहा है कि वह काव्य से बड़ा होता है)। दूसरा प्रश्न है कि किस महात्मा की प्रतिष्ठा उसमें की गयी है जिससे स्पष्ट होता है कि उस महाकाव्य में किसी महात्मा या महापुरुष की प्रतिष्ठा का वर्णन अथवा चित्रण सांगोपांग हो, वाटिका के रूप में दिखाना नहीं किन्तु महाकान्तार के रूप में दिखाना है। अन्त में तीसरा प्रश्न है कि इस महत् काव्य के रचयिता श्रेष्ठ मुनि कहां हैं अर्थात् उस महाकाव्य का रचयिता कोई श्रेष्ठ उच्च कोटि का ही वर्णन करने वाला कवि हो।

आदि-कवि के पश्चात् महाकाव्य की परिभाषा कदाचित् विभिन्न युगों और देशों के विभिन्न शैलियों के महाकाव्यों से प्राप्त होकर स्थायी लक्षणों में सम्मुख आई और साहित्य में सर्वप्रथम महाकाव्य की परिभाषा को जिन्होंने निश्चित स्वरूप प्रदान किया, वे हैं पांचवीं शताब्दी के आचार्य भामह।

आचार्य भामह का मत है कि महाकाव्य सर्गबद्ध हो, उसमें किसी महापुरुष के जीवन-चरित्र का वर्णन हो, उसमें ग्राम्य शब्दों का प्रयोग न होकर उत्कृष्ट अर्थयुक्त अलंकृत शब्दों का प्रयोग हो, उसमें विजय, यात्रा, दूत-प्रेषण, युद्ध-विजय आदि का वर्णन हो और उसमें नायक का वध नहीं दिखाया गया हो।[२]

इसके अनन्तर आचार्य दण्डी ने उक्त लक्षणों के अतिरिक्त महाकाव्य की कुछ नई विशेषताओं का भी उल्लेख किया है और बताया है कि महाकाव्य के आरम्भ में आशीर्वाद, नमस्कार अथवा वस्तु-निर्देश हो। उसका नायक चतुर और उदात्त स्वभाव वाला हो। उसके अन्तर्गत नगर, समुद्र, पर्वत, ऋतु, चन्द्रोदय, सूर्योदय, उद्यान, जल-क्रीड़ा, मद्य-गोष्ठी, रथोत्सव, संयोग-वियोग, विवाह, पुत्रोत्पत्ति आदि के वर्णन हों। वह रस, भावादि से परिपूर्ण हो। उसका प्रत्येक सर्ग अति विस्तृत न हो। उसके छन्द श्रव्य हों और इतिवृत्तादिदोष से रहित हों। उसमें समस्त नाटक-संधियां भी हों और वह सर्वत्र विलक्षण वर्णनीय वृतान्तों से परिपूर्ण हो।[३]

---

१. दिनकर अर्द्धनारीश्वर, पृ० ४६
२. काव्यालंकार १, १६-२३
३. काव्यादर्श १, १४-१६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसके अतिरिक्त आचार्य विश्वनाथ (कविराज) ने भी महाकाव्य की कुछ नयी बातों की ओर संकेत किया है। उनका मत है कि महाकाव्य का नायक उच्च कुलोद्भव क्षत्रिय या कोई देवता हो, जिसमें धीरोदात्त गुण हों। साथ ही एक ही कुल के अनेक राजा भी इसके नायक हों। उसमें शृंगार, वीर और शांत इन तीनों रसों में से किसी एक रस की प्रधानता हो और शेष रस अंग रूप में आये हों। दण्डी ने जहां महाकाव्य के चारों फल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का होना बतलाया है, वहां विश्वनाथ ने चारों फलों में से किसी एक फल की प्राप्ति का आग्रह किया है। साथ ही यहां महाकाव्य के आरम्भ में आशीर्वाद आदि के साथ ही खल-निन्दा और सज्जन-प्रशंसा का होना भी आवश्यक बतलाया है इसके अतिरिक्त उनका मत है कि प्रत्येक सर्ग में एक छन्द हो, किन्तु अंत में वह बदल जाना चाहिए। सर्गों की संख्या कम से कम आठ हो और वे न अधिक विस्तृत हों और न अधिक संक्षिप्त। किसी एक सर्ग में अनेक छंद भी हो सकते हैं। प्रत्येक सर्ग के अंत में आगामी सर्ग की कथा सूचित होनी चाहिए। उसमें मुनि, स्वर्ग, पुर, यज्ञ आदि का भी वर्णन हो और उसका नामकरण कवि, नायक, इतिवृत्ति या अन्य किसी पात्र के आधार पर किया गया हो, परन्तु प्रत्येक सर्ग का नाम उसके वर्ण्य विषय के आधार पर ही होना चाहिए।[1]

हिन्दी विद्वानों की महाकाव्य सम्बन्धी धारणा

हिन्दी में आदिकाल से लेकर अब तक अनेक महाकाव्यों का प्रणयन हुआ है तथा कुछ विद्वानों ने उसके स्वरूप विवेचन की ओर भी यत्किंचित् ध्यान दिया है। इस दिशा में प्रमुख रूप से उल्लेखनीय मत आचार्यमहावीर प्रसाद द्विवेदी का है। उन्होंने संस्कृत आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट उपबन्धों को यथावत् स्वीकार करने पर आपत्ति करते हुए युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन करते रहने पर बल दिया है। यथा—'पुराने साहित्यशास्त्रियों ने कवियों के मार्ग को बेतरह संकीर्ण कर दिया है। उन्होंने ऐसे जटिल नियम बना दिये हैं कि किसी रचना को महाकाव्य की सीमा के भीतर लाने के लिए कवियों को अनावश्यक विषयों का वर्णन करना पड़ता है'।[2] कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने भी इसी मत का समर्थन किया है, 'वनविहार-वर्णन, जल-केलि-वर्णन, आखेट-वर्णन, षड्ऋतु-वर्णन, गिरि-वर्णन और समुद्र आदि के वर्णन सभी महाकाव्यों के लिए आवश्यक समझे गये हैं, परन्तु इस विषय में परतंत्र होना हमें उचित नहीं।'[3]

आधुनिक काल के महान् समीक्षक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने महाकाव्य के स्वरूप-निर्धारण में केवल चार तत्त्वों को महत्त्व दिया है—इतिवृत्त, वस्तु-व्यापार-वर्णन, भाव-व्यंजना तथा संवाद। डा० गुलाबराय जी के मतानुसार—'महाकाव्य वह विषय-

---

१. साहित्यदर्पण, ६, ३१५-३१८
२. साहित्य सन्दर्भ, पृष्ठ २६६
३. पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, लखनऊ, कार्यक्रम दूसरा भाग, पृष्ठ ५७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रधान काव्य है जिसमें कि अपेक्षाकृत बड़े आकार में जाति में प्रतिष्ठित और लोकप्रिय नायक के उदात्त कार्यों द्वारा जातीय भावनाओं, आदर्शों और आकांक्षाओं का उद्घाटन किया जाता है।[१]

भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वानों ने भी महाकाव्य सम्बन्धी अनेक मतों का प्रतिपादन किया है। सर्वप्रथम इसके स्वरूप का विशद विवेचन अरस्तू के काव्यशास्त्र (Poetics) में मिलता है। उनके अनुसार, "महाकाव्य वह काव्य रूप है जिसमें कथात्मक अनुकरण होता है, उच्च कोटि के पात्र होते हैं, रूप समाख्यानात्मक होता है, षड्पदी छन्द का प्रयोग होता है, जिसका कथानक दुःखान्त नाटक के समान अन्विति पूर्ण होता है, सीमायें अत्यन्त विस्तृत होती हैं और जिसकी शैली उदात्त होती है।"

पुनर्जागरण काल के महाकाव्यकारों ने अरस्तू की धारणा की आलोचना प्रस्तुत करते हुए महाकाव्य में अति प्राकृत तत्त्व का विरोध किया और इसके स्थान पर युग-संस्कृति के चित्रण पर विशेष बल दिया। उन्होंने शास्त्रीय नियमों के प्रति भी अपना विरोध प्रकट किया है, इसलिये टिलियर्ड उसीको महाकाव्य मानते हैं जिसमें 'गौरवपूर्णता, समृद्धता, संयम, संगीतात्मकता, अपने समय के समाज तथा संस्कृति की झांकी, प्रणय, व्यंग्य-विनोद आदि स्पष्ट अथवा प्रच्छन्न दोनों रूप से विद्यमान हों।'

अतः स्पष्ट है कि भिन्न-भिन्न देशों में, भिन्न-भिन्न कालों में उपस्थित परिभाषायें समय-समय पर परिवर्तित हुयीं। युग-परिवर्तन के साथ-साथ महाकाव्य के स्वरूप में भी अंतर आया। अतः तत्त्वों के आधार पर महाकाव्य के लिये कियेगये डा० नगेन्द्र के विवेचन में हम प्रत्येक देश तथा काल के महाकाव्यों को संभवतः बांध सकने में समर्थ हों। उन्होंने महाकाव्य के पांच तत्व गिनाये हैं—उदात्त कथानक, उदात्त पात्र, उदात्त उद्देश्य (कार्य), उदात्त भाव और उदात्त शैली। इन तत्त्वों की व्यापकता के कारण प्रत्येक देश तथा काल के महाकाव्य इस सीमा में आ जाते हैं—चाहे उनमें कितना ही भेद क्यों न हो।

महाकाव्य-परम्परा (संस्कृत)

महाकाव्यों का सुव्यवस्थित रूप हमें रामायण और महाभारत ग्रन्थों में प्राप्त होता है। भारतीय वाङ्मय के इन दोनों ग्रन्थों को पाश्चात्य और पौर्वात्य विद्वानों ने एक मत से महाकाव्य स्वीकार किया है। संस्कृत में रामायण और महाभारत से बड़ा कोई महाकाव्य नहीं लिखा गया है। भाषा, भाव, कला, शिल्प, शैली, चरित्र-चित्रण, कथा-संयोजन आदि सभी दृष्टियों से इन महाकाव्यों को परवर्ती कवियों ने आदर्श रूप में स्वीकार किया है।

संस्कृत महाकाव्य की सुदीर्घ परम्परा का विकास इन्हीं महाकाव्यों को आदर्श मानकर हुआ। प्राचीन काव्याचार्यों ने महाकाव्य के जिन लक्षणों का निरूपण किया

---

१. काव्य के रूप (चतुर्थ संस्करण), पृष्ठ ८६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है, उनमें भी इन महाकाव्यों का योगदान है। अतः रामायण और महाभारत लिपिबद्ध महाकाव्य के दो आदि-ग्रन्थ कहे जा सकते हैं।

संस्कृत में कालिदास से पूर्व महाकाव्य की परम्परा अज्ञातप्रायः ही है। केवल अश्वघोष के 'बुद्ध-चरित्र' और 'सौन्दरानन्द' नामक दो महाकाव्य ही कालिदास से पूर्व उपलब्ध होते हैं। अश्वघोष के पश्चात् कालिदास के दो महाकाव्य 'कुमारसंभव' और 'रघुवंश', भारवि का 'किरातार्जुनीय', माघ का 'शिशुपालवध' और श्री हर्ष का 'नैषधीयचरित' संस्कृत के पांच उत्कृष्ट महाकाव्य हैं। इन सभी महाकाव्यों में उच्च कोटि का काव्यत्व एवं कला-कौशल प्रदर्शित हुआ है। लक्षणकारों ने महाकाव्य की जो परिभाषायें निर्धारित की हैं उनका आधार ये ही महाकाव्य हैं। संस्कृत के अन्य महाकाव्यों में भट्टी कविकृत 'रावणवध', कुमारदासकृत 'जानकीहरण', रत्नाकरकृत 'हरविजय', कविराजकृत 'राघवपांडवीय' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश

संस्कृत की ही भांति पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं में भी महाकाव्यों की रचना हुयी है। पालि में 'दीपवंश' और 'महावंश' दो ऐतिहासिक महाकाव्य लिखे गये हैं।

प्राकृत के महाकाव्यों में प्रवरसेन का 'सेतुबंध' और कृष्ण लीला का 'चिंध-काव्य' (सिरचिन्हकव्वं) उपलब्ध हैं। प्राकृत में ही वाकपतिराज का 'गोडवहो' और रामपाणिवाद का 'उषाणिरुद्ध' नामक महाकाव्य मिलते हैं।

अपभ्रंश में जैन कवियों ने अनेक चरित काव्यों की रचना की है, जिनमें स्वयंभू का 'पउमचरिउ' (रामायण), पुष्यदन्त का 'महापुराण' (तिसट्ठिमहापुरिसंगुणा-लंकार), 'णायकुमारचरिउ' (नागकुमार चरित), 'जसहरचरिउ' आदि। इसी परम्परा में कनकामरमुनिकृत 'करकंड चरिउ' और धनपालकृत 'भविस्सयत्त कहा' के नाम उल्लेखनीय हैं। जैन चरित-काव्यों में काव्य की अपेक्षा धार्मिक दृष्टिकोण का प्राधान्य है।

हिन्दी

विकासक्रम की दृष्टि से हिन्दी महाकाव्य परम्परा संस्कृत की अपेक्षा अपभ्रंश से अधिक प्रभावित है। हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य आज के युग की नवचेतना और विविध समस्याओं से अनुप्राणित होने पर भी प्राचीन भारतीय महाकाव्य-परम्परा से अधिक प्रभावित दृष्टिगत होते हैं।

हिन्दी महाकाव्य-परम्परा का प्रारंभ चन्दरवरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' से माना जाता है। इसके अनन्तर भक्तिकाल के महाकाव्यों में जायसी के 'पद्मावत' और तुलसीकृत 'रामचरितमानस' उल्लेखनीय हैं। रीतिकाल में महाकाव्यों का विकास अवरुद्धप्रायः रहा। इस काल में आचार्य केशव ने 'रामचन्द्रिका' महाकाव्य की रचना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की, किन्तु इसमें पाण्डित्य प्रदर्शन का आग्रह ही अधिक है, सहजता एवं स्वाभाविकता का अभाव है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में महाकाव्यों की एक व्यवस्थित परम्परा देखने को मिलती है, जिसका सूत्रपात हरिऔधजी के 'प्रियप्रवास' (१९१४ ई०) से होता है। आधुनिक युग का दूसरा महाकाव्य श्री मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' (१९२९) है। इसके पश्चात् इस युग के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण महाकाव्य 'कामायनी' का प्रणयन हुआ, जिसके प्रणेता हैं महाकवि श्री जयशंकर प्रसाद। कामायनी के अनन्तर जिन मुख्य महाकाव्यों की रचना हिन्दी में हुयी, उनका लेखकों एवं रचना काल सहित परिचय इस प्रकार है—

क्रम	महाकाव्य	रचयिता	रचना काल
१	सिद्धार्थ	अनूप शर्मा	१९३७
२	श्रीरामचन्द्रोदय	रामनाथ ज्योतिषी	१९३७
३	वैदेही बनवास	हरिऔध	१९३९
४	हल्दी घाटी	श्याम नारायण पांडेय	१९३९
५	कृष्णचरित मानस	षटुम्ब दुर्गा	१९४१
६	कृष्णायन	द्वारिकाप्रसाद मिश्र	१९४३
७	कुरुक्षेत्र	दिनकर	१९४३
८	आर्यावर्त्त	मोहनलाल महतो	१९४३
९	जौहर	श्याम नारायण पांडेय	१९४५
१०	महामानव	ठाकुर प्रसाद सिंह	१९४६
११	साकेत-संत	बलदेवप्रसाद	१९४६
१२	विक्रमादित्य	गुरुभक्तसिंह	१९४७
१३	दैत्यवंश	हरदयालुसिंह	१९४७
१४	जननायक	रघुवीरशरण मित्र	१९४९
१५	अंगराज	आनन्दकुमार	१९५०
१६	वर्द्धमान	अनूप शर्मा	१९५१
१७	रावण	हरदयालुसिंह	१९५२
१८	जयभारत	मैथिलीशरण गुप्त	१९५२
१९	जगदालोक	ठा० गोपालशरणसिंह	१९५२
२०	देवार्चन	श्री करील	१९५२
२१	पार्वती	रामानन्द तिवारी	१९५५
२२	झांसी की रानी	श्यामनारायणप्रसाद	१९५५
२३	रश्मिरथी	रामधारीसिंह दिनकर	१९५७
२४	नारी	अतुलकृष्ण गोस्वामी	१९५७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२५	मीरां	परमेश्वर द्विरेफ	१९५७
२६	दमयन्ती	तारादत्त हारीत	१९५७
२७	उर्मिला	बालकृष्ण नवीन	१९५८
२८	एकलव्य	डा० रामकुमार वर्मा	१९५८
२९	तारक-वध	गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश	१९५८
३०	सैनापति कर्ण	लक्ष्मीनारायण मिश्र	१९५८
३१	युगद्रष्टा प्रेमचन्द	परमेश्वर द्विरेफ	१९५९
३२	रामराज्य	बलदेवप्रसाद	१९६०
३३	उर्वशी	दिनकर	१९६१
३४	सारथी	रामगोपाल दिनेश	१९६१
३५	बाणाम्बरी	रामावतार पोद्दार	१९६१
३६	अनंग	डा० पुत्तूलाल शुक्ल	१९६१
३७	प्रिय-मिलन	नन्दकिशोर झा	१९६४
३८	लोकायतन	सुमित्रानन्दन पंत	१९६४
३९	मानवेन्द्र	रघुवीरशरण मित्र	१९६५

इसके अतिरिक्त कैकेयी, शर्वाणी और विश्वज्योति बापू आदि महाकाव्यों का प्रणयन भी आधुनिक काल में हुआ है।

जीवनपरक महाकाव्य

निश्चय ही हिन्दी महाकाव्य प्रगतिपथगामी है, इस परम्परा में विकास दृष्टिगत होता है। अधिकांश महाकाव्यों की कथावस्तु यद्यपि पौराणिक है तथापि वे वर्तमान युग से भी सर्वथा असम्पृक्त नहीं हैं, उनमें सम-सामयिक युग-जीवन को उत्प्रेरित करने की अनंत शक्ति और सामर्थ्य भी है।

पौराणिक विषय-वस्तु के अतिरिक्त वर्तमान युग के पराक्रमी, मेधावी व्यक्तियों एवं महापुरुषों पर भी महाकाव्यों की रचना हुयी है। 'महामानव', 'जननायक', 'जगदालोक,' 'विश्वज्योति बापू' नामक महाकाव्य गांधीजी के महिमामय व्यक्तित्व की गाथा कहते हैं। 'मानवेन्द्र' पं० जवाहरलाल नेहरू पर लिखा गया महाकाव्य है। 'हल्दी घाटी' में महाराणा प्रताप, 'झांसी की रानी' में महारानी लक्ष्मीबाई, 'देवार्चन' में तुलसीदास, 'युगद्रष्टा' में प्रेमचन्द, 'मीरा' में मीराबाई, 'बाणाम्बरी' में बाणभट्ट, 'सिद्धार्थ' में गौतम बुद्ध, 'वर्द्धमान' में भगवान् महावीर, 'आर्यावर्त' में महाराज पृथ्वीराज आदि युगप्रेरक चरित्रों का वैभवशाली चित्रण है। इसी शृंखला में हमारे लघु-शोध प्रबन्ध हेतु प्रस्तुत आलोच्य महाकाव्य भी हैं, जिनके प्रेरणास्रोत हैं आधुनिक युग के क्रांतिकारी महापुरुष देव दयानन्द तथा महाकाव्यों के नाम इस प्रकार हैं--

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रम	महाकाव्य	रचयिता	रचना काल
१	धर्मदिवाकरोदय	कविकुमार ठा० शेरसिंह	१९१३
२	दयानन्दायन	ठा० गदाधरसिंह	१९२८-३०
३	बोधरात्रि	विज्ञान मार्तण्ड वात्स्यायन	१९३९
४	ऋषि-गाथा	विमलचन्द्र विमलेश	१९५३
५	दयानन्द-प्रकाश	प्रकाशचन्द्र कविरत्न	१९७२

महापुरुषों के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व में ही कुछ ऐसी प्रेरणा होती है कि कवि स्वतः ही लेखनी उठा महाकाव्य का प्रणयन करने लगता है तथा आनेवाले युग के लिये आदर्श प्रस्तुत करता है। इसी सन्दर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार द्रष्टव्य हैं—"मन में जब एक महत् व्यक्ति का उदय होता है, सहसा जब एक महापुरुष कवि के कल्पना राज्य पर अधिकार आ जमाता है, मनुष्य चरित्र का उदार महत्त्व मनश्चक्षुओं के सामने अधिष्ठित होता है, तब उसके उन्नत भावों से उद्दीप्त होकर उस परम पुरुष की प्रतिमा प्रतिष्ठित करने के लिये कवि भाषा का मंदिर निर्माण करते हैं। उस मंदिर की भित्ति पृथ्वी के गंभीर अन्तर्देश में रहती है और उसका शिखर मेघों को भेदकर आकाश में उठता है। उस मंदिर में जो प्रतिमा प्रतिष्ठित होती है, उसके देवभाव से मुग्ध और पुष्प किरणों से अभिभूत होकर नाना दिग्देशों से आ-आकर लोग उसे प्रणाम करते हैं। इसी को कहते हैं महाकाव्य।"[१]

---

१. मेघनादवध-महाकाव्य, भूमिका, पृष्ठ १५७-५८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्वितीय उल्लास

महर्षि दयानन्द : राष्ट्र को देन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ooo

परिचय

प्रस्तुत जीवनपरक महाकाव्यों के प्रेरणास्रोत महर्षि दयानन्द वर्तमान युग की वह महिमामय विभूति हैं, जिन्होंने पाखंडों का खंडन, अज्ञान का विध्वंस और सत्य का प्रकाश कर भारत को नई ज्योति प्रदान की। राम-कृष्ण, ऋषि-मुनियों की पावन परम्परा को पुनः जाग्रत करने और वेद-ज्ञान का प्रचार करने के लिए मानव जाति सदा दयानन्द की ऋणी रहेगी।

इसी महापुरुष ने भारत को स्वतंत्र कराने की आधार शिला रखी, इसी ने तिलक, गोखले, नाना, तांत्या, सावरकर आदि को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

उनका जीवन प्रकाश का वह पुंज है, जो मानव के अन्तरतम को ज्योतित करने में समर्थ है। वे सत्य के लिए उभरे, सत्य के लिए ही संघर्ष किया, ईंट-पत्थर खाकर भी वे अपनी पूरी शक्ति से सत्य का उद्घोष करते रहे। इस महापुरुष के जीवन की संक्षिप्त झांकी निम्न रूप में प्रस्तुत है।

जन्म व बाल्यकाल

देव-भूमि भारतवर्ष की महिमामयी गोद में समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने जन्म ग्रहण कर मानवता को सत्य-पथ का दर्शन करा धराधाम में व्याप्त अज्ञान के तिमिर को विदीर्ण कर ज्ञान का प्रकाश फैलाया है। इन्हीं महापुरुषों की शृंखला की कड़ी के रूप में संत्रस्त मानवता का पुनः उद्धार करने और उसके समक्ष सत्य-पथ प्रदर्शित करने हेतु १९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में काठियावाड़ के मौरवी राज्यान्तर्गत टंकारा नामक स्थान में सन् १८२५ में देव दयानन्द का जन्म हुआ था। उनका बाल्य-काल का नाम मूलशंकर था। पिता कर्षनजी तिवारी सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण थे। वे धनाढ्य जमींदार और सरकार की ओर से राजस्व उगाहने के लिए अधिकारी नियुक्त थे। पंचम वर्ष में मूलशंकर का विद्यारम्भ हुआ, तथा नागरी अक्षरों का सीखना आरम्भ किया। आठवें वर्ष में उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। मूलशंकर ने १४ वर्ष की आयु में ही यजुर्वेद संहिता संपूर्ण कण्ठस्थ कर ली थी और अन्य वेदों के कुछ अंश भी। इतना ही नहीं अपितु उन्होंने इस अल्पायु में ही निरुक्त, निघण्टु, पूर्व मीमांसा व कर्मकाण्ड के कतिपय ग्रन्थों का अध्ययन भी पूर्ण कर लिया था।

अद्भुत प्रबोध

मूलशंकर के पिता निष्ठावान् शैव थे और शिव के प्रति श्रद्धा जगाने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। वे व्रत, उपवास, पूजा, उपासना आदि धार्मिक कृत्यों का पालन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वयं कठोरता से करते थे और दूसरों से भी करवाते थे। बालक मूलशंकर की इच्छानुसार, माता के विरोध करने पर भी, चौदह वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर पिता ने उसे शिवरात्रि का व्रत रखने की आज्ञा दी। इस व्रत में शिवरात्रि की रात्रि को उपवास रखकर, जागरण करके शिवजी का गुणगान करना पड़ता है। बालक मूलशंकर ने श्रद्धा से व्रत रखा और रात को जागता रहा। पूजा के पश्चात् अर्द्धरात्रि के समय जब सब सो गए तो भी वह जागता रहा। कुछ समय पश्चात् उसने एक चूहे को शिवजी की मूर्ति पर चढ़ते देखा। मूलशंकर ने सोचा जो एक चूहे को नहीं हटा सकता, वह संसार को कैसे चला सकता है ? यह चिंतन ही मूलशंकर का अद्‌भुत प्रबोध है, जिसने उसका भविष्य बदल दिया। उसके शंकाकुल मन को उसका पिता शांत न कर सका, फलस्वरूप मूर्तिपूजा को उसने सर्वदा के लिए त्याग दिया।

मृत्युंजय बनने का संकल्प

मूलशंकर कर्षनजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनकी दो छोटी बहनें थीं और दो छोटे भाई। जब मूलशंकर १६वें वर्ष में चल रहे थे, तभी उनकी १४वर्षीय भगिनी की मृत्यु ने उनके मन में जीवन के प्रति वैराग्य का अंकुर उत्पन्न किया। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार लिखा है—'जन्म से लेकर उस समय तक मैंने यहीं प्रथम बार मनुष्य को मरते देखा था। इससे मेरे हृदय पर वज्रपात हुआ और मुझे बड़ा भय हुआ। मैं भयभीत हुआ; सोचने लगा कि सारे मनुष्य इसी प्रकार मरेंगे और ऐसे ही मैं भी मर जाऊंगा। सोच विचार में पड़ गया कि जितने जीवन संसार में हैं, उनमें से एक भी न बचेगा। इससे कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे मरण-जन्म सभी दुखों से छूटकर मुक्ति हो अर्थात् उस समय मेरे चित्त में वैराग्य की जड़ जम गई।'[१]

इसके तीन वर्ष पश्चात् उनसे अत्यधिक स्नेह रखने वाले उनके चाचाजी की विषूचिका से मृत्यु हो गयी। इस वियोग पर वे बहुत रोये और उनकी वैराग्य-वृत्ति और भी अधिक उद्दीप्त हो उठी। उनके सामने एक शाश्वत प्रश्न उपस्थित हुआ—'क्या सभी को मरना होगा ?' उन्हीं के शब्दों में—'उस दिन मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी चाचा के सदृश एक दिन मरने वाला हूं।'[२] अमरत्व की खोज में विद्वानों और वृद्धों के पास गये। मूलशंकर की अन्यमनस्कता और चिंतनशीलता को देखकर माता-पिता ने उनको विवाह-बंधन में बांधना निश्चित किया। पाणिग्रहण की व्यवस्था हो रही थी और मूलशंकर सच्चे शिव की खोज में चिन्तित गृह त्याग निकल पड़े—सत्य की खोज में।

सत्य की खोज में

२१ वर्ष की युवावस्था में अमरत्व के पिपासु मूलशंकर ने सांसारिक बंधनों का

१. (सं०) पं० भगवद्दत : ऋषि दयानन्द स्वरचित जन्म चरित, पृ० ५
२. इन्द्र विद्यावाचस्पति : आर्य समाज का इतिहास (प्रथम भाग), पृ० ४४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मोह त्याग दिया और सच्चे शिव की खोज में १५ वर्ष तक भटकते रहे। मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की धुन में दयानन्द ने लगभग समग्र भारत के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में भ्रमण किया। उन्हें किसी ने बताया कि मृत्युंजयी होने के लिए 'योग' आवश्यक है। सच्चे योगी की प्राप्ति हेतु वे सघन वनों, पर्वतों में भटकते फिरे, लेकिन इस जिज्ञासु दयानन्द को सच्चा ज्ञान देने वाला न मिल सका। उन्होंने संन्यास की इच्छा प्रगट की, किन्तु अल्पायु को देख संन्यासीगण संकोच करते रहे। अंत में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास ग्रहण कर वे शुद्ध चैतन्य से दयानन्द सरस्वती हो गए। नाना स्थानों पर ज्ञान की खोज में भटकते रहे पर कहीं तृप्ति न मिली। भ्रमण करते हुए उन्होंने मथुरा के दण्डी स्वामी विरजानन्द की विद्वत्ता का यश सुना और १४ नवम्बर १८६० को मथुरा पहुंच स्वामी विरजानन्द का द्वार खटखटाया।

गुरु के चरणों में

प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी विरजानन्दजी ने दयानन्द की प्रतिभा को पहचाना और तीन वर्ष तक विद्या का प्रकाश दिया। इन तीन वर्षों में उन्होंने गुरुजी से अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि व्याकरण ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। वैदिक साहित्य के अध्ययन से उन्हें ज्ञान-अज्ञान का भेद तथा धर्म-अधर्म का रहस्य स्पष्ट हुआ। गुरु-दक्षिणा के दिन लौंग लेकर दयानन्द गुरु-चरणों में उपस्थित हुए। उस समय दण्डीजी ने कहा—'वत्स ! मुझे लौंग नहीं चाहिएं, तुम्हारा जीवन चाहिए। देश का उपकार करो। सत्शास्त्रों का उद्धार करो। अज्ञान-तम दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाओ।' इतिहास साक्षी है कि दयानन्द ने तपस्या और साधना से गुरु के समक्ष की गई प्रतिज्ञा पूर्ण की और अपने प्राण उत्सर्ग कर वह ज्योति प्रज्वलित की जिससे धरा का अज्ञान-अंधकार दूर हुआ।

कर्मक्षेत्र में प्रवेश

गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके दयानन्द उतर पड़े कर्मक्षेत्र में। तत्कालीन भारत में व्याप्त पाखण्ड, अन्धविश्वास, अविद्या आदि पर उन्होंने अपनी पूर्ण शक्ति से प्रहार किया। अनेकों मत मतान्तर चल रहे थे, हिन्दू धर्म में विकृति आ गई थी, वर्ण-व्यवस्था, जातिभेद व छूत-छात आदि व्याधियों का रूप ग्रहण कर चुकी थीं, साधु का अर्थ ढोंग व दम्भ ही रह गया था, धर्म का घोष था पर धर्म के नाम पर अधर्म ही छाया था। ऐसे समय में यवन व ईसा के शिष्य अपनी पूर्ण शक्ति से जर्जर हिन्दू-धर्म पर आक्रमण कर रहे थे। उस स्थिति को देख दयानन्द निकल पड़े अकेले ही सब समस्याओं के निदान हेतु। उन्होंने सदियों से प्रचलित रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से जमकर लड़ाई की और ज्ञान का प्रसार किया।

आगरा, अजमेर आदि में धर्म प्रचार करके स्वामी दयानन्द ने अप्रैल मास सन् १८६७ में कुंभ के अवसर पर हरिद्वार व ऋषिकेश के मध्य अपनी पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहरा दी। यह प्रथम अवसर था जब विशाल हिन्दू जनता ने अपने धर्म के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच्चे स्वरूप के दर्शन किये।

यही नहीं, उन्होंने विभिन्न सम्प्रदायों के विद्वानों से काशी, प्रयाग, कानपुर, अजमेर आदि अनेक स्थानों पर शास्त्रार्थ किये, जिससे उनकी कीर्ति की सुगन्धि चतुर्दिक व्याप्त हो गई और कर्म क्षेत्र भी व्यापक हो गया। "सर्वत्र उनके गंभीर पांडित्य, स्पष्ट विचारों, निर्भीक उक्तियों तथा हिन्दू धर्म की नवीन व्याख्याओं ने अनेक लोगों को उनके उपदेश सुनने के लिए आकर्षित किया"।[१] स्वामीजी जहां जाते वहां प्रारंभ में अपना विज्ञापन छपवाकर जनता में वितरित करवा देते थे। यह उनका आत्म-विश्वास ही तो था, जिसके बल पर वे अकेले ही असंख्यों के विरुद्ध डटे रहे।

कलकत्ता में ब्राह्मसमाजियों से सम्पर्क होने पर तथा श्री केशवचन्द्र सैन के परामर्श से स्वामी दयानन्द ने भाषण में संस्कृत के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग आरम्भ कर दिया। ब्राह्म-समाज का संगठन देखकर उनके मन में एक ऐसा संगठन बनाने की इच्छा उत्पन्न हुई जो उनके द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करे तथा उनके पश्चात् भी यह कार्य निरन्तर चलता रहे। इस प्रकार भारत के विभिन्न प्रान्तों में भ्रमण करते हुए अनेकों विद्वानों को शास्त्रार्थों में पराजित किया तथा भ्रमोत्पादक विश्वासों को दूर कर सत्य की प्रतिष्ठा की।

आर्यसमाज की स्थापना

सत्य का प्रचार बढ़ता गया, फलस्वरूप ऋषि के अनुयायियों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी। स्वामीजी के विचारों से प्रभावित सभ्य व्यक्तियों ने उनसे एक संस्था स्थापित करने की प्रार्थना की, जो अन्धविश्वास व अज्ञान की रूढ़ियों से संघर्ष कर सके तथा राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सके और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार कर सके। तदनुसार बम्बई में १० अप्रैल सन् १८७५ को सायंकाल गिरगांव में डा० मानिकचन्द्रजी की वाटिका में श्री गिरधरदयाल कोठारी की अध्यक्षता में एक सर्व-साधारण अधिवेशन में नियम पढ़कर सुनाए गए और आर्यसमाज स्थापित हुआ।[२] इस समय आर्यसमाज के २८ नियम बनाए गए, किन्तु कुछ समय बाद जब लाहौर में आर्य समाज की स्थापना हुई तो १० नियम अन्तिम रूप से स्वीकृत किए गए। इन नियमों पर विचार करने से आर्य समाज की व्यापकता, उदारता और सार्वभौमता स्पष्ट हो जाती है।

उपर्युक्त संगठन के पश्चात् स्वामीजी ने अधिकांश समय का उपयोग आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका आदि सैद्धान्तिक ग्रन्थों के प्रणयन में किया।

महाप्रयाण

स्वामीजी की निर्भीकता, स्पष्टवादिता एवं पाखण्ड विरोध से अनेक अधर्मी

---

१. लाजपतराय : ए हिस्ट्री आफ दि आर्यसमाज, पृ० २६

२. इन्द्र विद्यावाचस्पति : आर्यसमाज का इतिहास (प्रथम भाग), पृ० ९२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्ति उनके कट्टर शत्रु बन गये थे। किसी ने आपको दूध के साथ तीक्ष्ण विष मिलाकर पिला दिया, जो स्वामीजी के लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ।

३० अक्तूबर १८८३ को, जब सारा भारत दीप-पंक्तियों से जगमगा रहा था, भारत के भाग्य को नया जन्म देने वाला महापुरुष संसार से विदा हो रहा था। सायंकाल ५ बजे का समय था स्वामीजी ने पूछा आज कौन सा मास, पक्ष और दिन है? उत्तर मिला मंगलवार कार्तिक अमावस्या है। स्वामीजी ने सब दरवाजे व रोशनदान खुलवा दिए, ऊपर की ओर दृष्टिपात किया और वेद-मंत्रों का पाठ करना आरम्भ कर दिया, फिर संस्कृत में उपासना की। प्रभु-गुणगान के साथ आनन्दमग्न हो गायत्री का उच्चारण किया और शान्त समाधिस्थ हो गए। पुनः आखें खोलकर 'ओ३म्' का उच्चारण किया और बोले, 'हे दयामय सर्वशक्तिमान् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अद्भुत तेरी लीला है'। यही उनके अन्तिम शब्द थे।

वस्तुतः सत्य की साधना, ज्ञान की कामना और धर्म की स्थापना के लिए संसार का प्रत्येक व्यक्ति ऋषि दयानन्द का ऋणी रहेगा।

महर्षि दयानन्द से बढ़कर भी मनुष्य
होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं
हो सकता।

—महाकवि निराला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

○ ○ ○

राष्ट्र को देन

१९वीं सदी में भारतभूमि पर अंग्रेजों का राज्य था। धर्म व समाज दोनों ही क्षेत्रों में अंध-विश्वास व अज्ञान का बोलबाला था। पाश्चात्य सभ्यता वेग से बढ़ रही थी, जिसने भारत के युवकों को उचित वातावरण से हटाकर अपनी जातीय प्रतिभा को घृणा की दृष्टि से देखना सिखाया। ऐसे ही समय में भारतीयता के प्रचार का बीड़ा उठाया युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने। उन्होंने समाज के प्रत्येक पक्ष में क्रांति का मंत्र फूंका। स्वामी दयानन्द १९वीं शताब्दी के सबसे बड़े वेद के विद्वान, धर्म-प्रचारक, समाज-संशोधक, देशोद्धारक और सर्वतोमुखी सुधारक थे—उनके इस बहुमुखी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से भारत राष्ट्र उपकृत है। उनके प्रभाव को निम्न रूपों में स्वीकार किया जा सकता है—

(१) **धार्मिक क्रान्ति**—देश में हिन्दू धर्म विरोधी साहित्य से वैदिक सभ्यता का लोप हो रहा था और उसका स्थान भोगवाद की मूल पाश्चात्य सभ्यता ले रही थी। प्राचीन संस्कृत साहित्य व्यर्थ और वेद गडरियों के गीत कहे जाने लगे थे। देश-वासी, विशेषकर अंग्रेजी शिक्षित मनुष्य, आंख बन्द कर पश्चिमी सभ्यता में रंगे जा रहे थे। पाश्चात्य का अनुकरण भारतीयों के लिये गौरव की वस्तु बन चुका था। इस वातावरण में प्राचीन सभ्यता का मान उत्पन्न करके 'वेद की ओर चलो' (Back to the Vedas) की ध्वनि प्रतिध्वनित की।

(१) वेदाध्ययन अधिकार—उन्होंने शंकर, रामानुज आदि प्रायः सभी मध्य-कालीन आचार्यों के मत के विपरीत वेद का द्वार मनुष्य मात्र के लिये खोल दिया और 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः'[1] की घोषणा करते हुए स्त्रियों, शूद्रों और अतिशूद्रों को भी वेदाध्ययन का अधिकारी बताया।

(२) वेद की मुख्यता—महर्षि दयानन्द ने केवल मात्र वेद को स्वतःप्रमाण और वेदेतर सभी ग्रन्थों को परतःप्रमाण बतलाते हुए मूर्ति-पूजा, मृतक-श्राद्ध आदि पौराणिक प्रथाओं को अवैदिक प्रकट करते हुए हेय बताया और घोषणा की कि वेद में केवल निराकार ईश्वर की उपासना का ही विधान है।

(३) वेद की सर्वसुलभता—तत्कालीन देशवासी वेद के केवल नाममात्र से ही परिचित थे। उन्हें वेद की शिक्षा का ज्ञान नहीं था। उनके इस अज्ञान के फलस्वरूप एक पोर्चुगीज पादरी ने एक संस्कृत पुस्तक वेद के नाम से गढ़कर उसमें ईसाई मत

---

१. यजुर्वेद २,६२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की शिक्षा अंकित की और उसके द्वारा मद्रास प्रान्त में अनेक लोगों को ईसाई बनाया। स्वामी दयानन्द ने वैदिक शिक्षाओं का व्यापक प्रसार किया और उनको अधिक स्पष्ट करने हेतु ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया, जिससे कोई विदेशी वेद के नाम पर हिन्दू जनता को विधर्मी न बना सके।[१]

धर्म भ्रष्ट किये मनुष्यों को फिर से धर्म ग्रहण अपनाने हेतु शुद्धि का द्वार खोला। इस भांति हिन्दू बनने की प्रेरणा दी।

(२) **सामाजिक सुधार**—सरस्वती के वरद पुत्र महाकवि निराला ने महर्षि दयानन्द के सामाजिक योगदान को इस प्रकार कहा है—'हमें अपने सुधार के लिये क्या-क्या करना चाहिये, हमारे सामाजिक उन्नयन में कहां-कहां और क्या-क्या रुकावटें हैं, हमें मुक्ति के लिये कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिये, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है।[२]

(१) ब्रह्मचर्य का महत्व—बाल-विवाह का प्रचार व ब्रह्मचर्य का लोप हो जाने से शारीरिक बल क्षीण हो रहा था। हिन्दू जाति क्षीण समझी जाने लगी थी। महर्षि दयानन्द ने इसके विरुद्ध आवाज उठायी। अपने उपदेशों, ग्रन्थों तथा स्वयं अपने क्रियात्मक जीवन द्वारा ब्रह्मचर्य का महत्व प्रतिपादित किया। उसीके परिणामस्वरूप देश में ब्रह्मचर्याश्रमों की स्थापना हुयी तथा सरकारी विश्वविद्यालयों में यह नियम बना कि हाई स्कूल की परीक्षा में विवाहित विद्यार्थी का प्रवेश नहीं हो सकता। शारदा एक्ट भी बना।

(२) बाल एवं वृद्ध-विवाह का विरोध—(विधवा-विवाह का समर्थन) बाल-विवाह एवं वृद्ध-विवाह के दुष्परिणामस्वरूप जाति में करोड़ों विधवायें हो गयी थीं, जिनमें लाखों बाल विधवायें भी थीं और उनमें हजारों ऐसी भी विधवायें थीं, जिनकी आयु एक-एक दो-दो वर्ष की थी, जिसके कारण भ्रूण-हत्या, गर्भपात, नवजात बाल-वध आदि अनेक पापों का जन्म हो रहा था और हिन्दू धर्म में विकृति का संचार हो रहा था। महर्षि दयानन्द का करुण हृदय द्रवीभूत हो गया और उन्होंने विधवा-विवाह का प्रचलन करके उनके दुःखों को मिटाने में सहायता दी।

(३) नारी जाति का उद्धार—मातृ-शक्ति नारी का अपमान अत्याचार की सीमा तक पहुंच चुका था। वे शिक्षा से वंचित करके पर्दे में रखी जाती थीं, उनके लिये वेदों का द्वार बन्द था। उनको यदि श्रीमान् शंकराचार्य ने नरक का द्वार बतला रखा था तो दूसरी ओर गोस्वामी तुलसीदासजी 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' का ढोल पीट चुके थे। परन्तु ऋषि ने नारी को शिक्षा की अधिकारिणी घोषित करते हुए उनके लिये वेदों का द्वार खोला, पर्दे से निकाला तथा उन्हें मातृ-शक्ति के रूप में देखा उनको इतने उच्चासन पर प्रतिष्ठित किया कि

---

१. महात्मा नारायण स्वामी : महर्षि दयानन्द की विशेषतायें, पृ० १
२. महाकवि निराला : महर्षि दयानन्द और पुरुषार्थ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदयपुर में हम उनको एक छोटी बालिका के आगे नतमस्तक होता देखते हैं। यह ऋषि दयानन्द की ही देन है कि आज नारी उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त कर प्रतिष्ठित पदों पर आसीन है।

(४) जाति-भेद का विरोध—जन्मगत जाति व्यवस्था प्रचलित हो जाने के कारण हिन्दू जाति हजारों कल्पित जातियों और उपजातियों में विभक्त थी और प्रत्येक का खान-पान, शादी-व्याह पृथक्-पृथक् था। आपस की इस फूट के कारण विधर्मियों की बन आयी थी। ऋषि दयानन्द ने इस वेद-विरुद्ध जन्मगत जाति-व्यवस्था का विरोध किया। उनकी इस आवाज की प्रतिक्रिया में हिन्दुओं में अन्तर्जातीय विवाहों का प्रचलन हुआ और इसके प्रचारार्थ अनेक संस्थाओं ने जन्म लिया।

(५) अछूतोद्धार—दलित वर्ग के साथ तथाकथित उच्चवर्गीय जनों का व्यवहार उचित नहीं था, जिसके कारण बहुसंख्या में दलित बन्धु ईसाई और मुसलमान बन रहे थे। ऋषि दयानन्द ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई और उन्हें खान-पान आदि सहित उन सभी अधिकारों को प्राप्त कराने का निर्देश किया जो उच्च जातियों को प्राप्त हैं। छूतछात की इस संकीर्ण विचारधारा को समाप्त करने में स्वामीजी का महत्वपूर्ण योगदान है।

(३) **राजनैतिक सुधार**—राजनैतिक सुधार की ओर भी ऋषि दयानन्द ने देशवासियों का ध्यान आकर्षित किया। उस समय, जब देश में किसी राजनीतिक संस्था का अस्तित्व तक नहीं था, ऋषि दयानन्द का इस संबंध में क्या दृष्टिकोण था। यह स्पष्ट करने हेतु उनके जगत् प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के कुछ अंश उद्धृत हैं—

'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है।'[1] राजनैतिक स्वतंत्रता के अभिलाषी दयानन्द के विचार द्रष्टव्य हैं—'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'[2]

हिन्दी-प्रेम

पाश्चात्य सभ्यता के परिणामस्वरूप देशवासी अंग्रेजी की बलिवेदी पर मातृभाषा (हिन्दी) को बलिदान करने लगे थे। हिन्दी के समाचार पत्र तथा पुस्तकें पढ़ना पिछड़ापन समझा जाता था। तभी महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को 'आर्यभाषा' की संज्ञा से अभिहित कर राष्ट्रभाषा के गौरवमय पद पर आसीन करने का सफल प्रयत्न किया।

---

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती : सत्यार्थ प्रकाश (अष्टम समुल्लास)
२. वही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उर्दू भाषा की स्पर्द्धा में हिन्दी को प्रचलित करने का श्रेय भी स्वामी दयानन्द को ही है। स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि बनाने का प्रयास किया। गुजराती होते हुए भी ऋषि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों, पत्रों, पुस्तकों तथा वादविवादों में खड़ी बोली गद्य को अपनाया। वे अनिवार्य हिन्दी शिक्षा के प्रबल पक्षपाती थे।

हिन्दी में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली भी महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के प्रभाव से आई। ऐसा अनेक विद्वानों का मत है। हिन्दी का यह प्रबल प्रचारक धार्मिक पक्ष के लिये भी हिन्दी को गौरवमय स्थान प्राप्त कराने का अधिकारी बना। इसीलिये डा० हरविलास शारदा ने इन्हें 'धार्मिक हिन्दी का प्रवर्तक (Originator of theological Hindi) कहा है।'[१]

उनका हिन्दी-प्रेम प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री प्रो० अयोध्यानाथ शर्मा ने एक प्रसंग में उद्धृत किया है—'समाज के किसी हितैषी ने श्री महाराज (महर्षि दयानन्द) से 'सत्यार्थ प्रकाश' का किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करने की आज्ञा चाही और कहा कि इससे आपके सिद्धान्तों का अधिक प्रचार होगा। ऋषि ने उत्तर दिया कि यदि कोई व्यक्ति 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ना चाहता है और वास्तव में उसके पढ़ने के लिये उत्सुक है तो उसे हिन्दी में पढ़ना चाहिये और यदि हिन्दी न जानता हो तो उसे सीख ले।'[२]

महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित 'आर्य समाज' के द्वारा भी हिन्दी का जो प्रचार व प्रसार हुआ उसका उल्लेख डा० रामचन्द्र तिवारी के निम्न वाक्य में मिल जाता है—"प्रान्तीयता, जाति-भेद और अन्य सभी सीमाओं को लांघकर जहां-जहां आर्य समाज की स्थापना हुई, वहां हिन्दी-प्रेम भी पहुंचा। इसका सबसे बड़ा उदाहरण पंजाब है। जैसे ही पंजाब आर्य समाज के प्रभाव में आया, अन्य जातियों के विरोध और सरकार की उपेक्षा के बावजूद भी हिन्दी का पौधा वहां जड़ पकड़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते उसने वृक्ष का रूप ले लिया।'[३]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द आर्य भाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम उद्घोषक थे।

हिन्दी साहित्य और महर्षि दयानन्द

हिन्दी साहित्य के निर्माण, प्रचार व प्रसार में महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज का जो महत्त्वपूर्ण योगदान है, वह सर्वमान्य तथा सर्वविदित तथ्य बन चुका है। साहित्य में आर्यसमाज का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों में लक्षित होता है।

---

१. हरविलास शारदा : दयानन्द कॉमेमोरेशन वोल्यूम, पृष्ठ ५०

२. सं० राकेश रानी : नवयुग प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलियां, पृ० ४७-४८

३. सं० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी साहित्य कोश (भाग २), पृष्ठ २२७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द ने स्वयं अठारह ग्रन्थों[1] का प्रणयन कर हिन्दी गद्य को समृद्ध किया। इनमें से 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रभाव को अनेक साहित्यिक आलोचकों ने स्वीकार किया है। डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने इसका महत्व इन शब्दों में प्रतिपादित किया है--"सत्यार्थ प्रकाश १९वीं शताब्दी के हिन्दी गद्य का सबसे बड़ा ग्रन्थ है। आकार की दृष्टि से तो यह सबसे बड़ा है ही, जितनी लोकप्रियता इस ग्रन्थ को प्राप्त हुयी है, उसकी समकक्षता में हिन्दी गद्य के किसी और ग्रन्थ को अब तक रखा नहीं जा सकता। कोई भारतीय भाषा नहीं, जिसमें हिन्दी के इस गद्य ग्रन्थ के अनुवाद न हुये हों और यूरोप की भी प्रमुख भाषाओं में इसके अनुवाद हुये। यह गौरव हिन्दी गद्य के और किसी ग्रन्थ को नहीं प्राप्त हुआ। इस ग्रन्थ ने हिन्दी के दार्शनिक ग्रन्थों की शैली को जन्म दिया, फलतः हिन्दी खड़ी बोली में धीरे-धीरे समस्त उपनिषदों के भाष्य आरंभ हुये और षड्दर्शनों के अनुवाद हुये।[2]

महर्षि दयानन्द ने परोक्ष रूप से भी प्रमाणित किया है। उनके वादविवाद की शैली से हिन्दी गद्य को तर्कपूर्ण शैली मिली। महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व का प्रभाव साहित्य की विविध विधाओं पर परोक्ष रूप से भी लक्षित होता है। स्वामी दयानन्द की सामाजिक क्रान्ति के प्रभाव से साहित्यकारों का ध्यान इस ओर गया है और तत्कालीन साहित्य की विविध विधाओं में समाज-सुधार की ही भावना प्रबलतम रूप से दृष्टिगत होती है। इस सन्दर्भ में डा० गोविन्द चातक का विचार द्रष्टव्य है—'नाटककार अपने को नाटककार कम और स्वामी दयानन्द सरस्वती अधिक समझने लगा।[3] इस प्रभाव की व्यापकता को डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने इस प्रकार व्यक्त किया है—'साहित्यिकता का ध्यान न रखकर नाटककारों ने आर्य समाज की शास्त्रार्थ वाली शैली को अपनाना शुरू कर दिया। मालूम होता है स्वयं लेखक विविध पात्रों के रूप में आर्य समाज के प्लेटफार्म से बोल रहा है[4]।

इसी प्रकार काव्य में भी नैतिकता, राष्ट्रीयता व समाज-सुधार का स्वर आर्य-समाज की ही देन है। "द्विवेदीयुगीन कवि लेखकों पर आर्यसमाज का प्रभाव बड़े व्यापक तथा गहरे स्तर पर देखा जा सकता है। तत्कालीन कवियों का नैतिकता और राष्ट्रीयता का काव्य कहीं न कहीं आर्यसमाज के मूल संदेश से संपृक्त है और आर्य-समाजी न होने पर भी आचार नीति के क्षेत्र में रूढ़ परम्पराओं को उच्छिन्न करने

---

१. (१) संध्या (२) भागवत खण्डन (३) अद्वैत मत खण्डन (४) गर्दं मतापिनी उपनिषद (५) सत्यार्थ प्रकाश (६) पंच महायज्ञ विधि (७) वेदान्त ध्वान्तनिवारण (८) वेद विरुद्ध मत खण्डन (९) शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारण (१०) आर्याभिविनय (११) संस्कारविधि (१२) आर्योद्देश्य रत्नमाला (१३) भ्रान्ति-निवारण (१४) आत्मचरित्र (१५) संस्कृतवाक्य-प्रबोध (१६) व्यवहार भानु (१७) भ्रमोच्छेदन (१८) गोकरुणानिधि।

२. डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा : हिन्दी गद्य का विकास, पृष्ठ १९

३. डा० गोविन्द चातक : प्रसाद नाट्य और रंगशिल्प, पृष्ठ ७

४. आधुनिक हिन्दी साहित्य, पृष्ठ २२१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का प्रबल आग्रह आर्य समाज की प्रेरणा का फल है'।[१]

महर्षि दयानन्द के कर्मठ व्यक्तित्व से प्रभावित होकर भी अनेकों महाकाव्य व काव्य लिखे गये। उनका व्यक्तित्व अनेकों साहित्यकारों का प्रेरणा-स्रोत बना। हिन्दी साहित्य के प्रतिभावान् आलोचक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी किस प्रकार महर्षि दयानन्द के समक्ष नतमस्तक हैं। उन्हीं के शब्दों में—'मैं स्वामी दयानन्द की विद्वता और उनके कार्यकलाप को अभागे भारत के सौभाग्य का सूचक चिन्ह समझता हूं। उनका चित्र चिरकाल तक मेरे नेत्रों के सामने रहकर मेरी आत्मा को, बल को तथा मेरे बैठने के कमरे को शोभा का दान देता रहता है—

धन्यं च प्राज्ञंमूर्धन्यं दयानन्दं दयाधनम्।
स्वामिनं तमहं वन्दे वारम्वारं च सादरम्॥

उपर्युक्त अनुशीलन के आधार पर निस्सन्देह रूप से यह कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के विभिन्न पक्षों को अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से प्रभावित कर भारत राष्ट्र को गौरवमण्डित किया है। उनके अमित कर्म-आन्दोलन ने ही उन्हें 'भारतभाग्यविधाता' जैसे गौरवमय पद पर प्रतिष्ठित किया है। निष्पक्ष रूप से यह कथन अत्युक्तिपूर्ण न होगा कि यदि महर्षि दयानन्द भारत-भूमि पर अवतरित न होते तो भारत का साहित्यिक व सामाजिक मानचित्र कुछ और ही होता।

१. डा० विजयेन्द्र स्नातक : प्राक्कथन : द्विवेदीयुगीन काव्य पर आर्यसमाज का प्रभाव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

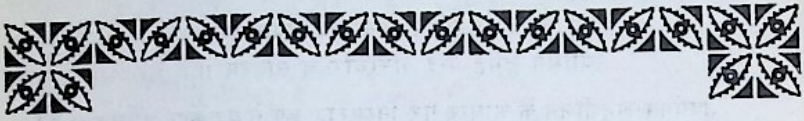

आनन्द सुधासार दया कर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया॥
डाला सुधार-वारि, बढ़ी बेल मेल की।
देखो समाज-फूल फबीले खिला गया॥
खोली कहां न पोल ढके ढोंग ढोल की।
संसार के कुपन्थ मतों को हिला गया॥
'शंकर' दिया बुझाय दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल बदन में बिला गया॥

—नाथूराम शंकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तृतीय उल्लास

धर्मदिवाकरोदय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिया है।"

"ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष-सिंह उनमें से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है जबकि भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है। किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मानकर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उसके अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था। दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन न किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई न हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उन्हीं की थी। वह नवनिर्माण और राष्ट्रीय संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से थे।"

—रोम्यां रीलां (फ्रेंच लेखक)

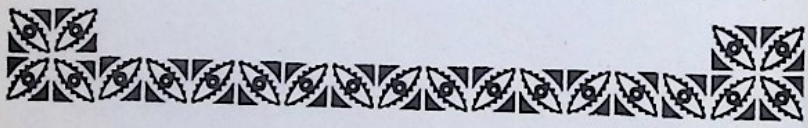

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

○○○

'धर्मदिवाकरोदय'

कवि जब किसी सुधार-भावना से अथवा किसी नैतिक आदर्श को प्रस्तुत करने के लिए महाकाव्य की रचना करता है या धार्मिक भावनाओं के प्रस्तुतीकरण की धारणा रखता है तो ऐसे महाकाव्य धार्मिक कहलाते हैं। महर्षि दयानन्द के जीवन से युक्त प्रस्तुत चरित काव्य 'धर्मदिवाकरोदय' लिखे जाने का भी यही मुख्य उद्देश्य रहा है। ऋषि दयानन्द १९वीं शताब्दी की एक महान् विभूति थे, जिन्होंने तत्कालीन भारत में व्याप्त धार्मिक अन्ध विश्वास, पाखण्ड आदि का निर्भीकतापूर्वक खण्डन किया, मानवता हेतु सत्य मार्ग प्रशस्त करने का स्तुत्य प्रयास किया। आर्यावर्त के इतिहास में महर्षि दयानन्द वह महापुरुष हैं, जिन्होंने वर्तमान युग में छाये अन्धकार में प्रकाश की पहली किरण प्रकाशित की।

'धर्मदिवाकरोदय' दयानन्दरूपी उसी धर्मदिवाकर के जीवन-चरित्र को प्रस्तुत करता है जिसके उदित होते ही अविद्या-तम लोप हो प्रकाश सर्वत्र व्याप्त हो गया। प्रस्तुत चरित काव्य मात्र चरित्र काव्य ही है। चरित काव्यों से हमारा तात्पर्य उन काव्य कृतियों से है जो किसी महापुरुष का चरित अंकित करती हैं, परन्तु जिनमें महाकाव्योचित भव्यता का प्रायः अभाव होता है।

प्रस्तुत प्रबन्ध कृति उस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि रचयिता स्वयं महर्षि दयानन्द से अनेकों बार मिला है, उनके निकट सम्पर्क में रहा है। वह ऋषि के जीवन की कुछ घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी भी है। काव्य में भी इसका उल्लेख हुआ है—

'ग्रन्थकार भी स्वामी संग था, सारा सुना पत्र व्यवहार।'[1]

अन्यत्र भी—

तात्पर्य जो कुछ कहता हूं, निज आंखों से देखा सोय।[2]

'कर्णवास' नामक स्थान का ऋषि दयानन्द के जीवन में अत्यन्त महत्व है। यहां स्वामीजी अनेकों बार वैदिक धर्म प्रचारार्थ पधारे थे, यही वह ऐतिहासिक स्थल है जहां महर्षि ने राव कर्णसिंह का अभिमान चूर्ण किया था। राव द्वारा ऋषि पर आक्रमण हेतु उठाई खड्ग को ऋषि ने एक हाथ से तोड़ दिया था। इस घटना में ऋषि के समर्थन में खड़े हुए ठा० किशनसिंहजी का नाम भी आता है, ये ठा० किशन

---

१. धर्मदिवाकरोदय, द्वादश मयूख, पृष्ठ १६८

२. वही, पृष्ठ १६७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिंह 'धर्मदिवाकरोदय' के प्रणेता कविकुमार ठाकुर शेरसिंह वर्मा के चाचाजी थे। काव्य में भी इस घटना का प्रसगंवश वर्णन हुआ है—

ग्रन्थकार के चचा किशनसिंह ठाढे भये अगाड़ी आय।[१]

इसी कर्णवास निवासी ठा० सीतारामसिंहजी के पुत्र कविकुमार ठा० शेरसिंह जी थे। गुरु टीकारामजी से शिक्षा ग्रहण की, उनसे ही काव्य-प्रणयन की प्रेरणा प्राप्त की और 'धर्मदिवाकरोदय' में अपने आदर्श महर्षि दयानन्द का जीवन प्रस्तुत किया। ग्रन्थ का प्रणयन संवत् १९७० में हुआ, ऋषि के जीवन पर लिखित उपलब्ध चरित काव्यों में यह सर्वप्रथम है। ग्रन्थ का रचना काल स्वयं कवि ने इस प्रकार कहा है—

संवत् नभ (०) ऋषि (७) अंक (९) चन्द्र (१) मास आसोजहिं जानो।
शरद पूर्णिमा तिथि ग्रन्थ पूरा हुआ मानो[२]।

काव्य

सर्गबद्धता—आलोच्य ग्रन्थ सर्गबद्धता की परम्परा में द्वादश सर्गों में विभक्त है, किन्तु लेखक ने इन सर्गों का नामकरण काव्य के नामकरण के आधार पर युक्तिसंगत किया है। धर्मदिवाकर ऋषि का जीवन व घटनायें प्रकाश की मयूख ही तो हैं अतः सर्गों का नाम कवि ने मयूख रखा है। इस प्रकार काव्य द्वादश मयूखों में विभाजित है।

काव्य का प्रारम्भ सृष्टि के नियामक जगन्नियन्ता प्रभुमहिमा के वर्णन से हुआ है, जिसके गुणगान में भक्त कवि भाव-विभोर हो गया है—

विभु अनन्त आनन्द घन ईश्वर सर्वाधार।
अज अचिन्त्य अव्यक्त प्रभु अलख जगत करतार॥

ईश्वर अनामय कृपालु प्रभु है। उसी की है रचना वही तो विभू है।
सच्चिदानन्द आनन्दघन है। बलों का बली निर्धनों का भी धन है।[३]

कवि जब देश की दुर्दशा पर दुःखी होता है, तो वह किसी महान् आदर्श की स्थापना हेतु, जन मानस की जागृति की उद्भावना हेतु किसी महापुरुष का जीवन प्रस्तुत करता है अर्थात् महापुरुष निश्चय ही परिस्थितियों की देन है अथवा मानवजाति का सौभाग्य है। कवि की भावना भी कुछ ऐसी ही है—

छाय रहो चहुं ओर अन्धकार संसार में,
चले पन्थ अति घोर वैदिक मारग छांडि सब।
कीनी आय सहाय ग्लानि धर्म की जब भई,
सिद्ध पुरुष भिजवाय सत्मारग थापन कियो।[४]

---

१. वही, पंचम मयूख, पृष्ठ ६७
४. स्वपरिचय और कर्णवास का इतिहास, पृष्ठ ४
३. धर्मदिवाकरोदय, प्रथम मयूख, पृष्ठ १
२. वही, पृष्ठ २

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युग-युग से भारतवासियों का यही विश्वास चला आ रहा है कि जब-जब धरती पर अधर्म, पाप, असत्य की वृद्धि होती है, तब-तब पृथ्वी पर धर्म, सत्य व पुण्य की स्थापना हेतु महापुरुषों का जन्म होता है। वर्तमान युग में ऋषि दयानन्द भी इसी कार्य में सहयोगी बने। शैव-वैष्णव, वाममार्गी आदि सम्प्रदाय समाज को दूषित कर रहे थे, जैन-बौद्ध आदि वेद-विरुद्ध धर्मों का प्रचार व प्रसार हो रहा था, ईसाई मुस्लिम अपने अपने धर्म के प्रचार में (येन केन प्रकारेण) अति व्यस्त थे, इस प्रकार पावन हिन्दू धर्म की उदात्तता नष्टप्रायः हो गई थी। कवि के मन में एक विचार उत्पन्न हुआ—

उलट पुलट कवि शेर लखि, चिन्ता यह मन में रहै।
प्रबल आत्मा के बिना कौन दुख दारिद दहै।[१]

और इस प्रबल आत्मा के दर्शन कवि करता है युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द में। ऋषिके जीवन की सभी मुख्य घटनाओं का तिथिसम्मत, ऋषि से सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम परिचय सहित इस प्रबन्ध में वर्णन किया गया है। ऋषि के जीवन में आयी बोध-रात्रि का वर्णन ऋषि से सम्बन्धित सभी काव्यों में हुआ है। 'धर्मदिवाकरोदय' में यह वर्णन इस प्रकार हुआ है—

शिवतेरसि पितु संग में पूजा हित जो जाय।
मूषक ओदन चुगत लखि, भ्रम सबरे विनशाय॥[२]

इसी प्रकार बाल्यकाल में ही प्रिय भगिनी एवं स्नेही चाचा की मृत्यु ने दयानन्द के मन में वैराग्य उत्पन्न किया—

कमल दल पर बिन्दु जल अस्थिर सदा रहता है ज्यों।
मनुज जीवन का भी व्यौरा मान लेना ज्यों का त्यों॥[३]

दार्शनिक रहस्य को कितने सरल शब्दों में कवि ने कह दिया है। 'धर्मदिवाकरोदय' कथानक की समाप्ति इस धर्मप्रकाश दयानन्द के अस्त होने पर होती है—

पुष्कर तीरथ के विषय, मावस कार्तिक मास।
भुवमंडल ते अस्त भो, विद्याधर्म प्रकाश।[४]

रस—आलोच्य काव्य की उपलब्धि शांत रस है। योगी, ऋषि, संन्यासी के जीवन में निर्वेद भाव की प्रधानता स्वाभाविक ही है। यदा-कदा प्रसंगवश अन्य रस भी सहायक बने हैं। ऋषि दयानन्द योगी की खोज में सघन बीहड़ वनों में भटक रहे हैं और तभी एक जंगली विकराल रीछ उनकी ओर बढ़ता है। रीछ की विकरालता के वर्णन में कवि भयानक रस का सृजन कर देता है—

---

१. धर्मदिवाकरोदय, प्रथम मयूख, पृष्ठ ४
२. वही, पृष्ठ ५
३. वही, पृष्ठ ५
४. धर्मदिवाकरोदय, द्वादश मयूख, पृष्ठ २१४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्वै पथ खड़ा चिंघाड़त आवे । मुख फाड़े जनु तुरत ही खावे ।[१]

और ऋषि द्वारा इस रीछ पर प्रत्याक्रमण का उत्साह वीर रस की सृष्टि करता है—

इन सोटो ले रोको आगो । रीछ डरो पाछे को भागो ।[२]

इसी प्रकार पिता द्वारा पुत्र के साधुवेश को देख आया क्रोध रौद्र रूप धारण कर लेता है—

धरनि तूंबा मारि । वसन डारे फारि ।
सेत बसन उठाय । चले संघ लिवाय ।।

ऋषि की मृत्यु से उत्पन्न कवि का स्वयं का शोक विह्वल होने का वर्णन कारुणिक दृश्य उत्पन्न करता है—

मुखड़ा फाटि गया था निब का आंसू डाले काले
ढाढस बांधत हो बहुतेरा पड़े कलेजा छाले ।।[३]

नगर, प्रकृति आदि वर्णन—'धर्मदिवाकरोदय' का प्रणयन काल संवत् १९७० अर्थात् सन् १९१३ ई० है । साहित्यिक दृष्टि से यह द्विवेदी युग रहा है, जब कवियों की दृष्टि केवल समाज-सुधार तथा नैतिक आदर्शों की स्थापना पर ही अधिक थी, अतः प्रस्तुत काव्य का कवि भी इस युगीन प्रभाव से असंपृक्त नहीं रह सका है । द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है जब संपूर्ण काव्य में हम प्राकृतिक सौन्दर्य चित्रण का अभाव प्रायः ही पाते हैं । नगरादि के वर्णन में कवि ने हरिद्वार, काशी, मुम्बापुरी आदि का वर्णन किया है । हरिद्वार के वर्णन में कवि साहित्यिक, पौराणिक, ऐतिहासिक व आध्यात्मिक महत्व को वर्णित करने से नहीं चूका है, वर्णन की इतिवृत्तात्मकता भी स्पष्ट लक्षित है—

हरिद्वार को ब्यौरा सुनि लेऊ जो कुछ कहो पुराननु माहि ।
सात पुरी तिन में तीजी है, स्वर्ग द्वार हिन्दू कहे ताहि ।।
लिखो महातम जहां तहां पर कविता करी बड़ी सब ठौर ।
कालिदास कवि मेघदूत में अनुपम छटा कही सिरमौर ।।
एक बात हम सांचि कहि दें प्रकृति बनायो उत्तम थान ।
दोनों दृश्य अपूरब दीखें उत्तर गिर दखिन मैदान ।।
गंगा फारि पहाड़नु निकली धरनी माहिं विराजी आय ।
दोनों ओर पर्वत श्रेणी दुगुनी उपमा दई बनाय ।।
सृष्टि विचित्र जु अद्भुत दीखे कोई मानुष करे विचार ।
ध्यानावस्थित मन हो जाता सूझन लगे जगत करतार ।।[४]

---

१. द्वितीय मयूख, पृष्ठ २५
२. वही, पृष्ठ २५
३. द्वादश मयूख, पृष्ठ २०६
४. चतुर्थ मयूख, पृष्ठ ५१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रत्नाकर के तट पर सुशोभित बम्बई महानगरी की शोभा देखिये—

मुम्बापुरी प्रसिद्ध महानिधि के तट सोहे।
अद्‌भुत अनुपम देखिकन कविजन मोहे।[1]

सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व राजनैतिक परिस्थिति चित्रण—

समाज की दुर्दशा का चित्रण कवि ने प्रस्तुत काव्य में अनेकों स्थानों पर किया है। समाज का ढांचा विकृत हो चुका था, इसीलिये तत्कालीन समस्त साहित्य भी साहित्यिकता से न्यून तथा सुधारवाद से पूर्ण है। कवि सामाजिक प्रथाओं को इस प्रकार चित्रित करता है—

रूपिया लेकर करत ब्याह बेटिन का जो है।
कंचन के समतुल्य जगत में जानो सो है॥
बुरी तरह से खात कमाई दोनों देखे।
पुत्री बेचत दुहू हमन पापी जन पेखे॥
इक पूरा धन लेय, बेंच कर खाय कमावे।[2]

राम व कृष्ण जैसे महापुरुषों के पावन चरित्र को विकृत रूप में प्रस्तुत किये जाने पर तथा उन्हें रसिक छलिया रूप में उपस्थित करने पर भी काव्य में आक्षेप किया गया है—

गोपिन के संग रास की झूठी है सब बात।
व्यर्थ पुराननु म्है लिखो छीन चोरि दधि खात॥
जार, चोर, जाली, छली, भलो कहे नहिं कोय।
ये लक्षण नहिं कृष्ण में कहे सो मूरखि होय॥[3]

तत्कालीन समाज में व्याप्त वेद विरुद्ध, धर्म विरुद्ध धर्मों का खण्डन भी प्रस्तुत काव्य में हुआ है। चक्रांकित मत व वाम मार्ग का खण्डन इस प्रकार वर्णित हुआ है—

जीवित दाग देय चक्रान्ती घोर कर्म बतलाया।
पांच सम्प्रदा वाममार्ग हूं वेद विरुद्ध बताया॥[4]

इसी प्रकार मूर्ति-पूजा, मृतक-श्राद्ध आदि धार्मिक अंध विश्वासों का खण्डन कर कवि समाज का ध्यान आकर्षित करता है। इस खण्डन में युक्ति की सहजता द्रष्टव्य है—

कर्मनु के फल पितृ जन्म लें पक्षिनु माहीं।
हलुवा पूरी खीरि कहो वे कैसे खाहीं॥
उदर भरन को विधि वामन नु भली बनाई।
पुरखन को ले नाम उड़ावत दही मिठाई॥

---

१. वही, दशम मयूख, पृष्ठ १२६
२. धर्मदिवाकरोदय, एकादश मयूख, पृष्ठ १६२
३. वही, पंचम मयूख, पृष्ठ ७१
४. वही, चतुर्थ मयूख, पृष्ठ ३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजाओं की ब्रिटिश सत्ता के प्रति राजभक्ति का भी कवि ने वर्णन किया है—

भारत के राजा महाराजा, अंधी भक्ति के सरदारा ।
ज्ञानवान कदरि न तिनके, ऐसे भारत में महाराजा ।।[१]

जन रक्षक ही भक्षक हों, योगी ही भोगी हो जायें, तो समाज का नष्ट होना अवश्यंभावी है । यही समाज की वास्तविक दशा उस समय थी, जिसको कवि निम्न पदों में निबद्ध करता है—

जिन को धर्म सुधार करन को, सो भारत को रहे डुबाय ।
भगवे बाने को लज्जित करि, अपने वैभव रहे दिखाय ।।
मंत्र कलियुगी साधन करिके भोग योग को दिये मिलाय ।
नाम मात्र के त्यागी दीखें, अपने मतलब रहे बनाय ।।

इस प्रकार कवि अपने भावों को, समाज की, धर्म की, राज्य की दशा को 'धर्मदिवाकरोदय' में प्रस्तुत करता है और उसका चरित नायक दयानन्द इन सभी पाखण्डों के निवारणार्थ अकेला ही दृढ़ता से डटा हुआ है—

वर्ष हजारनु ते फैले हैं पाखण्ड देश के माहीं ।
ह्वै निशंक काटने लागे, हिम्मत बड़ी, तनिक भय नाहीं ।।[२]

और इस प्रकार कवि मानव जाति को संदेश देता है—

सत्य ग्रहण के लिये सदा उद्यत ही रहिये ।
जानि परे जो झूठ त्याग करना ही चाहिये ।।[३]

क्योंकि सत्य की ही विजय होती है । सत्य ही केवल मात्र शाश्वत है—

सत्य अगाड़ी भला झूंठ की कहां चलेगी ।
पातिक करतें मुक्ति कौन को कहां मिलेगी ।।
मारन धर्महि चहै सु वो आपहि मरि जावै ।
रवि प्रकाश को धूलि कौन विधि ताहि दबावै ।।
द्वै और द्वै को योग चारि सब कोई जानै ।
झूठी करै जहान उन्हें जो पांच बखानै ।।[४]

कला पक्ष—कला पक्ष की दृष्टि से आलोच्य काव्य गरिमामय नहीं है। कवि ने सीधी-सादी, सरल, ग्राम्य व्रज व कौरवी का सम्मिलित रूप प्रयोग किया है । तत्कालीन काल साहित्यिक दृष्टि से व्रज और खड़ी बोली के संधिकाल का है । तदनुरूप

---

१. धर्मदिवाकरोदय, चतुर्थ मयूख, पृष्ठ ५५
२. वही, चतुर्थ मयूख, पृष्ठ ५४
३. वही, षष्ठ मयूख, पृष्ठ ६१
४. धर्मदिवाकरोदय, सप्तम मयूख, पृष्ठ ६६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'धर्मदिवाकरोदय' में खड़ी बोली का भी प्रभाव मिलता है। यथा—

आप न चिन्ता करें हमारी। सबका रक्षक जगदाधारी।
भोजन का सत्कार करेंगे। आज्ञा हो सो सीस धरेंगे[1]॥

द्विवेदी युग की खड़ी बोली की गद्यात्मकता प्रस्तुत चरित काव्य में भी पायी जाती है। उदाहरणार्थ—

ऐसे मनुष्य होते कम जग में, जो इन से मिल पावेगा।
जो इनका सनमान करे वह बहुत ही लाभ उठावेगा॥[2]

खड़ी बोली व ब्रज का सम्मिलित प्रयोग द्रष्टव्य है—

दूधपान कर सोय रहे हैं रक्षक पहरों देत रहे हैं।
भोर भये उठि करि असनाना। ध्यान कियो कर दियो पयाना॥[3]

काव्य में ग्राम्य प्रयोग की बहुलता है। यथा—

सभानियम सज्जनता तजिके। लदरपदर उठि चाले भजिके।[4]

तथापि काव्य में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का भी प्रयोग हुआ है—

विभु अनन्त आनन्द घन ईश्वर सर्वाधार।
अज अचिन्त्य अव्यक्त प्रभु अलख जगत् करतार॥[5]

भाषा में उर्दू व अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। भाषा की समृद्धि हेतु मुहावरों को भी कवि ने यदा कदा प्रयुक्त किया है—

१ सांप कलेजा पे लोटा हो, पंडा हाथ मीड़ि पछताय।
२ पौराणिक मत पड़ी खलबली छक्के छूट गये सब केर।
३ भंडा फूट गयो मूरति को दीने पंथ सबै दुरियाय।
४ काला अक्षर भैंस बराबर नहिं भोजते काम सिवाय।
५ नाहिन बांका बाल भया है।
६ कर दो काम तमाम पता नहिं कोई पावें।
७ पानी पानी हुए दृष्टि नीची कर बैठ।

सूक्तियां—महाकाव्य में यत्र तत्र कुछ ऐसे प्रेरणास्पद वाक्य गुंफित कर दिये जाते हैं जो जीवन के शाश्वत तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए मानस हृदय में स्फूर्ति का संचार

---

१. वही, प्रथम मयूख, पृष्ठ २६
२. वही, चतुर्थ मयूख, पृष्ठ ४४
३. वही, वही, पृष्ठ २७
४. वही, प्रथम मयूख, पृष्ठ १
५. वही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते हैं। 'धर्मदिवाकरोदय' में भी ऐसे सुभाषित व सूक्तियाँ मिलती हैं। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं—

१ पुण्यवान की होय सदा महिमा जग माहीं।
२ परि धर्म जाग्रित है सदा सोता नहिं पल भरिकदा।
३ निज करनी को भोग दूसरो नहिं पावेगो।
४ परकारज के हेत संत जन जग में आवे।
५ सदा भविष्यत प्रभु आधीना।
६ मूढ टैव छोडे नहिं न करे नित्य अपकार। सज्जन हू शिक्षा गहै तजै न सत व्यवहार॥
७ सत्यभाषिता बड़ी प्रबल जग में होती है।
झूठों को करि नष्ट प्रतिष्ठा सब खोती है।

समीक्ष्य काव्य में अलंकारों का प्रवेश भी सहज एवं स्वाभाविक रूप से हो गया है। सुमंगपद यमक का व रूपक का उदाहरण द्रष्टव्य है—

बहुत बढ़ो संताप आप जगताप हरेंगे।
नेह मेह बरसाय प्रेम के खेत भरेंगे॥

इसी प्रकार रूपक व विभावना का प्रयोग प्रस्तुत है—

सो सब सोच समुद्र मझारी।
गोता खान लगे बिनु वारि॥

लोकोक्ति को कवि ने इस प्रकार उपस्थित किया है—

बालू मिली होय जो चीनी। ताकूं करी सकै नहिं बीनी।
चिवटी बीन ताहि सब लेवे। यही विचार शास्त्र मधि देवे॥

कवि का लाक्षणिक प्रयोग भी द्रष्टव्य है—

नगर आगरे भई अबाई। शहर सिमटि उठि धायो॥

तिथियों का प्रयोग कवि ने संस्कृत काव्य ग्रन्थों से लिया है। हिन्दी में यह परम्परा 'दृष्टिकूट' संज्ञा से अभिहित की गई है। धर्मदिवाकरोदय में तिथियां अधिकांशतः इसी प्रकार वर्णित की गई हैं। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं—

(१) युगल ऋषि वसु इन्दु ईस्वी मार्च महीना (१८७२)
२ ७ ८ १

(२) ग्रह ऋषि वसु शशि माहिं सातवीं बार पधारे (१८७९)
९ ७ ८ १

(३) गुण वसु सिद्धि इन्दु सन मई महीना जाना (१८८३)
३ ४ ८ १

छन्द की दृष्टि से ग्रन्थ में विविधता है। कारण कवि ने छन्द ज्ञान विशेष रूप से गुरु से ग्रहण किया है। दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, छप्पय, रोला, आल्हा,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रज्ञप्तिका, शिखरणी, कुण्डली, त्रोटक आदि छन्दों का इस काव्य में प्रयोग मिलता है।

इस प्रकार चरित काव्य परम्परा में ऋषि दयानन्द का यह जीवनपरक महाकाव्य अच्छा बन पड़ा है। घटनाओं की सत्यता का कवि स्वयं प्रमाण है। काव्य में इतिवृत्तात्मक तथा वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं सम्बोधन भी कवि ने किया है। यथा—

पाठक चित्र खींच के देखो वा समये को करि अनुमान।

अतः शास्त्रीय परिभाषाओं की कसौटी पर खरा न उतरते हुए भी 'धर्मदिवाकरोदय' आदि—कवि वाल्मीकि के शब्दों में—

किं प्रमाणं मिदे काव्यं का प्रतिष्ठा महात्मनः।

महर्षि दयानन्द समान योगी, महात्मा की प्रतिष्ठा करता है—

—००—

"महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने राष्ट्र की महान् सेवा की है और कर रहा है। स्वतन्त्रता के संग्राम में आर्यसमाजियों का बड़ा हाथ रहा। महर्षि जी का लिखा अमर ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' हिन्दू जाति की रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला है। 'सत्यार्थप्रकाश' की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।"

—स्वातन्त्र्यवीर सावरकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द !

"वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दों का, जो हमारी भावनाओं के अनुसार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। उनके व्यक्तित्व की व्याख्या की जा सकती है कि वह मनुष्य, जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चर्म चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन-तत्त्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे, जिनमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चलाकर पदार्थों को सुदृढ़ व सुडौल बना सकें।"

—योगी अरविन्द घोष

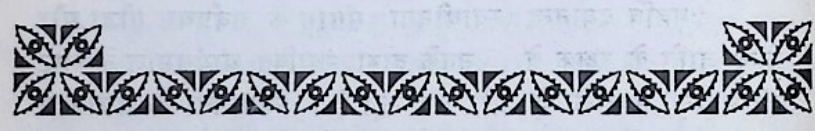

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चतुर्थ उल्लास

दयानन्दायन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

○ ○ ○

दयानन्दायन

समीक्ष्य चरित काव्य ठा० गदाधरसिंह (१८७८-१९३० ई०) द्वारा लिखित है। ठा० गदाधरसिंह का जन्म बनारस के ग्राम प्रमुपुर में हुआ। आचार्य महावीर-प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित पत्रिका 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी की ओर प्रेरित हुए और अन्त तक उसी के प्रचार व प्रसार में लगे रहे।

१९०५-१९२० ई० के मध्य ठा० गदाधरसिंहजी ने गुरुकुल कांगड़ी एवं ऋषि-कुल, हरिद्वार में अध्यापन का कार्य भी किया। महर्षि दयानन्द का प्रभाव उनके जीवन पर अमिट पड़ा, फलस्वरूप उस महापुरुष का जीवन परिचय पद्यबद्ध करने की प्रेरणा हुई। महर्षि के जीवन की सामग्री के संकलन हेतु तथा सत्यता जानने हेतु आप अनेक लोगों से मिले, अनेक स्थानों का भ्रमण किया।

इस ग्रन्थ का प्रणयन १९२७-२९ के मध्य किया गया, किन्तु १९३० ई० में ही लेखक का देहावसान हो जाने के कारण प्रकाशन न हो सका। दयानन्दायन का प्रकाशन लेखक के लघुभ्राता श्री सूबा बहादुरसिंहजी ने १९५५ ई० में लखनऊ से करवाया।

इस प्रबन्ध काव्य का उल्लेख डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त के शोध ग्रन्थ में भी हुआ है, "सबसे प्रसिद्ध और प्रबन्ध काव्य के अभाव की पूर्ति करने वाला ग्रन्थ 'दयानन्दायन' है जो अभी पांच वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ है। यह ३८२ पृष्ठ का महाकाव्य, जो रामायण की भांति दोहा और चौपाइयों में है, अत्यन्त भक्तिपूर्ण है।[1]

प्रस्तुत महाकाव्य पांच सोपानों में विभक्त है।

ईश वन्दना—प्रबन्ध काव्य की परिपाटी का पालन करता हुआ कवि ग्रन्थ का आरम्भ सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् ईश्वर की महिमा के वर्णन से करता है—

सर्व व्यापक ईश की महिमा अमित अपार।
किमि बरनौ मतिमंद मैं, फैली सब संसार॥[2]

नायक—'दयानन्दायन' का नायक अशेष प्रतिभा सम्पन्न, सकल आध्यात्मिक गुणों से समन्वित महापुरुष दयानन्द है जो धीरोदात्त कोटि में रखे जाने योग्य है। ऋषि दयानन्द ब्राह्मणकुलोद्भव है।

कथानक—ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रकाशन ही इस चरित काव्य

---

१. डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त : हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन (१९६१ में प्रकाशित)

२. प्रथम सोपान, पृष्ठ १

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का उद्देश्य है। दयानन्द के जन्म से लेकर मृत्यु तक की सभी प्रमुख घटनाओं का वर्णन कवि ने इस काव्य में किया है। मौरवी में पं० अम्बाशंकरजी के यहां बालक मूलशंकर का जन्म हुआ। माता-पिता इस बालक के जन्म से आनन्दित हो उठे। बालक को किसी की नजर न लगे, मातु सुलभ इस चिन्ता का कवि ने सुन्दर वर्णन किया है—

देत मातु तृण तोरि, सुत छवि निरखति नारी सब।[१]

बाल्यकाल के पश्चात् आती है शिवरात्रि की वह घटना, जिसने दयानन्द के भविष्य को दिशा निश्चित की। शिवरात्रि की रात है और बालक मूलशंकर अपने पौराणिक पिता के साथ उपवास रखे अर्द्धरात्रि तक शिव मंदिर में जाग रहा है। सभी जन सो गये हैं, तभी एक चूहे को शिवलिंग पर चढ़ी सामग्री को खाते देख उनके बाल-सुलभ जिज्ञासु मन में शंका उठी --

जो नहिं आपनि करत समिक्षा। तासो कस हम पाउब दिक्षा।
जो मूषक सिर सकै न टारी। सो किमि करहि मोरि रखवारी।[२]

और इस जिज्ञासा में बालक को वह सत्य ज्ञान का आलोक प्राप्त हुआ, जिसे पाकर मानवता धन्य हो उठी। उसी समय मूलशंकर के मन में स्पष्ट हो गया—

इत्ति प्रतिमा महे शंभू नहिं, रक्षक सकल जहान।
सत्य ज्योति प्रगटत भई, पावन हृदय महान॥[३]

और बालक मूलशंकर ने गृह त्याग दिया। जीवन भर सत्य की खोज में भटकते फिरे और जो प्राप्त किया, वह संसार को प्रदान किया। अन्त में—

वैदिक पथ दरसाय शुभ, भयो ईश महं लीन।
परम ज्योति महं मिलि भयो, सदा अचल सुप्रवीन॥[४]

महर्षि दयानन्द की मृत्यु पर हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध व्यक्तित्व श्री बालकृष्ण भट्ट की श्रद्धांजलि के विषय में कवि के विचार द्रष्टव्य हैं—

बालकृष्ण भट्ट न्याययुत, तोरि लेखनी दीन्हे।
बरन महं श्री स्वामि गुण, तनिक कसर नहिं कीन्हे॥[५]

रस—ऋषि दयानन्द के जीवन-चरित्र के वर्णन के अनुरूप यह महाकाव्य अंगीरूप में शांत रस की उपलब्धि कराता है।

श्री स्वामी सोहतमे कैसे। धरा शरीर शांत रस जैसे।

परन्तु अन्य रस भी अंग रूप में प्रसंगानुकूल व्यक्त हुए हैं। पुत्र वियोग में दुःखी माता की कृशता का चित्र व विलाप अत्यन्त करुण बन पड़ा है—

दूतन की वाणी सुनत मात बहुत बिलखाय।
सूखी मास अस्थिहि रही, दशा निरखि नहीं जायं॥[६]

---

१. वही, पृष्ठ २
२. प्रथम सोपान, पृष्ठ ५
३. वही, पृष्ठ ५
४. वही, पंचम सोपान, पृष्ठ ३७८
५. वही, पृष्ठ ३८२
६. वही, प्रथम सोपान, पृष्ठ १४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीभत्स रस का वर्णन भी स्थिति अनुकूल हुआ है—

पण्डित जन कहँ बैठे देखा। आमिष अस्थि सहित अवरेखा।
मुने हुये सिर करते भोगा। विद्वद जन सब पंडित लोगा॥
हाड़ मांस कर ढेर सुहावा। पंडित जन रुचि पाक बनावा॥[1]

महर्षि दयानन्द की निर्भीकता जन मानस के मन में विस्मय का भाव जागृत करती है—

ऋषि गति देखत सब भए, चित्र लिखित जिमि मूक।[2]

सौन्दर्य वर्णन—महाकाव्य की सफलता उसमें पाये जाने वाले वर्णनों पर निर्भर करती है। आलोच्य महाकाव्य के विभिन्न सोपानों में कवि द्वारा टंकारा, हरिद्वार, काशी, मथुरा, आगरा, वृन्दावन, जयपुर, अजमेर, दिल्ली तथा नासिक आदि नगरों का सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है। हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ हरिद्वार की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन द्रष्टव्य है—

शैल शिवालक दाहिने, बाम हिमाचल सोह।
मध्य दुहुन गंगा बहत, नाशत दर्शक मोह॥[3]

विद्या की नगरी काशी-नगरी का परिचय उसकी बाह्य एवं आन्तरिक विशेषताओं सहित कवि इस प्रकार देता है—

काशी नगरी जगत ते न्यारी। शास्त्र लोक अस करत पुकारी।
विद्या आलय पुरी सुहावन। दक्षिण दिशि गंग बह पावन॥
निर्मल स्वच्छ बहत जलधारा। जहं विद्वद्जन केर अखारा।
विद्या आकर जगत् में भारी। शोभा बरनिकि पावै पारी॥[4]

भारत की राजधानी दिल्ली का कवि इन शब्दों में वर्णन करता है—

इन्द्रप्रस्थ धाम विख्याता। रवि तनया तट परम सुहाता।
शोभा नगर अपूरव सोहै। जिहि विलोकि सबकर मन मोहै।
श्याम नीर अनुपम छवि छाई। बारि वीचि कछु बरनि न जाई।
चौक चांदनी की छवि न्यारी। मुदित होत मन जाहि निहारी[5]॥

नासिक नगर के वर्णन में कवि पाठक को वहां की ऐतिहासिकता से भी परिचित करा देता है—

जहं कुछ काल बसे मति धीरा। अनुज जानकी संग रघुवीरा।
राम वियोग सीय जहं भयऊ। दयानन्द स्वामी तहं गयऊ॥[6]

---

१. दयानन्दायन, प्रथम सोपान, पृष्ठ २१
२. वही, चतुर्थ सोपान, पृष्ठ २८४
३. वही, प्रथम सोपान, पृष्ठ २०
४. वही, द्वितीय सोपान, पृष्ठ ७५
५. दयानन्दायन, प्रथम सोपान' पृ० ७६
६. वही, तृतीय सोपान, पृष्ठ २२१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकृति चित्रण—यद्यपि कवि का उद्देश्य प्रकृति वर्णन करना नहीं है तथापि जहां भी मार्ग में प्रकृति के सौन्दर्य ने कवि का मन आकर्षित किया है, वहां कवि ने उसे अपनी लेखनी से निबद्ध किया है। यथा—

सुन्दर मग तरु कानन शोभा। मधुकर गूंज करैं मधु लोभा।
बाग रसाल विविध मग सोहा। कोकिल रव सुंदर मन मोहा॥
नील सघन पल्लव घनश्यामा। घन मिसु निरखि मयूर भुलाना।
और—आम शोभित चहुं ओरा। कूजित पिक नाचत बहु मोरा॥[१]

ऋषि दयानन्द के भारत-भ्रमण में कवि को षड् ऋतु वर्णन का अवसर भी सहज सुलभ हो गया है। हेमन्त के आने पर वसन्त ऋतु की शोभा अत्याकर्षक है—

विगत हेमन्त वसंत सुहाई। विकसे पुष्प महा सुखदाई।
वन उपवन सब एकहि लेखा। चकित भये दर्शक जिन देखा॥[२]

तत्पश्चात आती है ग्रीष्म ऋतु—

षोडस मई ग्रीष्म ऋतु आवा। खृष्टी संवत् परम सुहावा।

और ग्रीष्म के पश्चात वर्षा का आरम्भ मानव व प्रकृति दोनों को किस प्रकार आनन्दमग्न कर देता है—

सावन मास परम सुखदाई। हरित भूमि शोभित मनभाई॥
गरजत घन नाचत बहुमोरा। विधि विहंग करत कल शोरा॥
ढाहत कूल सरित बहु भारी। मीनादिक जल जन्तु सुखारी॥[३]

वर्षा पश्चात आयी सर्वकाम्य व सर्वप्रिय शरद ऋतु—

वर्षा गई शरद ऋतु आई। सब कहें लागत परम सुहाई।[४]

शिशिर ऋतु की शीत का वर्णन कवि इस प्रकार करता है—

माघ रैन बहु पड़त तुषारा। नग्न शरीर रहत ऋषि सारा॥[५]

सामाजिक स्थिति का चित्रण—महाकाव्य में मानव संस्कृति का व्यापक चित्रण होना चाहिये। इस सन्दर्भ में कवि ने तत्कालीन समाज की विभिन्न प्रथाओं के साथ उसमें व्याप्त कुरीतियों की ओर ही अधिक ध्यान दिया है। समाज में अज्ञान, अन्ध विश्वास चहुंदिश छाया था। द्वितीय सोपान में अजमेर के कमिश्नर को राजा प्रजा का संबंध पिता पुत्र का बतलाते हुये ऋषि सामाजिक ह्रास की इस स्थिति का वर्णन निम्न शब्दों में करते हैं—

अंधकार एहि देश महं, फैलि रह्यो चहुं ओर।
मतवादी लूटत फिरत तव पुत्रन्ह वरजोर॥[६]

---

१. वही, द्वितीय सोपान, पृष्ठ १४२
२. वही, प्रथम सोपान, पृष्ठ २६
३. दयानन्दायन, द्वितीय सोपान, पृष्ठ ११३
४. वही, तृतीय सोपान, पृष्ठ २२०
५. वही, पृष्ठ १७८
६. वही, द्वितीय सोपान, पृष्ठ ७०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द जीवन भर इस अज्ञान अंधकार से संघर्ष करते रहे, उन्होंने समाज की पतितावस्था का कारण ढूंढ़ा, बाल-विवाह, जाति-भेद आदि को इसका मूल कारण बताया—

बाल विवाह हानि दिखलाई। जाति भेद पुनि कहि समुझाई ॥[1]

इसी प्रकार धर्म में मूर्ति-पूजा, मृतक-श्राद्ध आदि का विधान हिन्दुओं में अविद्या का कारण माना, उन्होंने समाज को दिशा दी—

मूर्ति पूजा अहे भल नाहीं। अहै लिखा सद्ग्रन्थन माहीं ॥
ईश्वर ध्यान हृदय महं धारहु। निराकार व्यापक जग मानहु ॥[2]

अशिक्षा के फलस्वरूप नारी किस प्रकार दीन हीन अवस्था को प्राप्त हो गयी थी—

कर्म धर्म शुभ दीन्हं बिसारी। सति धर्म तजि होहिं दुखारी।[3]

धार्मिक स्थिति—ऋषि दयानन्द के समय भारत में अनेक धर्मों, विधर्मों का साम्राज्य था। सभी धर्मों में भ्रष्टाचार, अनाचार, विकृति का प्रवेश हो चुका था। एक ओर हिन्दू धर्म मत-मतान्तरों में बंटा हुआ था तो दूसरी ओर ईसा के प्रचारक अपने धर्म के प्रचार में व्यस्त थे, हिन्दू धर्म में पड़ी फूट इस कार्य में सहायक हो रही थी वल्लभ मत की दशा इस प्रकार की थी—

तिम महं वल्लभ मत विख्याता। भ्रष्टाचरण रहा प्रख्याता ॥
दुष्टाचरण अनेक प्रकारा। करत सदा निन्दित व्यवहारा ॥[4]

इसी प्रकार गोरखपंथी भी धर्म विपरीत हो गये थे—

योग कर्म के शत्रु हैं, मद्य मांस महं लीना।
मति फेरन महं दक्ष बहु, योग कर्म ते हीना ॥[5]

वैष्णव और शैव धर्म का परस्पर विद्वेष भी द्रष्टव्य है—

दोष वैष्णव मत मन लाई। चहत शैव निज मत प्रगटाई।
अरु वैष्णव मन यह ठहराई। शैवों की कहुं होय हंसाई ॥[6]

साधु-समाज सदाचरण से अति दूर था—

सत्य साधुता धर्म की उज्ज्वलता से दूर।
मन इच्छित काजहिं करन, महामंद अति दूर ॥[7]

विदेशी किस प्रकार बाल्यकाल से ही हिन्दू धर्म के प्रति घृणा का भाव भर रहे थे

---

१. वही, तृतीय सोपान, पृष्ट १९७
२. दयानन्दायन, प्रथम सोपान, पृष्ठ ५७
३. वही, चतुर्थ सोपान, पृष्ठ २५५
४. वही, तृतीय सोपान, पृष्ठ २२४
५. वही, द्वितीय सोपान, पृष्ठ ६१
६. वही, चतुर्थ सोपान, पृष्ठ २१३
७. दयानन्दायन, द्वितीय सोपान, पृष्ठ ६०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म से ईसाई धर्म में परिवर्तित एक नवयुवक के शब्दों में इस प्रकार वर्णित हुआ है—

बालकपन की बात सुनाता। पढ़न हेत शाला जब जाता ॥
विज्ञ पादरी करत प्रचारा। हिन्दू मत जो अहई हमारा ॥
तिहि पर बहु आक्षेप सुनाते। भाषण करि मम हृदय दुखाते ॥[१]

इस प्रकार पाखण्ड के इस विकट जाल को काटने का बीड़ा उठाया—चरित नायक सच्चे साधु दयानन्द ने—

विस्तृत है बहु काल ते पाखण्डिन की जाल।
तिहि सन्मुख अवसर खड़े सदा सुखदश्रुतिपाल ॥[२]

राजनैतिक स्थिति—क्षात्र रक्त शीतल हो चुका था। वह अपना क्षत्रित्व भूल भोग विलास में मग्न थे—यही देश की दुर्दशा का कारण बना। जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तो देश स्वयंमेव ही समाप्त हो जायेगा। ऋषि दयानन्द के शब्दों में कवि इस तथ्य को प्रकाशित करता है—

भई दशा जो आज हमारी। दीन हीन सब देश दुखारी ॥
सो कबहुं नहिं होती भाई। जो नरेश करते चतुराई ॥
मम राजन अस दशा न होती। तो कस भारत खोता मोती ॥
देश अधोगति कारण अहई। पुनि राजा रईस गति कहई ॥
जो बहु द्रव्य प्रजासन लेते। निशि दिन नाचादि कमहं देते ॥[३]

और इस सबका कारण है भारत की प्राचीन आर्य वैदिक संस्कृति का विस्मरण। विदेशी जिस वैदिक संस्कृति के अन्वेषण में रत हैं हम उसी को भुला चले हैं—

अन्य देशवासी नर नारी। अहै सुयोग्य सदा सुविचारी ॥
करत निरन्तर खोज विचारा। पावन धर्म जु अहै हमारा ॥
जिहि मत खोजहि आय विदेशी। तामहं हम सब अज्ञ विशेषी ॥[४]

उद्देश्य—प्रस्तुत महाकाव्य के वर्णन विशेष द्वारा कवि का मुख्य लक्ष्य रहा है—

आपन धर्म इहै हम जाना। सब कहं सत्य पंथ पर लाना'।[५]

कवि का यह उद्देश्य पूर्ण हुआ—सत्यार्थ के शोधी ऋषि दयानन्द के जीवन-चरित्र को प्रस्तुत करने से। ऋषि के उदय होते ही जिस प्रकार अविद्या अन्धकार का विनाश हुआ, उस प्रकार ऋषि-जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर मानव जाति समुन्नत हो यही कवि का उद्देश्य हैं।

कला पक्ष—कलागत सौन्दर्य यद्यपि कवि को अभीष्ट नहीं है तथापि सहज सरल अभि-

---

१. वही, तृतीय सोपाम, पृष्ठ १८७
२. वही, द्वितीय सोपान, पृष्ठ ८६
३. वही, चतुर्थ सोपान, पृष्ठ २५७
४. दयानन्दायन, पंचम सोपान, पृष्ठ ३०३
५. वही, द्वितीय सोपान, पृष्ठ १२६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्ति में स्वतः ही समाविष्ट हो गया है। भाषा की दृष्टि से काव्य में ब्रज व अवधी का मिश्रित प्रभाव है। भाषा के विषय में कवि कट्टर नहीं है। भावानुकूल, पात्रानुकूल, वातावरणानुकूल भाषा का कवि ने प्रयोग किया है। इस संदर्भ में अंग्रेजी भाषा युक्त पदावली का प्रयोग द्रष्टव्य हैं—

नार्मल ट्रेनिंग आदि सुहाई।
कालेज स्कूल अनेक बनाई॥

भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, उर्दू तथा आंग्ल शब्दों का प्रयोग हुआ है।

तत्सम—मति, पुनीत, यामिनी, क्षुब्ध, रत्नाकर, धूम्रयान, उपदा, लाष्टिका, अभिराम, गवल, शुचि, निर्वेद छवि, ललित, देववाणि आदि।

तद्भव—परबन्ध, बिलभ, छामि, अगसर, मुरछा, बर्ताव, ग्रीष्म, दुरभागी, काज, छन, बसन, सुभाव, दखिनी, पाती, निदेशू, परकाश, सर्वस, छनिक, परचार आदि।

देशज—खोरि, जलपत, छूछहु, छाजे ठावं, खंभार, जेंवत, नेवता, नाई, ढिग आदि।

अंग्रेजी—कोंसिल, कलक्टर, जज, वर्कशाप, सिविल सर्जन, प्रेस, गवर्नमेन्ट, प्रिन्सिपल, ट्रेनिंग आदि।

घटनाओं के वर्णन की इतिवृत्तात्मकता के अतिरिक्त काव्य में आलंकारिक सौन्दर्य भी देखने को मिलता है। निम्न पंक्तियों में उपमा, रूपक, व्यतिरेक, उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण की छटा एक साथ दिखाई देती है—

निज उपधा सोहे ऋषि कैसे। सोहत धर्म धरि तनु जैसे।
भाल विशाल वरनि नहिं जाई। मुख सरोज सुन्दर छवि छाई॥
बेखत अधरन अति अरुणाई। बिम्बाफल बन्धूक लजाई॥
बोलत बैन दशन छवि छाई। भादो विज्जु छय जनु छाई॥

अनुप्रास अलंकार का भी कहीं-कहीं सहज रूप में प्रयोग हुआ है—

नित नव नूतन शिक्षा लहहिं। हृदय चक्षु कहं निर्मल करहीं।
बेधि सकल तनु जर्जर कीह्ना। आजु दैव दारुण दुख दीह्ना॥

उपमा और उत्प्रेक्षा का चित्रात्मक सौन्दर्य भी दर्शनीय है—

ऋषि कर कंपित भातन ऐसा। क्षुब्ध होत रत्नाकर जैसा॥
स्वच्छ शरीर भयो रतनारा। जनु धवल गिरि मेरु पनारा॥

दृष्टान्त में कवि सुष्ठु उदाहरण प्रस्तुत करता है—

विषय भोग इन कहं हैं ऐसा। कपिलहि आमिष भोजन जैसा॥

प्रस्तुत महाकाव्य में कवि ने जीवन का सार सूक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया है—

१ श्रेष्ठ जनन की इहै निसानी। पर गुण सुनि हर्षहिं सुखमानी॥
२ जो जस कर्म करै जग माहीं। सो फल पावहिं संशय नाहीं॥
३ बुआ जो बीज तइस फल चाखा।
४ धन्य-धन्य नर ते जग माहीं। पर दुःख देख दुखित व्है जाहीं॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भावाभिव्यक्ति में मुहावरों का प्रयोग भी कवि ने किया है—

१ एहि थल थिरे मृत्यु ह्वै जाई। काल गाल महं जाब समाई ॥

२ मनहु शिला पर शायक मारी।

ग्राम्य जगत् में प्रचलित लोकोक्तियों का भी कवि ने प्रसंगानुकूल वर्णन किया है—

१ अधिक पढ़े ते बुधि नसि जाई।

अथवा

२ बहुत पढ़े तेहि ब्याह न भावा।

सामान्यतया लोक में प्रचलित उक्तियों को भी कवि ने स्थान दिया है—

सिंहद्वार किमि शशक बसाई। निरखि बाज जिमि लवा लुकाई ॥

तिथियों के वर्णन में कवि ने संस्कृत परम्परा को ग्रहण किया है—

१ दिशि ग्रह ऊपर द्वादश ग्रंता। फर्रूखाबादगये भगवन्ता (१९१२ सं०)
१० ९ १२

२ पाख वेद कहें जोग जु करिये। तापर रत्न सिन्धु कहं धरिये (१९१४ सं०)
१५+४ १४

३ दिवस ब्रह्म गृह ब्रह्म सु आवा। स्वामी श्री दण्डी कहं पावा (१९१७)
७ १ ९ १

छन्द विधान—छन्द विधान की दृष्टि से कवि ने 'रामचरितमानस' एवं पद्मावत महाकाव्यों की परम्परा में संपूर्ण महाकाव्य सोरठा, दोहा, चौपाई शैली में लिखा है। कुण्डली का भी प्रयोग मात्र एक स्थान पर किया है।

वस्तुतः दयानन्दायन वर्णनात्मक शैली में लिखा गया ऐतिहासिक महाकाव्य है। यत्र-तत्र पुनरुक्ति, ग्राम्यत्व आदि दोषों के होते हुए भी गुणोत्कर्ष के कारण अपना विशेष स्थान रखता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंचम उल्लास

बोध-रात्रि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

○ ○ ○

बोध-रात्रि

प्रस्तुत महाकाव्य एक बौद्ध-धर्मावलम्बी श्री विज्ञान मार्तण्ड वात्स्यायन की लेखनी-प्रसूत है। धार्मिक संकीर्णता से परे कवि महर्षि दयानन्द के जीवन को आधार-भूमि मानकर चला है और उसकी रचनात्मिकता शक्ति ने इसे केवल चरित काव्य ही नहीं रहने दिया, अपितु शुद्ध साहित्यिक की कोटि प्रदान की है। इस महाकाव्य का प्रथम प्रकाशन मांडले (बर्मा) में सन् १९३९ में हुआ था तथा द्वितीय प्रकाशन १९७२ ई० में दयानन्द संस्थान नई दिल्ली से हुआ है। परतन्त्र भारत में लिखा गया "बोध-रात्रि" महाकाव्य राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं क्रांति की चिन्गारी सुलगाने का अमोघ अस्त्र है, सोये हुए भारत को जगाना ही कवि को अभिप्रेत रहा है, कवि की ओजमयी वाणी मुर्दों में भी प्राणों का संचार करने में समर्थ है; सम्भवतः इसी कारण यह पुस्तक वर्षों तक ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित रही थी।

पाश्चात्य आलोचक कौलरिज के अनुसार कवि को एक विशिष्ट कल्पना प्राप्त होती है, जिस कारण वह प्रकृति प्रदत्त अपूर्ण प्रत्ययों को ग्रहण कर उसे पूर्णता प्रदान करता है। समीक्ष्य महाकाव्य का प्रणेता भी ऋषि-जीवन के वर्णन में इसी विशिष्ट कल्पना के माध्यम से उन स्थलों पर पहुंचा है, जहां पहुंचना किसी कवि की ही सामर्थ्य है।

चरित-काव्य की भांति 'बोध-रात्रि' वर्णनात्मक नहीं है, ऋषि-जीवन की घटनाओं का वर्णन भी यथाक्रम तिथियों सहित वर्णित नहीं है, अपितु कवि को जहां अवसर मिला है, वहीं पूर्व दीप्ति शैली (Flash-back) का प्रयोग कर घटनाओं को सम्मुख उपस्थित किया है। महर्षि दयानन्द कवि को उसकी भावानुकूलता सर्वाधिक उपयुक्त नायक प्रतीत हुए, अतः उनके जीवन की कर्मठता, जागरूकता के माध्यम से कवि सोई हुई भारत की शक्ति को जाग्रत करने का प्रयत्न करता है।

छायावादी युग में प्रणीत समीक्ष्य महाकाव्य समस्त छायावादी विशेषताओं से युक्त है। अतः हमने 'बोध-रात्रि' को छायावादी महाकाव्य मानकर ही इसकी समीक्षा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है—आश्चर्य का विषय है कि ऋषि दयानन्द का जीवन आधार मानते हुए भी कवि ने श्रृंगार रस का भी वर्णन कर दिया है। वस्तुतः यह महाकाव्य सहृदय पाठक को रसमग्न कर देने में पूर्ण सफल है।

प्रकृति-चित्रण

मानव के आन्तरिक सौन्दर्य का उद्‌घाटन छायावाद में प्रकृति के माध्यम से हुआ है। छायावादी कवि ने प्रकृति के नाना रूप रंगों में अपनी आत्मा को खोज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निकाला है। छायावादी प्रकृति सौन्दर्य चित्रण की कुछ अपनी विशेषताएं हैं जो प्रस्तुत महाकाव्य में भी मिलती हैं—

(१) **चेतनता का आरोप**—प्रकृति को चेतन रूप में प्रत्यक्ष करना छायावाद की प्रमुख विशेषता है अथवा प्रकृति का मानवीकरण कर देना, यथा—

पल्लव हस्त हिलाकर मानो कुछ निषेध सा करते थे,
पूंछ हिलाकर मानो उसकी हां में हां मृग भरते थे।[1]

(२) **विस्मय की प्रवृत्ति**—प्रकृति की नियमानुसार कार्य प्रणाली से कवि विस्मित हो उठता है और वह उस क्रिया व्यापार के पीछे किसी अनन्त सत्ता को अनुभव करता है—

कुलाय की चंचल बीचियों में,
कैवर्त के कौशल से चलाना।
है सारसों को किसने सिखाया,
देखा तुम्हीं ने शतवार होगा।[2]

(३) छायावादी प्रकृति सौन्दर्य की तीसरी विशेषता यह है कि कवि मानव-जीवन की समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से करता है। 'बोध-रात्रि' महाकाव्य में अनेकों स्थलों पर प्रकृति कवि की वाणी को मूर्तता प्रदान करती है। उदाहरणार्थ—

जल धरणी से गिरकर होता कलुष और शुचिता से हीन।
ज्यों पश्चिम से मिलकर भारत आज हुआ है दुर्विध-दीन॥[3]

(३) **करुणा के स्वर**—मानव की वेदना में प्रकृति मानो अभिन्न सहचर का कार्य करती है। ऋषि दयानन्द के अन्तिम समय में प्रकृति की करुणावस्था का चित्र कवि की लेखनी से इस प्रकार प्रस्तुत हुआ है—कवि कल्पना करता है—

क्या ऋषि के सन्निकट विरह से थे सरसिज बेहोश,
सुधा सरस स्वर तान छेड़कर हुए मृग खामोश।
नदियों में तरंग रिंगण से चंचल था शैवाल,
उलझे हुए पड़े थे मानो खिन्न प्रकृति के बाल॥[4]

(४) प्रकृति को नारी रूप में देखना भी छायावादी कवियों की विशेषता है। कवि ने यह आयासपूर्वक नहीं किया है, सम्भवतः युग-प्रभाव से बच नहीं सका है—कल्पना उसकी स्वयं की है कहीं से ली नहीं गयी है—उषा में वधू की कल्पना द्रष्टव्य है—

---

१. बोध रात्रि, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ २६
२. वही, नवम सर्ग, पृष्ठ १३५
३. वही, छठा सर्ग, पृष्ठ ६८
४ वही, एकादश सर्ग, पृष्ठ १३७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभिनव उषा के योग से नीरूप नभ है लाल क्या,
सिन्दूर से भूषित हुआ प्राचीन वधु का भाल क्या।[1]

नारी-सौन्दर्य के अतिरिक्त पुरुष-सौन्दर्य का चित्रण भी छायावादी कवियों की विशेषता रही है। 'बोध-रात्रि' महाकाव्य में भी महर्षि दयानन्द का शारीरिक सौष्ठव द्रष्टव्य है—

उनके मनोहर जिस्म में—थे रोम चमकीले खड़े,
मानो सुवर्ण स्तम्भ में अनमोल हीरे थे जड़े।[2]

मानवतावादी दृष्टिकोण

छायावादी काव्य में यह मानवतावाद अनेक रूपों में व्यक्त हुआ, यथा नारी के प्रति उच्च भावना। 'बोध-रात्रि' महाकाव्य में नारी के प्रति उच्च भावनाओं का परिचय मिलता है—

वह जोधपुर की स्वामिनी, निज धर्म की अनुगामिनी,
करुणा तथा माधुर्य गुण की मूर्ति थी।
संसार का वह सार थी, महनीय और उदार थी,
सौन्दर्य और पवित्रता की मूर्ति थी।[3]

वहीं, उच्चता के आसन से पतित नारियों को हेय भी ठहराया है—

वार नारियों में किन्तु प्रेम कहां इतना?
पुष्प का श्मशान के महत्व ही है कितना?[4]

मानव को मानव के रूप में देख, शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति का स्वर प्रगतिवादी चेतना को स्पष्ट करता है—

शैत्य धूप वर्षा का सहकर जर्जरकाय विषम आघात,
खेतों में किसान बेचारे, खून सुखाते हैं दिन रात।

जीवन के बदलते मूल्यों की अभिव्यक्ति—छायावादी कवियों में प्राचीन जीवन-मानों के प्रति विद्रोह की भावना है। इन कवियों ने जन-कल्याण और विश्व-मंगल की भावना को प्रश्रय दिया और इसलिये प्राचीन जीवन के मूल्यों की कमी उनके दृष्टि-पथ में आयी। समीक्ष्य महाकाव्य में स्थान-स्थान पर प्राचीन रूढ़ियों के प्रति विद्रोह प्रकट हुआ है—

कूप पिता ने खुदवाया था पानी उसमें निकला क्षार,
जो उसको ही पीकर रहते जीवन है बस उनका भार।[5]

रहस्य भावना—कुछ सुधी आलोचक रहस्यवाद को छायावाद का प्राण मानते हैं। महादेवीजी के शब्दों में—"विश्व के अथवा प्रकृति के सभी उपकरणों में चेतना

---

१. बोध रात्रि, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ४८
२. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ५२
३. वही, दशम सर्ग, पृष्ठ ११८
४. वही, पृष्ठ ८८
५. वही, छठा सर्ग, पृष्ठ ७५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का आरोप छायावाद की पहली सीढ़ी है तो किसी असीम के प्रति अनुरागजनित आत्म-विसर्जन का भाव अथवा रहस्यवाद छायावाद की दूसरी सीढ़ी है।" 'बोध-रात्रि' के प्रणेता ने उस असीम के प्रति अपना अनुराग इन शब्दों में व्यक्त किया है—

बिना कान वह सुन लेता है कहता है पर वेद,
लोचन बिना देख सकता है उच्च नीच का भेद।
चरण रहित भी चलता है वह धन्य कल्पना धन्य,
कहीं किसी ने देखी है क्या ऐसी चिड़िया अन्य॥

राष्ट्रीयता का स्वर (देश-प्रेम)—राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति का 'बोध-रात्रि' महाकाव्य सफल उदाहरण है। देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर इस महाकाव्य में भरी हुई है। कवि की कामना है कि जिस प्रकार 'बोध-रात्रि' अर्थात् शिव-रात्रि महर्षि दयानन्द के जीवन की दिशा बदलने का कारण बनी थी उसी प्रकार भारतीयों के जीवन में भी बोध-रात्रि आये और देश ब्रिटिश सत्ता की परतंत्रता से मुक्त हो। उसका विश्वास है कि भारत अब अधिक दिन तक गुलाम नहीं रह सकता। इस देश-भक्त कवि का विश्वास है—

नहीं रुकेगी हवा किसी से शीत न होगा रवि का धाम,
दब न सकेगी आग तूल से अब न रहेगा हिन्द गुलाम।[1]

कवि की इस देशभक्ति में सहायक बना महर्षि दयानन्द का क्रांतिकारी चरित्र। महर्षि दयानन्द के भावों को कवि ने किस प्रकार व्यक्त किया वह स्तुत्य है—

कितना भी मीठा हो चाहे, सुंदर शांत विदेशी राज्य,
वह तो भी धर्मार्थ विरोधी मधु मिश्रित घृत सम त्याज्य।[2]

पराधीनता का दुःख कवि को शोकविह्वल किये हुये है—

भूतल अतुल कागज पड़ा स्याही अंधेरे की बनी,
वीभत्स करुणा और भय से हिन्द की गाथा सनी।
हो लेखिका कुदरत कहीं से रोशनी यदि पायेगी,
तो लेख लिखने के लिये स्याही कहां से पायेगी।[3]

और ज्योति की किरण कवि दयानन्द में ही पाता है। परतंत्रता का यह आक्रोश अंग्रेजी सभ्यता पर किये गये तीक्ष्ण व्यंग्य के रूप में व्यक्त होता है—कवि ने अंग्रेजों को छांट-छांट कर उपमान दिये हैं। यथा—

जोर शोर से सुनते हैं जब लोग घरों में घन का नाद,
क्लाइव की बंदर घुड़की की आती है रह रहकर याद।[4]

पाश्चात्य सभ्यता पर व्यंग्य कर मानो कवि की आत्मा को तृप्ति प्रदान होती है—

---

१. बोध रात्रि, पृष्ठ ७४
२. वही, छठा सर्ग, पृष्ठ ७३
३. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ २
४. वही, छठा सर्ग, पृष्ठ ६६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेज मुंह धोये बिना बिस्कुट मुदित खाने लगे,
फिर चाय पीकर शीघ्र मुंह से धूम बरसाने लगे।
धन दीन भारत का सहज में फूंक देना धर्म है,
सीखा इन्होंने आज तक यह सभ्यता का मर्म है।[१]

आत्माभिव्यक्ति—प्रस्तुत महाकाव्य कवि की निजी अनुभूति के कारण ऋषि दयानन्द के जीवनपरक महाकाव्यों की परम्परित श्रृंखला में पृथक् एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कवि ने प्रत्येक स्थल पर अपनी भावना को कल्पना के रूप में एक पात्र निर्मित कर भेजा है जो दृश्य को उपस्थित करता है।

चित्र कल्पने खींच जरा तू मारवाड़ की हालत का।[२]

अष्टम सर्ग समस्त कवि की कल्पना का ही चमत्कार है, जहां वह ऋषि दयानन्द की हत्यार्थ एक सभा का दृश्य उपस्थित करता है।

तत्व-चिन्तन—छायावादी कविता में तत्व-चिन्तन की भी एक विशेष प्रवृत्ति रही है। 'बोध-रात्रि' प्रबन्ध काव्य में वेद का त्रैतवाद, पुर्नजन्म, कर्मफलादि, सांख्य का कार्य-कारण सिद्धांत आदि दार्शनिक तत्वों का चिन्तन मिलता है। त्रैतवाद में प्रकृति, जीव तथा ईश की सत्ता स्वीकार्य है। इस तथ्य को कवि ने पंचम सर्ग में निम्न पंक्ति में व्यक्त किया है—

प्रकृति, जीव तथा जगदीश, श्रुति निश्चित पदार्थ है।[३]

इसी प्रकार पुनर्जन्म का महत्व भी कवि ने दर्शाया है। इन सभी सिद्धान्तों की स्थापना में कवि को महर्षि दयानन्द के ही विचार मान्य हैं। पुनर्जन्म की अनिवार्यता पर उद्धृत पंक्तियां दृष्टव्य हैं—

मगर कर्म कहां शिशु ने किये, जिनका है फल यह पा रहा,
यह पुनर्भव की उपपत्ति है, नियत लक्षण आस्तिकवाद का।[४]

कर्म-फल का वैशिष्ट्य कवि ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

जटिल और कोई अनुयोग है, न जिनका कुछ भी प्रतिवाद है,
इसलिये मतिमना यह मानना उचित है—यह है फल कर्म का।[५]

संसार की नश्वरता पर भी कवि का विश्वास है—

है रूप चंचल फेन-सा जल बुदबुदों-सी वेदना,
संज्ञा निरी मृगतृष्णिका संसार कदली-सा बना।[६]

---

१. बोध रात्रि, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ४६
२. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ ७७
३. वही, पंचम सर्ग, पृष्ठ ६३
४. वही, एकादश सर्ग, पृष्ठ १३६
५. वही, पृष्ठ १३६
६. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अतः धन संग्रह व ऐश्वर्य की आकांक्षा क्यों ? जब सभी को काल का ग्रास बनना ही है तो क्यों नहीं मानव अमरता की प्राप्ति में संलग्न होता, यही कवि की चिन्तना है, क्योंकि—

अपने सिकन्दर ले गया चलते समय क्या साथ में,
क्या रह गया अंत में, उस गजनवी के हाथ में।[1]

लेकिन कवि छायावादी कवियों की भांति वर्तमान युग से असंपृक्त नहीं है। युग की दुर्दशा ही तो 'बोध-रात्रि' में आक्रोश के रूप में व्यक्त हुयी है। कवि क्रान्तिकारी कवि है।

क्रांति का स्वर—कवि ने परतंत्र भारत को ललकारा है—सोते से जगाने का प्रयत्न किया है, वीरता को उत्साहित करने का प्रयत्न किया है। उदाहरणार्थ—

ले दासता से दासता को मोल खुश होकर बड़े,
हे हिन्दुओ ! कब तक रहोगे खाट पर सोये पड़े ?
तुम काहिलों को गोद में रख दीन भारत रो रहा,
यों पक्षियों की घोषणा से व्याप्त क्या नभ हो रहा।[2]

तत्कालीन समाज—समाज में जागृति का शंखनाद गुंजाने हेतु ही यह महाकाव्य लिखा गया है। इस सामाजिक जागृति का ही कार्य महर्षि दयानन्द ने किया था। अतः ऋषि के भावों से कवि का भाव-साम्य अति सुंदर रूप से सम्मिलित होकर 'बोध-रात्रि' में अभिव्यक्त हुआ है।

एक ओर विदेशी आक्रान्ता का अत्याचार है तो दूसरी ओर क्षत्रिय तेज तिमिराच्छन्न हो रहा है। कवि उनके क्षात्र धर्म को ललकारता है—

वीर क्षत्रियो ! देश दशा का तुम्हें नहीं है जरा खयाल,
रहते हुये तुम्हारे क्यों है हुआ हिन्द इतना बेहाल।[3]

स्त्री-शिक्षा—नारी जाति में शिक्षा के अभाव को कवि देश की पतितावस्था का एक महान् कारण मानता है। स्त्री-शिक्षा विरोधी लोगों के प्रति कवि की वाणी कठोर शब्दों का प्रयोग करती है—

स्त्री समाज में शिक्षा को जो हेतु पतन का कहते हैं
रिश्तेदार बन्दरों के वे उसी देश में रहते हैं।

पर्दा-प्रथा का विरोध—तत्कालीन समाज में नारी की दशा शोचनीय थी। बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा आदि कुरीतियां समाज में व्याप्त थीं। महर्षि दयानन्द ने भी इन कुप्रथाओं के प्रति आवाज उठाई। कवि ने पर्दा-प्रथा को इस प्रकार अमान्य ठहराया है—

---

१. बोध रात्रि, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १५
२. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ४८
३. वही, छठा सर्ग, पृष्ठ ७१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह कैदियों की सी दशा, पाई स्त्रियों ने परवशा
लाचार मुगलों के घृणित औद्धत्य से ।[१]

कवि ने डॉक्टरों, वकीलों आदि व्यवसायों में आये ह्रास को भी वर्णित किया है। वकीलों ने वकालत का क्या आदर्श बना रखा है, इसको कवि व्यंग्यपूर्ण शब्दावली में इस प्रकार कहता है—

रस में भी उन्होंने हमेशा विष घोला है
भूल से भी कोर्ट में न सत्य कभी बोला है।[२]

जीवन-प्रदाता डाक्टर किस प्रकार जीवन छीनने वाले हो गये थे—

मृत्यु का एजेन्ट इसे मिला उपनाम है
प्लेग और हैजे को ही करता सलाम है।[३]

समाज में चतुर्दिक चारित्रिक पतन का वातावरण छाया था। कवि ने व्यंग्य-पूर्ण शैली में बड़ा ही कारुणिक चित्र उपस्थित किया है—

हा ! दीन पशु पर मारते हैं बेंत चमड़े के लिये,
निज पुत्रियां तक बेचते हैं धन कमाने के लिये
चर्बी मिला घृत बिक रहा है देख लो बाजार में
पर मृत्यु इनको भी डुबा देगी अनन्त अपार में ।[४]

भारतीयों द्वारा अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति को विस्मृत कर पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण ही उन्हें अज्ञान के अंधकार में ले जा रहा है, ऐसा बोध रात्रि के इस कवि का विचार है—

लेकर बगल में पुस्तकें लड़के इधर पढ़ने चले,
इंग्लैण्ड के गुणगान में ये गैर से बढ़ने चले
यूरोप की ही शान पर यह देश लट्टू हो रहा
टीचर किराये का इसी से आज टट्टू हो रहा ।[५]

कवि का व्यंग्य-विधान उपरोक्त चित्रण में द्रष्टव्य है।

धार्मिक सुधार—इस विषय में भी कवि ने महर्षि के विचारों को वाणी दी है।

(१) मूर्ति-पूजा का खण्डन—शिवरात्रि में शिवलिंग पर चढ़े हुये चूहे को देख तथा उस पर चढ़ी सामग्री को खाते देख ऋषि दयानन्द को जो बोध हुआ, उसमें सर्वप्रथम मूर्ति-पूजा की व्यर्थता ही है—

क्या मूर्ति यह भगवान है जिनकी सुनी हमने कथा
विपरीत मैं तो देखता हूं आज सब प्रभु की प्रथा ।[६]

---

१. बोध रात्रि, दशम सर्ग, पृष्ठ १२४
२. वही, सप्तम सर्ग पृष्ठ ९४
३. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ ९०
४. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १६
५. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ५०
६. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन्दिर केवल उच्च वर्ग की बपौती बन चुके थे, शूद्रों का मन्दिर में प्रवेश निषिद्ध था। कवि की दृष्टि में यह विचार अति हेय है—

है शूद्र का घुसना मना इस शिव सदन में सर्वथा
शैतान ने कब से चलाई मानवों में यह प्रथा।[१]

मूर्ति पूजा के विरोध में कवि ने ऋषि दयानन्द से भी ज्यादा युक्तियां प्रस्तुत की हैं। बोध रात्रि की घटना में शिव की असमर्थता पर कवि की सूझ कितने रूपों में प्रकट हुई है वह किसी प्रातिभ कवि की ही सामर्थ्य है। कवि के व्यंग्यपूर्ण सुझाव द्रष्टव्य हैं—

कोई भला अथवा बुरा यदि जन अयाचित दे रहा
उससे करो मंजूर वह भिक्षा प्रयत मनु ने कहा।
इस धर्म के क्रम का अतिक्रम नील लोहित ने किया
तो किसलिये सम्मान इनको धर्मवीरों ने दिया।[२]

कवि फिर पूछता है—

महमूद की वह गुरु गदा जब शीश पर आकर गिरी
शिति कण्ठ के अपमान की सीमा हुई वह आखिरी
रक्खा त्रिशूल कहां रहा, शिवमूर्ति ने तब क्या किया,
जब गजनवी के सैनिकों ने प्राण लाखों का लिया।[३]

तीर्थों के माहात्म्य व गंगा स्नान से प्राप्त होने वाले पुण्य के अंधविश्वास को भी कवि ने हेय ठहराया है—

किस धर्म के उद्देश्य से गंगा नहाते हो यहां
इन मुफ्तखोरों के लिये क्यों जर बहाते हो यहां
है पास पानी के अगर अपवर्ग दर की चाबियां
सो मुक्त क्यों होती नहीं है तैर कर मुर्गाबियां।[४]

धर्म के ठेकेदार साधु-समाज कितने पथभ्रष्ट हो चुके थे इसका यथार्थ चित्रण कवि ने किया है—

इधर साधु शतरंज खेलते हैं दुनिया का ध्यान नहीं,
हार जीत की धुन में इनको अपना भी कुछ ध्यान नहीं।[५]

बौद्ध-मत का प्रभाव—कवि बौद्ध धर्म को मानने वाला है किन्तु वह स्वधर्म के प्रति पूर्वाग्रही नहीं है। अतएव पदे-पदे वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। साथ ही अपने धर्म के प्रति कवि का आकर्षण भी दृष्टिगत होता है। एक स्थान पर भगवान बुद्ध की संस्तुति करता हुआ कवि लिखता है—

---

१. बोध रात्रि, पृष्ठ ४
२. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ६
३. वही, पृष्ठ ११
४. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ५५
५. वही, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ २०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्बुद्ध होकर बुद्ध ने क्षय कर दिया था क्लेश का,
उस सार्वभौम अशोक ने भी शोक खोया देश का।[1]

मैत्री एवं करुणा बौद्ध धर्म की प्रमुख विशेषता है—"इसका सदा पालन करो, निज राज्य संचालन करो, मैत्री तथा कारुण्य का संदेश है।"[2]

एक स्थल पर तो कवि ने ऋषि दयानन्द के मुख से भी बौद्ध धर्म का प्रचार करवा दिया है—

राज्य बुद्ध ने छोड़ दिया था। घर से नाता तोड़ दिया था।
स्नेह योग से जोड़ दिया था।
धर्म चक्र के परिवर्तक का भूल गये उपकार,
जगाया तुमको कितनी बार।
बौद्ध संघ में जाकर मिलना, कुछ दिन नहीं वहां से हिलना।[3]

महात्मा बुद्ध के पश्चात् कवि की निखिल श्रद्धा स्वामी दयानन्द के प्रति ही पुंजीभूत हुई है। ऋषि का गुणगान करता हुआ कवि कहता है—'बाद बुद्ध के आप सरीखा हुआ न अब तक वक्ता धन्य।'[4]

सर्वांश में कवि ने भारतीयों में एक आदर्श स्थापित करने की अभिलाषा ही लक्ष्य रखी है। अपने काव्य का अंत वह इसी आशा से करता है—"हिन्दुओ, बनो हिन्द की शान।'

रस—

समीक्ष्य महाकाव्य रस की दृष्टि से ऋषि दयानन्द परक अन्य चरित्र काव्यों से पृथक् है। महर्षि दयानन्द के जीवन को आधार मानकर अंगीरस रूप में वीर रस की प्रतिष्ठा करने वाला यह प्रथम महाकाव्य अथवा अकेला महाकाव्य दृष्टिगत होता है। कवि का लक्ष्य है ऋषिवर दयानन्द के ओजस्वी व्यक्तित्व को प्रस्तुत कर उत्साह के भावों को जाग्रत करना, इस उद्देश्य की पूर्ति में उसे अटूट विश्वास है—

अभी नहीं मैं कुछ कहता हूं, क्योंकि समय है काफी दूर
दिव्य दृष्टि से देख रहा हूं फैल जायेगी क्रांति जरूर।[5]

वीरता के भावों की कवि के पास कोई कमी नहीं है—

आड़ धर्म की लेकर मैंने बोया यहां क्रांति का बीज,
हिन्दू इसको निज शोणित से सीचेंगे, जल क्या है चीज।

इस वीर रस की स्थापना स्थान-स्थान पर हुई है, उसमें उद्दीपन बने हैं—अतीत के गौरव वे महापुरुष, जिन्होंने सिर का कटना स्वीकार किया लेकिन झुके नहीं—

---

१. बोध रात्रि, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १७
२. वही, दशम सर्ग, पृष्ठ १२३
३. वही, एकादश सर्ग, पृष्ठ १४४
४. वही, छठा सर्ग, पृष्ठ ७६
५. वही, छठा सर्ग, पृष्ठ ७४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन्य वीर वैरागी की भी खिंची लाल चिमटों से खाल
क्या इतने शोणित से रंजित हुआ नहीं देवी का भाल।[१]

श्रृंगार हास्य, अद्भुत, करुण, रौद्र, वीभत्स आदि रसों का भी काव्य में यत्र तत्र अंग रूप में परिस्थिति अनुकूल वर्णन हुआ है। **श्रृंगार रस** के वियोग व संयोग दोनों का ही वर्णन मिलता है। संयोग-श्रृंगार का उदाहरण द्रष्टव्य है—

यहां तानती हैं महिलायें भृकुटि भंग से नाहक चाप,
जब उनके प्रेमी पैरों पर गिर पड़ते हैं दिल से आप।
जब उनके लोचन शर से ही बिंध जाता है चित्र कुरंग,
तो इसको वे क्यों देती हैं अर्जन रूप जहर का रंग।[२]

श्रृंगार में **रूप-सौन्दर्य** का विशेष महत्त्व है। रूप-वर्णन में कवि की उपमायें भी स्तुत्य हैं—

क्या शैवाल जाल बालों का चपल नेत्र ही मीन हुये,
बाहु मृणाल चक्रवाकों का मंजु युगल स्तन न हुये।
बदन कमल था, श्रोणि शिला थी यौवन जल की लहर बनी,
मदन तप्त के स्नान हेतु वह मदन मंजरी नहर बनी।[३]

वारांगना नन्ही जान के प्रिय से विरह में हमें वियोग श्रृंगार के दर्शन भी हो जाते हैं—

कोई दवा नहीं है मेरे कामज्वर रोग की,
देह में लगी है आग राजा के वियोग की।
साड़ी जल जायेगी इसी से बेकरार हूं,
आंसुओं से इसे मैं बुझाती हा लाचार हूं।[४]

हास्य रस—पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण कर रहे बाबुओं के चित्रण में हमें हास्य रस की उपलब्धि हो जाती है—

श्वान समान बांध कर पट्टा नव फैशन का प्राण,
सुर दुर्लभ बाबू पदवी का शंका रहित प्रमाण।
कोई वीर चला क्या उसको ज्ञात न थी यह बात,
पैसे में बिकते बाबू दिल्ली में दिन रात।[५]

अद्भुत—दयानन्द की अद्भुत यौगिक शक्ति जन मानस के मन में विस्मय भाव को जागृत कर अद्भुत रस का संचार कर देती है:—

संध्या वहन किया उन्होंने फिर लग गई समाधि,
भागी न जाने किससे डर किधर देह की व्याधि।[६]

---

१. बोध रात्रि, पृष्ठ ७३
२. वही, पृष्ठ ७०
३. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ ८३
४. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ ९१
५. वही, एकादश सर्ग, पृष्ठ १४०
६. वही, पृष्ठ १३८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द की अंतिम दशा को देख किस प्रकार मानव व प्रकृति शोक विह्वल है और सर्वत्र शोक ही शोक व्याप्त है—

लता वधू जन अश्रु पुष्प था बरसाता सब ओर,
लगे गिराने पंख शोक से नृत्य शून्य हो मोर।
पंजर में चुपचाप बंद थे तोते मन को मार,
मानो उनके पड़ा कण्ठ पर रक्तराशि का भार।

इस प्रसंग को पढ़कर मन में महाकवि कालिदास की पंक्तियां सहज ही प्रतिबिम्बित हो उठती हैं।[1]

रौद्र रस—दरबान पर आये क्रोधित ऋषि के स्वरूप में रौद्र रस स्पष्ट होता है—

जब शैतान परस्ती का यह नाटक वहां नजर आया,
दयानन्द की आंखों में अति लोहित खून उतर आया।
सोया हुआ तेज क्षण भर में आहत होकर भड़क उठा,
पटका पैर क्रोध से उसने फर्श महल का तड़क उठा।[2]

इस प्रकार विविध रसों के संयोजन द्वारा कवि ने इस प्रबंध काव्य को उदात्ततायुक्त महाकाव्यत्व की कोटि में बद्ध किया है।

कला-पक्ष—आलोच्य महाकाव्य खड़ी बोली में लिखा गया है। भाषा में संस्कृतनिष्ठता एवं उर्दू शब्दावली दोनों के समृद्ध रूप में दर्शन होते हैं। अंग्रेजी के शब्दों को भी कवि ने प्रयुक्त किया है। शब्दों का चयन अति सुन्दर बन पड़ा है। भावानुकूल, पात्रानुकूल, वातावरणानुकूल भाषा के प्रयोग में कवि ने कुशल शिल्पी का कार्य किया है। संस्कृत के तत्सम प्रधान युक्त शब्दावली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

मौक्तिक सदृश हिमविन्दुओं का प्रसवण कुछ हो रहा,
दयनीय भारत की दशा पर व्योम मानो रो रहा।[3]

दूसरी ओर उर्दू भाषा का भी साधिकार प्रयोग कवि ने किया है—

ऋषि आफताब अजीब थे वे नूर का तड़का हुआ,
बीती जिहालत की निशा क्षय मानसिक तम का हुआ।[4]

प्रसंगानुकूल भाषा में प्रसाद, माधुर्य व ओज गुणों का समावेश भी हुआ है। प्रसाद गुण की सरलता प्रस्तुत है—

जो चित्त में है करती उजाला,
जहां नहीं है कुछ दाम काला।
सजीव हीरा जिसने निकाला,
है सामने संस्कृत पाठशाला।

---

१. नृत्यं मयूरा: कुसुमानि भृंगा, दर्भानुपात्तान्बिजहुरर्हरियण्यः। (रघुवंश)
२. बोधरात्रि, सप्तम सर्ग, पृष्ठ ८४
३. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ २१
४. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ५३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु कवि ने माधुर्य गुण का प्रयोग किया है, उसी प्रकार रौद्र एवं वीरता के भावों के प्रदर्शन में कवि ने ओज गुण का प्रसंगानुकूल वर्णन किया है।

अलंकार सौन्दर्य—कवि अपने हृदयगत प्रस्तुतों के लिये अप्रस्तुत ढूंढ़कर उन्हें उत्कर्ष पर लाना चाहता है, उसकी मनोरम कल्पना एक उन्मुक्त पक्षी की भांति विचरण कर अलौकिक तथा अनुपम सौन्दर्य एकत्र कर अपने काव्य जगत् में सुगन्धित पुष्प पराग बिखेर देती है। यह पराग रूप सौन्दर्य-सार ही काव्य में अलंकार है। 'बोध-रात्रि, में अलंकारों की सुषमा देखते ही बनती है। कवि की इस विषय में एक विशेषता रही है कि उसने रूढ़ उपमानों का प्रयोग न करते हुये नवीन उपमानों का सुन्दर प्रयोग किया है। कवि जब किसी दृश्य का वर्णन करता है तो मानो उपमाओं की वर्षा होने लगती है, रूपकों की बाढ़ आ जाती है और उत्प्रेक्षाओं की एक महत् राशि उपस्थित हो जाती है। उदाहरणार्थ—

रक्तप्रभा की वृष्टि दिवाकर करता था उस काल,
मानो उसके निकल रहे थे अश्क खून के लाल।
लाल मिरच सा लाल हो गया पश्चिम का मुख भाग
दीन हिन्द का मानो उसने लूट लिया अनुराग।[१]

नवीन उपमानों को सहज भाव से प्रस्तुत करने में कवि ने अपनी कल्पना का प्रचुर उपयोग किया है—

हैं साफ सीधी सड़कें यहां की,
मानो उपन्यास कहानियां हैं।[२]

इसी प्रकार

संन्यासी के मुण्ड सरीखे पत्थर गोल कहीं पर थे,
हूरों को तलाक देकर या आये वहां पयोधर थे।[३]

अन्यत्र भी

सत्कर्म से रुचि हट गई आलस्य के हम दास हैं,
सो मौत मानो है गधी उसके लिये हम घास हैं।[४]

कवि द्वारा प्रयुक्त अलंकार सौन्दर्य में सहायक ही बने हैं, अवरोधक नहीं। कवि की अलंकारप्रियता और भी स्पष्ट हो जाती है जब हम नवम् सर्ग का अध्ययन करते हैं। पूरा सर्ग सभंग पद यमक का श्रेष्ठ उदाहरण है। अन्यत्र भी यमक का प्रयोग आकर्षक है—

बीअर बनाने को क्यों बीअर प्रदान की,
फूल जो लेते हैं वे तो फूल कहलाते हैं।[५]

---

१. बोध रात्रि, एकादश सर्ग, पृष्ठ १३७
२. वही, तृतीय सर्ग, पृष्ठ ३६
३. वही, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ २८
४. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १७
५. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ ९५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परम्परागत लोकोक्तियों को किस प्रकार कवि दृष्टान्त रूप में उपस्थित करता है, द्रष्टव्य है—

रोटी पर बिल्लियां लड़ें तो क्यों न गले बंदर की दाल,
आपस में कुत्ते लड़ते हैं ले उड़ते हैं कौवे माल।[1]

मुहावरे—भाषा को सजीवता प्रदान करने के लिये अपेक्षित अन्य उपकरणों में कवि ने मुहावरों के प्रयोग की ओर भी ध्यान दिया है। कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं—

(१) पाषाण का तैल बने भले ही, मिले कहीं शक्कर निम्ब का भी।
(२) होता है निराश चलता है पुष्प व्योम का जो लाने।
(३) घोर आत्मग्लानि से कलेजा फटा जाता है।
(४) बनकर कूप मण्डूक का कर सकता है क्या उपकार।
(५) धज्जियां उड़ा दीं मैंने बड़ी अकल वालों की,
दमकिया नाक में निराली शकल वालों की।

सूक्ति—महाकवि जब जगत् के अनुभव को अपनी कल्पना में धारण कर उनको शब्दों का रूप देता है, तब वे शब्द सर्वग्राह्य और सार्वकालिक होकर सूक्ति का रूप ग्रहण कर लेते हैं। प्रस्तुत महाकाव्य में भी सूक्तियों का समावेश हुआ है। कुछ सूक्तियां प्रस्तुत हैं, मानव के लिये संदेश भी है—

(१) असफल होकर जीवित रहना इससे मरना अच्छा है।
(२) व्यसन मृत्यु से भी बढ़कर है, मनु ऐसा फरमाते हैं।
(३) सच्चा प्रेम वही है जिसका रहे शत्रु तक पर अधिकार।

शैली की दृष्टि से कवि ने संवाद शैली, चित्रात्मक शैली तथा पूर्व दीप्ति शैली आदि का प्रयोग किया है।

(१) **संवाद शैली**—कथोपकथन से काव्य में विशेष व्यावहारिकता एवं नाटकीयता आ जाती है। यथा—

कृष्णानन्द गिरि ने बिछाया जब जाल यों,
करके सलाम झुक बोला द्वारपाल यों,
आगन्तुक प्लीडर के लिये क्या निर्देश है,
कल्प सुन्दरी ने कहा स्वीकृत प्रवेश है।[2]

(२) **चित्र शैली**—कवि की कल्पना शक्ति अद्भुत है। वह वातावरण का सुन्दर चित्र उपस्थित करने में चित्रकार की तूलिका का कार्य करती है। ऋषि दयानन्द का अंतिम संदेश सुनने हेतु जनमानस की आतुरता का आंखों देखा वर्णन प्रस्तुत करने में कवि कालिदास के 'अज इन्दुमती स्वयंवर' का स्मरण करा देता है—

---

१. बोध रात्रि, छठा सर्ग, पृष्ठ ७५
२. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ ६८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई रंगमहल में बाला सजा रही थी बाल,
कंघी और इत्र की शीशी दी झट उसने डाल,
पति के साथ चली वह पथ में वेग न सकी सम्हाल,
उसने प्रथम बार छोड़ी तब मृदु मराल की चाल।[1]

(३) **पूर्व दीप्ति शैली**—'बोध-रात्रि' चरित काव्य होते हुए भी घटनाओं की संकुलता से रहित है। अतः शैलीगत वर्णनात्मकता नहीं है। कवि ने ऋषि दयानन्द के जीवन के प्रसंगों को यथाक्रम उपस्थित न करके बीच-बीच में पूर्व दीप्ति शैली के प्रयोग से कहीं-कहीं प्रस्तुत करता गया है—

एक बार विक्रम को विक्रम दिखाने को,
ब्रह्मचर्य व्रत की प्रशस्तता दिखाने को,
ऋषि ने पीछे से रोका उसके सुरथ को,
अश्व चारों चित्र सम सजाते थे पथ को।[2]

(४) **प्रतीक शैली**—छायावादी शैली की यह प्रमुख विशेषता रही है। कवि ने इसका सर्वत्र प्रयोग किया है। स्वयं शीर्षक में ही प्रतीकात्मकता है। इसी प्रकार निम्न उदाहरण में रवि, तम, उलूक आदि के द्वारा अपने भाव को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

आसन्न रवि के उदय से तम हो रहा अवसन्न है,
है दीनहीन उलूक लेकिन कोकलोक प्रसन्न है।[3]

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि 'बोध-रात्रि' की शैली प्रवाहपूर्ण है और उसे विषय के अनुरूप परिवर्तित करके कवि ने प्रस्तुत काव्य में विशेष आकर्षण का संचार किया है।

छन्द की दृष्टि से इस काव्य में वैविध्य देखने को मिलता है एक ही सर्ग में अनेक छन्दों की आयोजना द्रष्टव्य है। हिन्दी, संस्कृत के छन्द प्रयोग के अतिरिक्त कवि ने उर्दू छन्दों का भी प्रयोग किया है। लावनी, नाटक, वीर आदि हिन्दी के छन्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। छन्द की दृष्टि से भाषा में स्वतः एक प्रवाह है। स्वतंत्र गीतों की अंत में योजना की गयी है।

इस प्रकार भाव पक्ष एवं कला पक्ष की उदात्तता काव्य को निश्चय ही महाकाव्य का नाम दिलाने में समर्थ है। भावों के स्रोत में कहीं-कहीं संस्कृत व हिन्दी की प्रसिद्ध उक्तियां भी सहयोगी बनी हैं जिससे कवि के गहन अध्ययन का परिचय भी मिलता है। यथा 'पंचतंत्र' की प्रसिद्ध उक्ति 'नृपस्य चित्तं, कृपणस्य वित्तं··· को कवि ने काव्य में इस प्रकार व्यक्त किया है—

---

१. बोध रात्रि, एकादश सर्ग, पृष्ठ १३६
२. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ १००
३ वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ४७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजा के मनोरथ को किस्मत विचित्र को,
खल के स्वभाव को और नारी के चरित्र को।
देव न जान पाते चीज क्या इतर है,
सोचना विचारना तथापि बेहतर है।

इसी प्रकार गीता का यह श्लोक 'या निशा सर्वभूतानां' 'बोध-रात्रि' में इस प्रकार अभिव्यक्ति पाता है—

जब जागते हैं भूत सब, तब योगियों की रात है,
भौतिक निशा में संयमी का जागरण विख्यात है।

हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध यह उक्ति 'जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि' के भाव को लेकर प्रस्तुत महाकाव्य के प्रणेता ने प्रातिभ रूप से स्पष्ट किया है। मानो सूर्य स्वयं ही यह तथ्य स्वीकार कर रहा है—

मेरी जहां है गति नहीं जाता वहां तक है कवि,
व्यवसाय मेरा व्यर्थ है यों सोचकर मानो रवि।[1]

वस्तुतः 'बोध-रात्रि' शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से 'महाकाव्य' की कोटि में आसीन है। सर्गबद्धता, रस, कथानक, प्रकृति चित्रण, उद्देश्य सभी गरिमापूर्ण हैं। अतः डा० नगेन्द्र द्वारा प्रस्तुत महाकाव्य की परिभाषा को पूर्ण करते हुये 'बोध-रात्रि' उदात्त कथानक, उदात्त पात्र, उदात्त उद्देश्य, उदात्त भाव और उदात्त शैली को समाहित किये हुए एक उत्कृष्ट महाकाव्य है। कवि की आकांक्षाओं की मूर्ति रूप छटा निम्न पंक्तियों में वन्दनीय है—

जय वेद की, जय धर्म की, जय भद्र भारतवर्ष की,
जय क्रान्ति की, स्वातंत्र्य की, जय जाति के उत्कर्ष की।[2]

---

१. बोध रात्रि, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ४६
२. वही, प्रथम सर्ग. पृष्ठ १७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देव दयानन्द !

○ ○ ○ ○

भारत के उद्धारक ऋषिवर,
दयानन्द हे शांति-सुधाम ।
ब्रह्म वंश अवतंस तुम्हारा,
अमर हो गया जग में नाम ।।
यज्ञों में पशु बलि देने की,
प्रथा तुम्हीं ने की थी बंद ।
शूद्रों को निज गले लगाकर,
काटे उनके भारी फन्द ।।
बुरी रीतियों औ कुरीतियों,
को करके तुमने निर्मूल ।
ले सुधार की सुई निकाला,
दुखदायक समाज का शूल ।।
किया अविद्या अन्धकार को,
ज्ञान सूर्य से अपने दूर ।
आडम्बर मिथ्याभिमान के,
किया किले को चकनाचूर ।।
दिखलाया स्वराज्य पथ तुमने,
मिला देश को था आधार ।
वेदों की महिमा वर्णन कर,
किया धर्म का पुनरुद्धार ।।
आर्य धर्म की ध्वजा उड़ाकर,
दिया उसे नव गौरव दान ।
सदा करेगा पूज्य महर्षि,
तुम पर यह भारत अभिमान ।।

—क्षेमचन्द्र सुमन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

षष्ठ उल्लास

ऋषि गाथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि-स्तवन

तेरा अतुलित था यश-विकास;
तू स्वर्ण देश का था प्रकाश।
था श्याम मेघमय भाग्य-व्योम,
सब क्षितिज-कोप था तिमिर-तोम,
था जग का कम्पित रोम-रोम,
हो गया ज्ञान का स्तम्भ-भास।
तू स्वर्ण देश का था प्रकाश।
कर अभय पार सरिता, गिरिवर,
मन विश्व-क्षेम का दृढ़ व्रत धर,
क्षण सुखा दिया रोदन-निर्झर,
शत स्रोत बहा उल्लास हास,
तू स्वर्ण देश का था प्रकाश।
उठते शत-शत तूफ़ान प्रबल,
अज्ञान-उदधि फेनिल, चंचल,
पर खड़ा रहा गिरि-सा अविचल,
था विजय-शक्ति का अमर वास,
तू स्वर्ण देश का था प्रकाश।
लहरों में तेरा अमर भान,
झल झिलमिल देता शुभ्र दान,
वसुधा करती निर्वाण-गान,
है उठा रही जो भग्न आश,
तू स्वर्ण देश का था प्रकाश।

—स्व० डॉ० सत्याचरण 'सत्य'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

○ ○ ○

ऋषि गाथा

'ऋषि गाथा' महाकाव्य मथुरा निवासी श्री विमलचन्द्र विमलेश द्वारा प्रणीत है। कवि की आशु प्रतिभा इस तथ्य से स्वत: प्रमाणित है कि प्रस्तुत काव्य केवल १७-१९ वर्ष की आयु में लिखा गया है। सरल भावपूर्ण भाषा में एक किशोर के श्रद्धा सुमन ही इस प्रबन्ध काव्य में पुष्पित हुए हैं।

'ऋषि गाथा' का प्रथम प्रकाशन १९५३ ई० में तथा द्वितीय प्रकाशन १९७५ ई० में आर्य समाज शताब्दी समारोह के शुभावसर पर हुआ।[१]

कवि के जीवनादर्श हैं विश्व कल्याण हेतु सब कुछ अर्पित कर देने वाले युग-निर्माता ऋषि दयानन्द। स्वयं कवि ने काव्य के प्रारम्भ में अपने उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त किये हैं, "ऋषि का जीवन स्वयं में इतना महान् है जो मेरे इस लघु प्रयास को काव्य का रूप दे सका।"[२]

कवि ने ऋषि की जीवन सम्बन्धी सामग्री खोजने का पर्याप्त प्रयत्न किया। उन्हीं के शब्दों में, "मैंने अनेक स्थानों पर जाकर ऋषि की जीवन सम्बन्धी सामग्री की खोज की। पत्रों और विश्वस्त परम्पराओं से ऋषि के विचारों, कार्यों और योजनाओं का पता चला।"[३]

चरित नायक ऋषि के जीवन को कवि ने एक नव परिप्रेक्ष्य में भी देखा है वह है—सर्वप्रथम सफल क्रान्ति द्रष्टा के रूप में। "मुझे ऋषि के इस स्वरूप के लिये जिज्ञासापूर्ण श्रद्धा रही है। तीन वर्ष का अज्ञातवास अब स्पष्ट होने लगा है। नर्मदा के तट पर शंकर की खोज के साथ-साथ ऋषि दयानन्द क्रान्ति-सृजन और उसका दिशा-निर्देशन भी कर रहे थे।"[४]

जीवन परक कृतियों की वर्णनात्मकता तथा इतिवृत्तात्मकता से बचने का कवि ने यथासम्भव प्रयास किया है। घटनाओं के प्रस्तुतीकरण में भी सरस शैली का प्रयोग किया गया है।

'ऋषि गाथा' का नामकरण चरित नायक तथा इतिवृत्त के आधार पर किया गया है। ऋषि दयानन्द की जीवन गाथा ही प्रस्तुत प्रबन्ध में वर्णित है।

---

१. चेतना प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
२. ऋषि गाथा और मैं, पृष्ठ ५
३. वही, पृष्ठ ५
४. वही, पृष्ठ ६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्गबद्धता की दृष्टि से 'ऋषि गाथा' १७ सर्गों में विभक्त है। सर्गों के विभाजन के साथ-साथ कवि ने शीर्षक भी प्रस्तुत किये हैं जो उस सर्ग में वर्णित कथा वस्तु के आधार पर हैं।

महाकाव्य के आरम्भ करने से पूर्व कवि आदिग्रन्थवेद के मंत्र द्वारा ईश-वन्दना प्रस्तुत करता है—

ओ३म् ! विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रम् तन्न आसुव।[१]

तत्पश्चात् प्रथम सर्ग आरम्भ होता है, जिसका शीर्षक है 'जय-भारत'। मातृ-भूमि-वन्दना ही इस सर्ग के प्रथम खण्ड में व्यक्त हुयी है—

जय जय जन मन गण अधिनायक,
रे जय तेरी भारत ललाम !
तू भूतल ऊपर मधुर स्वर्ग-सा,
सचमुच शोभित ज्योति-धाम ॥[२]

कवि नत मस्तक है उस सौराष्ट्र प्रान्त के चरणों में जिसके मौरवी नामक कस्बे में ऋषि दयानन्द जैसी गौरवमयी विभूति ने जन्म लिया—

है धन्य तुम्हें सौराष्ट्र भूमि,
है धन्य मौरवी टंकारा।
जिसमें से दुःख पाखण्डों को,
धोने निकली पावन धारा ॥[३]

कवि ऋषि के माता-पिता की भी अभ्यर्थना करता है। वे धन्य हैं ऐसा पुत्र समाज को प्रदान करके—

तू कितना भाग्यवान कर्षन, घर की धरती तुम धन्य धन्य,
सौ बार प्रणाम तुम्हें माता, नौ मास तुम्हारी कोख धन्य ॥[४]

'ऋषि गाथा' के नायक, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, ऋषिवर दयानन्द हैं। उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक की समस्त घटनाओं का वर्णन करने का ही इस काव्य में प्रयास किया गया है। दयानन्द धीरोदात्त गुणों के समन्वित रूप हैं। कवि के शब्दों में—

बलतेजपूर्ण, साकार ओज, वक्ता साधक मुनि संन्यासी।
विद्वान्, विजेता वीर व्रती योगी निर्भय प्रभु विश्वासी ॥[५]

ऋषि दयानन्द के जीवन पर आधारित 'ऋषि गाथा' का कथानक ऐतिहासिक है। शृंखलाबद्धता, सहजता एवं स्वाभाविकता कथानक के गुण हैं। कथावस्तु रोचक

---

१. ऋषि गाथा, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १६
२. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १६
३. वही, पृष्ठ २१
४. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ २४
५. वही, द्वादश सर्ग, पृष्ठ २११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एवं प्रवाहपूर्ण भी है। ऋषि के जन्म से प्रारम्भ होता है और आती है वह शिवरात्रि जो ऋषि के जीवन की आधारभूति बनी। शिवलिंग पर चढ़ी सामग्री को चूहे द्वारा खाते देख सत्यार्थी बालक मूलशंकर के विचारों को कवि ने निम्नलिखित शब्दों में प्रस्तुत किया है—

जो शंकर दो मूषक निज तन से न हटा पायेगा।
पिता ! झूठ कैसे भक्तों के, क्लेश मिटा पायेगा ॥[१]

द्वितीय सर्ग में कवि ऋषि-जीवन की उन दो घटनाओं का वर्णन करता है जिन्होंने दयानन्द के मन में सांसारिक माया मोह पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा की। भगिनी एवं चाचा की मृत्यु से दयानन्द के मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह गृह त्याग निकल पड़े। अमरत्व की खोज में। इस घटना का वर्णन करते हुए कवि को अतीत के एक महापुरुष का स्मरण हो आता है—

सन्तान धरा वैभव सुधा के सब बन्धन खुल जाते हैं,
संसार मोह पर लात मार कितने गौतम बन जाते हैं।[२]

इसी प्रकार ऋषि जीवन की घटनाओं को एक क्रमबद्ध रूप में कवि पद्यबद्ध करता गया है।

कवि ने ऋषि दयानन्द के जीवन को परम्परागत रूप से कुछ हटकर भी देखने का प्रयास किया है। वह है स्वतन्त्रता की चिंगारी को स्वातन्त्र्य प्रेमी क्रान्तिकारियों में प्रज्वलित करने वाले दयानन्द का चित्रण—

स्वामी का आशीष पाकर, वैभव सत्ता ठुकराकर,
तांत्या टोपे नाना ने, पहिने केसरिया बाने।[३]

कथानक में कवि ने एक और नवीन प्रसंग की भी उद्भावना कर अपनी काव्य-प्रतिभा एवं कल्पना-शक्ति का परिचय दिया है। कवि ने ऋषि दयानन्द के घर छोड़ देने तथा मेले में पिता द्वारा पकड़कर घर ले जाने और मार्ग में से दयानन्द द्वारा वापस भाग आने पर दयानन्द के पिता से आशीर्वाद दिलवाया है। यह ऋषि के वास्तविक जीवन में सत्य नहीं है। यथा—

जाओ, जाओ शंकर जाओ, बन्धनमय जग से दूरदेश।
पितु का आशीष लेते जाओ, आगे संरक्षक है महेश ॥[४]

'ऋषि गाथा' के अन्तिम सर्ग में कवि यह आशा करता है कि सम्भवतः ऋषि-जीवन पथ-भ्रष्ट मानव का पथ प्रशस्त करने में सहायक हो सकें। ऋषि का जीवन आशा की वह किरण है जो भूमण्डल के तम को विकीर्ण करने हेतु सर्वदा तत्पर है। ऋषि गाथा को प्रस्तुत कर कवि यह आशा करता है कि—

---

१. ऋषि गाथा, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ३२
२. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ६५
३. वही, पंचदश सर्ग, पृष्ठ २४०
४. वही, तृतीय सर्ग, पृष्ठ ६२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई दयानन्द आकर अस्वस्थ धरा पर,
वसुधा की पीड़ा का शुभ उपचार करेगा।[१]

रस

प्रस्तुत महाकाव्य का अंगीरस भी शान्त ही है, परन्तु अन्य रसों का भी निर्वाह प्रसंगानुकूल हुआ है। पिता द्वारा पुत्र को यति रूप में देखने पर उत्पन्न क्रोध भाव रौद्र रस का संचार कर देता है—

थे लोचन रक्त वर्ण, कर्षण तन कंपा भृकुटी टेढ़ी करके,
तूम्बी लेकर पट चीर फाड़ गरजे तर्जनी उठा करके।[२]

सन्तानवत्सला मातृ-हृदय का विलाप कारुण्य की सृष्टि करता है—

था गहन शोक मां के स्नेहिल लोचन सागर लहराते थे,
आते थे श्वास वेदनामय पल में आंसू बन जाते थे।[३]

काशी शास्त्रार्थ हेतु आते हुये पौराणिकों का वर्णन हास्य की छटा उत्पन्न करता है—

कुछ उदर बढ़े आगे को, हिलते डुलते आते थे।[४]

प्रकृति वर्णन—प्रकृति अनंत काल से मानव को अपने सहज सौन्दर्य की ओर आकृष्ट करती आयी है। वह मानव की अभिन्न सहचरी है। फूलों से वह हंसना सीखता है तो कल-कल बहती नदिया उसे कार्य पथ की ओर अग्रसर होने का संदेश देती है। प्रकृति और मानव के इस अटूट संबंध को स्वीकारते हुए ही प्रकृति चित्रण महाकाव्य का एक आवश्यक लक्षण माना गया है।

काव्य में प्रकृति चित्रण कभी भावों की अभिव्यक्ति में सहयोगी बनता है तो कभी कवि की सौन्दर्य-भावना का स्फुटन प्रकृति चित्रण के रूप में होता है। 'ऋषि गाथा, में भी प्रकृति ने यत्र तत्र स्थान पाया है। सूर्योदय का सरल शब्दों में सुन्दर वर्णन देखिये—

रमणीया उषा का यौवन पट जब जर्जर हो जाता है,
प्राची में मुस्काता दिनकर उल्लास बढ़ाता आता है।[५]

प्रकृति मानव के सुख-दुख में समभागी रही है, इसी को प्रकृति का संवेदन रूप कहते हैं—

स्वामी ने भूख मिटाने, छोटा हिमखंड उठाया,
यह दृश्य देख हिमगिरि भी, आंखों में जल भर लाया।[६]

---

१. ऋषि गाथा, सत्रहवां सर्ग, पृष्ठ २८०
२. वही, तृतीय सर्ग, पृष्ठ ६०
३. वही, पृष्ठ ५७
४. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ १४०
५. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ २३
६. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ७३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकृति मानव को उपदेश भी देती है, इस प्रकार—

रवि दर्शन पा मुस्काते पंकज स्वामी से कहते,
तुम जीवन पथ पर हंसना जैसे हम खिलते रहते।[1]

प्रकृति पर चेतनता का भी कवि ने आरोप किया है—

कहीं अचल-अचल खड़े सुयुद्धवीर शीश से।[2]

प्रकृति के सहज क्रिया कलाप का नैसर्गिक सौन्दर्य निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है—

विहगी घर में कर प्रिय की मनुहार रही थी,
हिरणी शावक पर तन मन धन वार रही थी।
अल्हड़ कलिका कर सोलह शृंगार रही थी,
उषा क्षितिज पर क्वांरी आंख निहार रही थी।[3]

अन्यत्र भी

जग पड़े विहंगम हंसे कुसुम आभा बिखराती ओस तरल,
निर्झर मनुहार गीत गाते, उद्वेलित सरितों के हृत्तल।[4]

सामाजिक चित्रण—ऋषियुगीन समाज का चित्रण करते हुए कवि कहीं तो समाज की दयनीय दशा पर द्रवित हो उठा है और कहीं पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण करने वालों तथा अंग्रेजों के प्रति राज भक्ति प्रदर्शित करने वालों के प्रति उग्र हो उठा है। वह रोष को व्यंग्य के रूप में अभिव्यक्त करता है।

अंग्रेजी शिक्षा पद्धति पर कवि का व्यंग्य दर्शनीय है—

विद्यालय और विश्वविद्यालय कितने,
विज्ञान कला कौशल के आलय कितने?
प्रत्येक विषय की शोध यहां होती है,
फिर भी युग की सीता आंसू रोती है।[5]

पढ़े लिखे नवयुवकों की दयनीय दशा का भी कवि वर्णन करता है—

उपाधियां बन जाती हों भोजन दीमक का,
स्नातक बाजारों में मजदूरी करते हों।[6]

और युगद्रष्टा, भविष्यवक्ता कवि की चेतावनी है राष्ट्र को—

---

१. ऋषि गाथा, पृष्ठ ७५
२. वही, षष्ठ सर्ग, पृष्ठ ११०
३. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ १२६
४. वही, द्वादश सर्ग, पृष्ठ १६६
५. वही, चतुर्दश सर्ग, पृष्ठ २२८
६. वही, सत्रहवां सर्ग, पृष्ठ २७६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहां बुढ़ापा भिक्षाटन को बना विवश हो,
यौवन को उपयोगी काम न मिल पाते हों।
तन बिकते हों बाजारों में विज्ञापन से,
वह समाज वह राष्ट्र नाश की सीमा पर है।[1]

वर्तमान समाज की निष्क्रियता पर भी कवि का व्यंग्य है—

लाखों रचनायें व्यय हुये करोड़ों जिन पर,
शोधपीठ ग्रन्थालय अकादमी कितनी ही।
सहज विराजे जिनमें महंत अनेकों,
वर्षों से अज्ञात सत्य को खोज रहे हैं।[2]

नागरिक सभ्यता भी कितनी दूषित हो गयी है इसका भी कवि ने स्पष्ट चित्रण किया है—

है भ्रष्टाचार नगर जीवन के अपने,
केवल क्रय विक्रय यही नगरों के गहने।
धन संग्रह और विलास यहां की माया,
इनमें मानव कब ऋजु पथ पर बढ़ पाया।[3]

धर्म के ठेकेदार पुजारियों के पाखण्ड को भी कवि ने दर्शाया है—

ये सब जर्जरित पुजारी, जिन्हें न कोई आशा,
जय शंकर जय हर हर, इनकी पूजा की परिभाषा।[4]

प्रगतिवादी स्वर

शोषित मानव के प्रति सहानुभूति तथा सामन्तवादी व्यवस्था के प्रति रोष कवि की कविता में प्रगतिवादी चेतना को मुखरित करता है। कवि सामन्तवादियों के नृशंस अत्याचार का वर्णन भी करता है—

ये घोड़े दौड़ा देते थे जनता पर,
ये कोड़े बरसा देते थे जनता पर।
निर्दोष व्यक्ति को काठ लगा देते थे,
बंधवा करके कुत्ते छुड़वा देते थे।
× × ×
सामन्तवादिता सदा घृणित होती है,
यह जन विकास पर कांटे बो देती है।[5]

---

१. ऋषि गाथा, सोलहवां सर्ग, पृष्ठ २५८
२. वही, पृष्ठ २५६
३. वही, चतुर्दश सर्ग, पृष्ठ २२८
४. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ २८
५. वही, चतुर्दश सर्ग, पृष्ठ २३१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शोषितों के प्रति कवि की अनुभूति जितनी करुण है उतनी ही घृणा पूंजीपतियों के प्रति है—दोनों को एक साथ कवि इस प्रकार व्यक्त करता है—

कहीं बन रहे तुंग भवन, कहीं भूख पीड़ा दर्शन,
कर कराहता मानव मन, आतंकित हो उठा गगन।[१]

कवि ने मानव को प्रगतिशील दृष्टि से एक नये रूप में देखा—

देखो बोझ लिया जाता पशु सा वह भी मानव है,
देखो मानव पर चढ़ इठलाता वह भी मानव है॥[२]

क्रांति व विद्रोह का स्वर

कवि युवा है। उसके मन में विद्रोह है। यह विद्रोह समाज के प्रति है, सत्ता के प्रति है। यह विद्रोह का स्वर ही क्रांति को जन्म देता है—

कैसा भी हो देश तथा सत्ता कैसी हो,
वहां क्रांति के अविचल चरण बढ़ेंगे निश्चय।[३]

इस क्रांति को कवि ने एक हजार आठ सौ सत्तावन की क्रांति में देखा। उसका मन प्रसन्न हुआ—

सन सत्तावन की ज्वाला ने भारत सुलगा डाला,
हिंसा का उत्तर बल है, यह परम्परा अविचल है।[४]

कवि का विद्रोही स्वर निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है—

विद्रोही ! इस नगरी में आग लगा दे,
इन सड़ी व्यवस्थाओं को राख बना दे।
संशोधन से कब समता सदन बने हैं,
विध्वंसों से ही नव निर्माण बने हैं॥[५]

राष्ट्रीयता का स्वर

कवि राष्ट्रीयता के भावों से परिपूर्ण है, स्थान-स्थान पर उसने स्वदेश की महिमा गरिमा का गुणगान किया है—

यह भारत जो भूमंडल का गौरव था,
जिसके विवेक पौरुष का गुंजित रव था।
जिसकी महिमा जग में जानी जाती थी,
जिसके इंगित से युग गति थम जाती थी।[६]

---

१. ऋषि गाथा, त्रयोदश सर्ग, पृष्ठ २१५
२. वही, एकादश सर्ग, पृष्ठ १६०
३. वही, सत्रहवां सर्ग, पृष्ठ २७८
४. वही, पंचदश सर्ग, पृष्ठ २४०
५. वही, चतुर्दश सर्ग, पृष्ठ २२५
६. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ८३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मातृभूमि के लिये मर मिटने वाले वीरों का कवि ने सर्वत्र जय जयकार किया है—

मंगल पांडे, मंगल पांडे, थे गूंजे शब्द दिशाओं में,
कुछ व्यक्ति अमर बन जाते हैं, जग की बलिदान कथाओं में ।[२]

जीवन दर्शन

जीवन में चिन्तन ही मनुष्य की विशेषता है, तदनुसार कवि चिन्तन की गहराइयों को, दर्शन के जटिल सिद्धान्तों को अपनी सरल व सुबोध भाषा में प्रस्तुत करता है । 'ऋषि गाथा' में नीतिपरक सूक्तियों की बहुलता है, जिनकी सत्यता शाश्वत है । यही जीवन दर्शन इस काव्य में यत्र-तत्र भिन्न-भिन्न दृष्टान्तों द्वारा व्यक्त हुआ है । यथा—

लघु तिनका भी वायुवेग से पेड़ लांघ जाता है ।
तिल-तिल जलता दीपक सबको राह दिखा जाता है ।।[१]

इन पंक्तियों में प्रेरणा है मानव को कर्म पथ पर बढ़ते रहने की । इसी कर्म का संदेश कवि फिर देता है—

लगी लगन यदि पानी में, भारी पत्थर तर जाते,
लगी लगन यदि ऊसर पर, सर सरिता जल भर जाते ।।[३]

बाधायें पथ पर कितनी ही आयें, मानव को आशा व विश्वास का त्याग नहीं करना चाहिये—

हो भले भीषण भंवर, अज्ञात गहरी वारिधारा ।
यदि रहे विश्वास मन में, व्यक्ति पा जाता किनारा ।।[१]

मानव की दृढ़ इच्छा शक्ति का महत्व कवि निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत करता है—

हो इच्छायें यदि प्रबल, पथ की भारी खाई पट जाती,
मानव की इच्छाओं से, पाषाणों पर कलिका खिल जाती ।।[४]

पथ-पथ पर कवि मानव को शाश्वत सत्य से परिचित करा जीवन दर्शन देता चलता है—

संसार द्वार गह्वर-सा, झुककर जन जा सकता है ।
झुककर जाने वाला ही, जग में कुछ पा सकता है ।।[५]

कवि द्वारा प्रस्तुत सूक्तियां मानव का पथ प्रशस्त कर एक आदर्श सम्मुख उपस्थित करती हैं—

---

१. ऋषि गाथा, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ३३
२. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ३३
३. वही, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ ३७
४. वही, तृतीय सर्ग, पृष्ठ ६३
५. वही, पंचम सर्ग, पृष्ठ ९४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सगुन से गुनगान मिले सदा, सुजन का धन केवल ज्ञान है।[१]

कवि मानव को अपने स्व को विस्तृत करने का संदेश देता है—

अपने सुख का वितरण करना ही श्रेयस्कर,
सुप्त अहं का अपंग करना ही श्रेयस्कर,
बिना रुके भू पर विचरण करना ही श्रेयस्कर,
मानव का मन तर्पण करना ही श्रेयस्कर ॥[२]

जीवन की नश्वरता पर, संसार की अस्थिरता पर, काल की गति पर, परिवर्तन के चक्र पर कवि की दार्शनिकता भी द्रष्टव्य है—

वेदनाओं से भरी जगती, यहां जीवन बिताना,
चार दिन रहना, किसी दिन छोड़कर परदेश जाना।[३]

परिवर्तन संसार का नियम है, परिवर्तन की इस गतिशीलता का कवि ने इस प्रकार वर्णन किया है—

परिवर्तन गतिमय रहता, अपनी ही राह विचरता।
यह अतीत का अनुचर है, इसकी गति बड़ी प्रखर है ॥[४]

यह परिवर्तन ही संसार की अनिवार्यता है—

यह परिवर्तन उत्तुंग भवन विकराल खंडहर बन जाते।
पीयूष करों में भी देखा है रिसते छाले पड़ जाते ॥[५]

महर्षि दयानन्द की मान्यतायें

कवि ने महर्षि दयानन्द की प्रमुख मान्यताओं को भी 'ऋषि गाथा' में स्थान दिया है। ऋषि दयानन्द के हृदय में उत्कट कामना थी—

हृदय में बसी कामना, कुरीतियों को छोड़े देश समाज ॥[६]

(१) सत्य का प्रतिपादन—

हिन्दू यवन किसी भी मत का अनुयायी हो।
सत्य ग्रहण ही केवल आर्य मनुज परिभाषा ॥[७]

(२) वेद का प्रचार—

स्वामी का था प्रस्ताव देश के मत में,
हो वेद प्रतिष्ठा से सुधार भारत में।[८]

---

१. ऋषि गाथा, षष्ठ सर्ग, पृष्ठ १०३
२. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ १३२
३. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ १३२
४. वही, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ ३७
५. वही, पंचदश सर्ग, पृष्ठ २३६
६. वही, दशम सर्ग, पृष्ठ १६६
७. वही, षोडश सर्ग, पृष्ठ २५८
८. वही, चतुर्दश सर्ग, पृष्ठ २१४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(३) आर्य भाषा का प्रसार—

उन्नति देती निज भाषा, पुरती मन की अभिलाषा,
अपनी भाषा अपना देश, यह था स्वामी का आदेश ।।[१]

(४) गो रक्षा—

अवध हो गऊ भारतभूमि में पय मिले तन रोग कटें सभी ।
सुभग हो कृषि प्रेम सुतृप्ति पा सुख लहे परितुष्ट वसुंधरा ।।[२]

(५) बाल विवाह, मूर्ति पूजादि का विरोध—

ऋषि बाल विवाह मूर्ति पूजा
के दुष्परिणाम व्यक्त करते ।[३]

(६) कर्म से वर्ण व्यवस्था—

आर्य जन्म से नहीं कर्म से जन बनता है ।[४]

(७) स्वराज्य के प्रति अनुराग—

भले विदेशी पिता समान हों माता सम स्नेहनिधान,
रच दें वैभव के समान, त्याज्य सदा दुःस्वप्न महान् ।।[५]

कला पक्ष

समीक्ष्य महाकाव्य की भाषा खड़ी भाषा है । प्रसाद गुण युक्त सरल भाषा का ही इस काव्य में सर्वत्र प्रयोग हुआ है । कवि ने स्वयं भी इस सन्दर्भ में स्पष्ट किया है, "'ऋषि गाथा' कुछ पढ़े-लिखे मनीषियों के लिये ही नहीं, वह जन-साधारण के लिये भी है, अतः भाषा में क्लिष्टता या दुरूहता नहीं ।"[६] कवि की प्रतिपादन शैली सरस, सजीव, सहज, स्वाभाविक व प्रभावपूर्ण है । वस्तुतः 'ऋषि गाथा' सुबोध शब्दावली में गुंफित महाकाव्य है । उदाहरणार्थ—

पिता बता दो वह मेरा प्यारा भगवान कहां है ?
पिता बता दो असुर नाश भयहरण महान् कहां है ?[७]

कवि ने तत्सम युक्त पदावलि का प्रयोग भी किया है—

दिशि प्राची में दिनकर का आगमन हो गया ।
उधर प्रतीची में घन तम का दमन हो गया ।।[८]

---

१. ऋषि गाथा, षोडश सर्ग, पृष्ठ २६७
२. वही, षष्ठ सर्ग, पृष्ठ १०५
३. वही, द्वादश सर्ग पृष्ठ २०१
४. वही, षोडश सर्ग, पृष्ठ २८८
५. वही, त्रयोदश सर्ग, पृष्ठ २१६
६. वही, और मैं, पृष्ठ ६
७. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ३२१
८. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ १२६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रसंगवश पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करते हुए उर्दू पदों का प्रयोग भी कहीं-कहीं मिलता है। एक मौलवी के शब्दों में --

कहा स्वामि है नेकदिल मस्त आलिम,
न जानें सतावें इन्हें आन-जालिम।
फकीरी तेरी कौम में जान देगी,
दयानन्द खलकत सदा नाम लेगी ॥[1]

कोमल भावों की अभिव्यक्ति में माधुर्य गुण का समावेश हुआ है—

कोमल तन, मन में यौवन, यौवन में मदमाता तन।[2]

भाषा का वैशिष्ट्य प्रदर्शित करने वाली कुछ विशेषतायें इस प्रकार हैं—

अमूर्त-मूर्त—कवि ने अमूर्त भावों को मूर्त रूप प्रदान कर भाषा में सौन्दर्य-उद्भावना की है—

मनोविकार-सी अनेक मत्स्य तैरती वहां।[3]

नाद सौन्दर्य—

कल-कल छल-छल-छल कालित शोर,
कर रही तरंगें विकट रोर।[4]

वर्ण-मैत्री—

महर्षि तेजवान रूपवान ज्ञानवान था,
सुत्यागवान ईशध्यानवान था महान् था।[5]

भाषा की चित्रात्मक शैली एक सजीव दृश्य उपस्थित करने में सक्षम है—

कुछ ग्रीवाओं पर कंठी, कंधों पर शाल दुशाले।
मस्तक कुछ रचे हुए थे, हाथों में ग्रन्थ संभाले ॥[6]

अलंकार-प्रियता की भावना मानव में आदिकाल से चली आ रही है। कलाकार भी अपने भाव सौन्दर्य की श्री-वृद्धि हेतु अलंकारों का प्रयोग करते हैं। 'ऋषि गाथा' में भी कवि ने अलंकारों का सुष्ठु प्रयोग करके काव्य को अलंकृत किया है। काव्य में प्रस्तुत कुछ अलंकारों की छटा द्रष्टव्य है—

यमक— गोदी के लाल-लाल लोहित से, मां की मांग रचाते थे।[7]

रूपक— श्री ऋषिवर के पद कमलों पर प्रिय भक्त भ्रमर इठलाते थे।
गुन-गुन मन शंकायें कहकर, उपदेश गंध ले जाते थे।[8]

---

१. ऋषि गाथा, पष्ठ १२८
२. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ७६
३. वही, षष्ठ सर्ग, पृष्ठ ११०
४. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ७८
५. वही, षष्ठ सर्ग, पृष्ठ १०७
६. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ १४०
७. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ८१
८. वही, नवम सर्ग, पृष्ठ १६१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्प्रेक्षा— नव यौवन उल्लास भरा मन, चुभन अलंकारों की ।
मानो भू आवास बनी हो, मुस्काते तारों की ।।[1]

उपमा— बहकी-बहकी गति पांवों की महकी लट घुंघराली ।
तैर रही हो स्वप्न सरोवर में ज्यों राज मराली ।।[2]

अनुप्रास— पिता प्रबल प्रतिभा परिचायक पुत्र विरोधी था पर ।[3]

स्वभावोक्ति— कभी हृदय की बात स्वयं अधरों पर आ जाती है ।
कभी कसक मन की, आंखों में सावन भर लाती है ।

दृष्टान्त— जैसे बालक पहली दूजी श्रेणी पढ़ आगे चलता है ।
जैसे दिन भर का थका पथिक रुक-रुककर लक्ष्य पकड़ता है ।।[4]

लोकोक्ति— जग बतलाया करता अंधों में पंच एकअक्षी रहता ।

मुहावरे—

विस्तृत भावों को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने वाले संक्षिप्त साधन मुहावरे हैं। 'ऋषि गाथा' से उसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

(१) जग कहता अवसर पर गर्दभ तक बाप बनाने पड़ते हैं ।
(२) नौ दो ग्यारह हो गये यथा मांझे से कट गिरती पतंग ।
(३) खट्टे होते अंगूर शृगाली भी थक प्रायः कह जाती ।
(४) चने थोथे ही बजते हैं न आया अभिमानी पंडित ।

कवि ने वर्तमान में प्रचलित लगभग सभी छन्दों को प्रयुक्त किया है । उर्दू छन्दों का भी प्रयोग काव्य में उपलब्ध होता है ।

इस प्रकार भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से काव्य समग्रतः अच्छा बन पड़ा है । वृन्दावन के एक विद्वान ने कवि की प्रशस्ति में लिखा है—"काव्य में एक नवोदित सुकवि की प्रतिभा की झलक प्रकाशित हो रही है ।"

'ऋषि गाथा' महाकाव्य वर्णनात्मक शैली में लिखा गया है और भाषा की दृष्टि से काव्य की सहजता और सरलता जहां कवि की किशोर भावनाओं को प्रकाशित करती है वहां सर्वसाधारण पाठक के लिए नायक के जीवन को आत्मसात् करने का मार्ग भी प्रशस्त करती है । कवि का नवीन घटनाओं के संकलन एवं सभी प्रमुख घटनाओं के उल्लेख से इतिवृत्तात्मकता को पर्याप्त बल मिला है । इस प्रकार समग्रता में काव्य की रचना उत्तम कोटि की बन पड़ी है ।

---

१. ऋषि गाथा, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ ४२
२. वही, पृष्ठ ४३
३. वही, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ ४१
४ वही, पृष्ठ ५२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सप्तम उल्लास

दयानन्द प्रकाश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधुनातन भारत के स्वप्न-द्रष्टा !

मनुज से महर्षि,
और महर्षि से भगवान् !
राजा ने स्वयं तुम्हारी आरती उतारी
सचमुच, राज-सत्ता से भी—
कहीं अधिक तुम थे सामर्थ्यवान !!
अस्पृश्यों को तुमने गले लगाया,
बनाया उन्हें माथे का चन्दन !
पाखण्ड हो गया खण्ड-खण्ड—
लगा करने उनका वन्दन !!
लाम और ईसाई सूरमाओं की,
तुमने न गलने दी कभी दाल !
तुम्हारे अप्रतिम पांडित्य ने—
खींच ली उनके बाल की खाल !!
धूलि-धूसरित, नतमस्तक, स्वाभिमान शून्य
हिन्दू-समाज को—
ऋषि ! तुमने उठाया आकाश तक !
अशिक्षा, रूढ़िवादिता, अज्ञान के
अन्धकार को निकाल—
ले गए तुम उसे सूर्य के प्रकाश तक !!
अपने हत्यारे को भी,
दिया तुमने जीवन—
संसार को दिया सुख, समता, आनन्द !
और बन गए स्वयं दयानन्द !!

—श्री शैवाल सत्यार्थी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द प्रकाश

यह महाकाव्य आर्यसमाज के प्रसिद्ध कवि एवं संगीतज्ञ पं० प्रकाशचन्द्र कविरत्न द्वारा लिखित है। महर्षि दयानन्द के जीवनपरक महाकाव्यों का अध्ययन करते समय यह आधुनिकतम दृष्टिगत होता है, जिसका अभी केवल प्रथम खण्ड ही प्रकाशित हो पाया है।[1] कवि का विचार चार खण्डों में लिखने का था, किन्तु १९७८ ई० में उन के काल कवलित हो जाने के कारण यह महाकाव्य अपूर्ण रह गया। इस प्रथम खण्ड में ऋषि के जन्म से लेकर गुरु गृहवास और शिक्षा समाप्ति के अनन्तर दीक्षान्त संस्कार तक की घटनायें वर्णित हुयी हैं। इस काव्य की रचना कवि ने उस समय की जब वह वात रोग से ग्रस्त होकर जयपुर के राजकीय चिकित्सालय में प्रविष्ट था। शारीरिक अस्वस्थता और मानसिक वेदना की उस स्थिति में ही कवि को ऋषि-जीवन के प्रणयन की प्रेरणा प्राप्त हुयी, जिसके महान् आदर्श में, महान् लक्ष्य में कवि अपनी पीड़ा को भूल सके। आलोच्य महाकाव्य के सम्पादक प्रो० सदाविजय आर्य के शब्दों में, "कवि के प्रेरणास्रोत महर्षि दयानन्द सरस्वती रहे हैं और पीड़ा या वेदना की स्थिति में महर्षि के जीवन ने कवि को शिक्षा प्रदान की है। अतः उस कल्याणकारी प्रबुद्ध महर्षि की जीवनी को ही काव्य रूप देना कवि के लिये सहज हो गया है।"[2]

आलोच्य महाकाव्य—सर्गबद्धता की दृष्टि से प्रस्तुत महाकाव्य त्रयोदश सर्गों में विभाजित है तथा प्रत्येक सर्ग में कथावस्तु से सम्बन्धित शीर्षक प्रदान किये गये हैं।

नामकरण—महाकाव्य का नामकरण कवि, नायक या किसी घटना पर होना चाहिये। इसके साथ ही नामकरण या शीर्षक में संक्षिप्तता, रोचकता, सार्थकता, विषयानुकूलता, सरलता, स्वाभाविकता और सजीवता होनी चाहिये। 'दयानन्द प्रकाश' का नामकरण नायक व कवि दोनों के नाम पर है। प्रकाशचन्द्र कवि का नाम है, अतः 'प्रकाश' नाम यहां पर श्लेषात्मक है।

ईश वंदना—आलोच्य महाकाव्य के प्रारम्भ में कवि प्रबन्ध रूढ़ि का पालन करते हुए ईश वन्दना करता है। 'वन्दना' शीर्षक के अन्तर्गत कवि जगन्नियंता, निराकार परमात्मा के प्रति अपना कोटिशः प्रणाम निवेदित करता है जो संसार रूप नाटक का दिव्य सूत्रधार है तथा जिसके निर्देशन में ही सर्व जीव नटों की भांति दिन-रात जागरूक रहकर अपना अभिनय करते हैं—

---

१. प्रकाश साहित्य सदन अजमेर द्वारा १९७३

२. पढ़ने से पूर्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दृश्य काव्य से ये कमनीय कलापूर्ण अति,
सकल जगत् है नाटक नयनाभिराम।
सर्वजीव नट होके रंगमंच पै प्रकट,
अभिनय करते हैं जो विविध निशियाम।
जागरूक होके आप चुपचाप देखता है,
वैसा उसको है जैसा जिसको है काम।
लेता है न रूप जो उसी अनूप सूत्रधार,
ब्रह्म निराकार को है मेरा कोटिशः प्रणाम।[1]

कथावस्तु—महाकाव्य की कथावस्तु ऐतिहासिक अथवा पौराणिक होनी चाहिये। प्रस्तुत महाकाव्य की कथावस्तु आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित है—

क्रांतिकारक परम शांतिदायक, सकल
भ्रांतिहारक, सुपथ प्रेरक पवित्र है।
लोक उपकारक, तारक, उद्धारक, नव-
जीवन संचारक, दयानन्द चरित्र है।[2]

कथानक सुसंगठित, व्यवस्थित, सुश्रृंखलित, प्रवाहपूर्ण सजीव, स्वाभाविक, और प्रभावपूर्ण बन पड़ा है, क्योंकि ऋषि दयानन्द का पूर्ण जीवन तिथियों सहित उपलब्ध है, अतः असम्बद्धता की संभावना भी कम हो जाती है। कथानक में रोचकता व कौतूहलता का गुण समाहित है।

कथानक में कवि ने अपनी उर्वर कल्पना द्वारा कुछ नवीन प्रसंगों की उद्भावना भी की है। स्वामी दयानन्द का जन्म एवं शैशव का नयनाभिराम वर्णन करके कवि ने अपनी काव्यमयी प्रतिभा को प्रकाशित करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त किया है।

नायक—महाकाव्य के नायक का यह लक्षण माना जाता है कि वह धीरोदात्त गुणों से युक्त उच्चवंशीय ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा देवता होता है। भारतीय नाट्य शास्त्र के अनुसार धीरोदात्त नायक को विनीत, मधुरभाषी, त्यागी, पवित्र दृढ़, तेजस्वी, वीर, साहसी, उत्साही, आत्म सम्मानी, प्रज्ञावान् आदि गुणों से युक्त होना चाहिये। चरित नायक ब्राह्मणवंशीय है तथा गुणों का परिचय स्वयं कवि की निम्न पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है—

वह दयानन्द ब्रह्मचारी हनुमान तुल्य,
बाधा विघ्न, विपद वारिधि रहा चीरता।
कृष्ण सम जिसमें पुनीत नीतिपरता थी,
असुर संहारी राम के समान वीरता।

---

१. दयानन्द प्रकाश, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १
२. वही, पृष्ठ ५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूर्य सी तेजस्विता, तो चन्द्रमा सी शीतलता,
शैल सी विशालता, उदधि सी गंभीरता।
शंकर सा प्रखर पाण्डित्य बुद्ध सा वैराग्य,
भागीरथ भांति तप, ध्रुव सम धीरता।[1]

रस—समग्र रूप के अभाव में प्रथम खण्ड के आधार पर ही अंगीरस के रूप में शान्त रस की कल्पना करना ही आलोचक की अपरिहार्यता है। निम्नांकित पंक्तियों में कवि का यही लक्ष्य दृष्टिगत होता है—

ज्योति जागे ज्ञान की,
अज्ञान का तम तोम क्षय हो।
श्री दयानन्दर्षि का जीवन,
चरित कल्याणमय हो।[2]

अंग रूप में हमें वात्सल्य, करुण, रौद्र, वीभत्स आदि रसों का परिचय इस प्रबंध काव्य में उपलब्ध होता है। वात्सल्य का सजीव चित्र कवि प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा उपस्थित करता है—बालक मूलशंकर की बाल सुलभ क्रीड़ाओं व मां का वात्सल्य द्रष्टव्य है—

आंगन में अपनी छाया को देख पकड़ने हाथ बढ़ाता,
घुटनों के बल सरक सरक कर चलता उठता फिर गिर जाता।
माता तुरत उठाती मुख बहु बार चूमती गले लगाती,
हाथों से ऊपर उछालती पलने में फिर उसे झुलाती।[3]

माता का प्रिय पुत्र से बिछोह कारुणिक दृश्य उपस्थित कर देता है—

मीन तड़पती जल बिन जैसे बछड़े के बिन गैया।
दयानन्द प्रिय पुत्र बिना त्यों लगी तड़पने मैया।[4]

पिता द्वारा पुत्र को यति रूप में देखने पर उत्पन्न हुये क्रोध में हमें रौद्र रस की उपलब्धि होती है—

तन पर था जो काषाय वस्त्र वह टुकड़े टुकड़े कर डाला,
दी फेंक हाथ से तूंबी झट दी तोड़ फोड़ कंठी माला।[5]

महर्षि दयानन्द को एक पण्डित द्वारा भोजन का निमंत्रण देने पर तथा ऋषि के वहां पहुंचने पर जो दृश्य सम्मुख आया, वह वीभत्स रस का उदाहरण है—

मांस काट-काट पका रहा था चौके में बैठा ब्राह्मण,
पशु के शिर पर छुरी फर, कर रहे क्रिया थे पण्डितगण।[6]

---

१. दयानन्द प्रकाश, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ३
२. वही, पृष्ठ १०
३. वही, तृतीय सर्ग, पृष्ठ २५
४. वही, षष्ठ सर्ग, पृष्ठ ५६
५. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ ६६
६. वही, नवम सर्ग, पृष्ठ ८०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकृति चित्रण— महाकाव्य मे प्रकृति का विशद चित्रण होना चाहिये। स्वामी दयानन्द के उत्तराखण्ड भ्रमण वृत्तान्त को निबद्ध करते हुये कवि को परम्परागत षट् ऋतु वर्णन का अवसर अनायास ही उपलब्ध हो गया। सर्वप्रथम ऋतुराज वसन्त के आगमन को कवि ने अनुभव किया—

प्रिय ऋतुराज वसन्त समाहित वृक्षों में शाखाओं में,
सब पत्रों में फल फूलों में लौनी नवल लताओं में।
सुन्दर आम्रमंजरी पर मीठे स्वर वाली मदमाती,
पंचम स्वर में कुहुक कुहुक मानो प्रभु के गुण गाती।[१]

वसन्तानन्तर ग्रीष्म का एक यथार्थनिष्ठ चित्र देखिये—

विकल ग्रीष्म से हो बैठी गौ छाया में, भैंसें जल में,
मोर झाड़ में, खग नीड़ों में, हरिण घने से जंगल में।
विचर रहे बादल के छोटे टुकड़े अम्बर में,
मानो छोटी छोटी नावें विचर रही हैं सागर में।[२]

वर्षा ऋतु में छाये बादल को देख मयूरों का नृत्य प्रकृति की कमनीयता को चित्रित कर रहा है—

आंधी आई घुमड़ घुमड़ छाये बादल चहुं ओर अहो,
बरस उठे रिमझिम रिमझिम वे नाच उठे हैं मोर अहो।[३]

वर्षा विगत शरद ऋतु आयी। प्रिय और काम्य शरद ऋतु का वर्णन द्रष्टव्य है—

चन्द्र यामिनी दिव्य भामिनी, ओढ़े मानो धवल वसन,
सौख्य धाम नयनाभिराम प्रिय शरदकाल अतिमन भावन।
सरितायें कलकल निनादिनी शुचि जल भरित प्रवाहित हैं,
कारण्डव चकवा, चकोर कलईस पंक्ति से शोभित हैं।[४]

हेमन्त में शीत के आधिक्य ने जो परिवर्तन किये हैं, उनका उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

इस हेमन्त काल में जल हिम, सूर्य चन्द्र सम बना दिया,
पावक चन्दन, जीवन दायी मारुत को यम बना दिया।
हारे हुये नृपति के सम, सरसिज मुरझित छवि हीन हुये,
क्षीण हुयी गज कपि उद्दण्डता, जल में व्याकुल मीन हुये।[५]

---

१. दयानन्द प्रकाश, पृष्ठ ८३
२. वही, पृष्ठ ३४
३. वही, नवम सर्ग, पृष्ठ ८४
४. वही, पृष्ठ ८४
५. वही, पृष्ठ ८६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और अन्त में

आया शिशिर समय, निज स्वर्णिम किरणावलियों से दिनकर,
लगा हटाने शैलधरा के मध्यमार्ग की हिम चादर।
श्वेत भाल भारत का हिमगिरि सकल पर्वतों से न्यारा,
जिससे है बह रही युगों से सतत ज्ञान गंगाधारा।[1]

मानव संस्कृति और जीवन का व्यापक वर्णन

कवि ने अपने इस काव्य में विविध सांस्कृतिक पक्ष एवं जीवन के विविध रूपों का चित्रण किया है। इसी प्रसंग में कवि प्राचीन आर्य वैदिक संस्कृति के आदर्श को उपस्थित करना भी नहीं भूला है—

सुखदा श्रुति मंत्रोच्चारण से,
सबके गृह प्रांगण गुंजित थे।
नभ को घन तुल्य ढके रहते,
यज्ञाग्नि के धूम्र सुगन्धित थे।[2]

ऋषि दयानन्द के समय की संस्कृति को ही अधिकांश में कवि ने चित्रित किया है। समाज में किये जाने वाले, विभिन्न अवसरों में आयोजित किये जाने वाले समारोहों को भी कवि ने काव्य में स्थान दिया है। पुत्र जन्मोत्सव पर आयोजित एक समारोह का कवि दृश्य उपस्थित करता है—

पुत्र जन्म उत्सव में स्नेही सज्जन दूर दूर के आये,
बाजे बजे नृत्य गर्बा कर महिलाओं ने मंगल गाये।
जातकर्म संस्कार आदि करने बुलवाये पंडित सादर,
विविध भेंट दे, फिर दीनों को दान दिया निज हृदय खोलकर।[3]

जीवन के विविध प्रसंगों को भी कवि ने यथास्थान चित्रित किया है। मेले के अवसर पर मानव की विभिन्न रुचियों का सजीव चित्रण प्रस्तुत है—

घोड़ा था भगा रहा कोई, हाथी को हूल रहा कोई,
हंस रहा कोई रो रहा कोई, झूले में हूल रहा कोई,
अपने स्नेही स्वजनों से मिल करता था हंसी ठठोल कोई,
अपनी रुचि के अनुकूल वस्तु ले रहा हाट में मोल कोई।[4]

बाल-मनोविज्ञान का भी कवि को पूर्ण ज्ञान है। इसी से बाल्यकाल की बाल सुलभ चेष्टाओं का वर्णन भी कवि ने किया है—

बना हाथ से मिट्टी का घर, ठुकराना फिर ढाना,
लोटपोट होना धरती पर धूल भरे घर आना।[5]

---

१. दयानन्द प्रकाश, पृष्ठ ८६
२. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ ६
३. वही, तृतीय सर्ग, पृष्ठ २३
४. वही, सप्तम सर्ग, पृष्ठ ६६
५. वही, षष्ठ सर्ग, पृष्ठ ६३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधु समाज में व्याप्त विकृति को भी कवि ने चित्रित किया है—

बोले बम बम गाजे चर्स की लगाते दम,
बकते हैं अण्ड बण्ड भंग की तरंग में।
विद्या के विरोधी, क्रोधी, है सहिष्णुता न रंच,
है भरा प्रपंच, स्वार्थ भाव अंग-अंग में।
भखते मिष्ठान्न भोग, लखते न पर पीड़ा,
रखते चरण चापने को चेली संग में।
दम भरते हैं वे वैराग्य का मलंग मूढ़,
रंग रहे हैं जो दिन रात राग रंग में।[1]

खल, निन्दा व सज्जन-प्रशंसा—महाकाव्य के लक्षणानुसार इसमें खल-निन्दा व सज्जन-प्रशंसा भी मिलती है—

हेय दानवता पराजित हो,
मनुजता की विजय हो।[2]

उद्देश्य—प्रस्तुत महाकाव्य का उद्देश्य ऋषि जीवन की प्रेरणा द्वारा अधम व अज्ञान का निराकरण तथा धर्म व ज्ञान की प्रतिष्ठा करना है। कवि ने प्रारम्भ में ही अपने इस उद्देश्य को निम्न शब्दों में व्यवहृत किया है—

ज्योति जागे ज्ञान की, अज्ञान का तम तोम क्षय हो,
श्री दयानन्दर्षि का जीवन चरित कल्याणमय हो।[3]

कला पक्ष

आलोच्य महाकाव्य कवि की प्रौढ़तम रचना है, अतः गरिमामय उदात्त भाषा शैली सर्वत्र देखने को मिलती है। कविरत्न प्रकाशचन्द्र आर्य समाज के प्रतिष्ठित कवि एवं साहित्य शास्त्र में पारंगत कलाकार थे। अतः उनके काव्य में शास्त्रोक्ति लक्षणों का सहज व स्वाभाविक रूप से वर्णन हुआ है। ऋषि दयानन्द के विविध घटना संकुल जीवन का चित्रण करने के कारण 'दयानन्द प्रकाश' की शैली में इतिवृत्तात्मकता का आ जाना स्वाभाविक ही था, तथापि कवि ने उसे सरस व हृदयग्राही बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत महाकाव्य की भाषा परिष्कृत व परिनिष्ठित हिन्दी है, जो संस्कृत के तत्सम शब्दों से आच्छादित है। यत्र तत्र संस्कृत विभक्ति रूपों का तत्सम प्रयोग भी हुआ है। यथा—

निरन्तर स्वदेश उपकाराय,
जनों में भाव भरूंगा भव्य।
करूंगा आकुल लोकहिताय,
प्राणपण से पालन कर्त्तव्य।

---

१. दयानन्द प्रकाश, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ५६
२. वही, प्रथम सर्ग, पृष्ठ १३
३. वही, पृष्ठ १३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषा में माधुर्य, प्रसाद व ओज गुणों को भी प्रसंगानुकूल समाहित किया है।

माधुर्य— निर्मल नीलाकाश निपट निर्मल मारुत है निर्मल जल,
निर्मल दिनकर निर्मल किरणें सकल दिशायें हैं निर्मल।[1]

प्रसाद— देता है जो मुक्त हस्त से धन विद्या की वृद्धि हेतु,
पुण्यवान वह नर महान् पाता जग में सम्मान है।[2]

ओज— गुरु समर्थ श्री रामदास जी ने शिवराज समर्थ किया तब,
चण्ड खड्ग से उद्दण्ड औरंग का खण्ड घमण्ड किया तब।

अर्थ-गांभीर्य हेतु तथा काव्य को सौष्ठव प्रदान करने हेतु कवि ने भाषा की लक्षणा व व्यंजना शक्तियों का प्रयोग भी किया है—

लक्षणा— यतिवर हृदय कली मुस्काई,
अहो ! भाग्य घर गंगा आई।[3]

व्यंजना— बस ऐसी ही वैराग्य पूर्ण करते हैं प्रायः बात सभी,
मरघट में तो बन जाते हैं मिथिला के राजा जनक सभी।[4]

लोकोक्तियों और मुहावरों का यत्र-तत्र प्रयोग भाषा की रोचकता और मोहकता बढ़ाने का कारण बना है। उदाहरणार्थ कतिपय प्रस्तुत हैं—

लोकोक्ति— कृष्णचंद्र आनंदकंद की जन्मभूमि अति प्यारी,
है लोकोक्ति पुरानी मथुरा तीन लोक ते न्यारी।

मुहावरे— गिरे वर्ण जब तीन शूद्र भी फिर तो तेरह तीन हो गये।
मारवाड़ का नीति निपुण रणबांका दुर्गादास निराला,
औरंगजेबी सेना का जिसने नाकों में दम कर डाला।

काव्य में चमत्कार की उत्पत्ति हेतु तथा सौन्दर्य की अभिवृद्धि हेतु अलंकारों का प्रयोग होता है। आलोच्य महाकाव्य में अलंकारों का यह सौन्दर्य अत्यन्त सहज व स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त हुआ है। अनुप्रास की स्वाभाविक छटा दर्शनीय है—

हमारा वैदिक धर्म महान्,
पूज्य प्रिय पावन प्राणाधार, पुण्यप्रद प्रमुदत्त उपहार,
मुक्तिपथ प्रेरक परमोदार, भद्र भारती भाव भण्डार,
अटल, अक्षय, अज्ञेय, अविकार, अभ्युदय निःश्रेयस सोपान।[5]

उपमा, उत्प्रेक्षा का प्रयोग भी अनेक स्थलों पर सुन्दर बन पड़ा है—

मुख अमल कमल, कण्ठ मानो कम्बुकल,
था शिला सा वक्षस्थल, अर्द्ध इन्द्रसम भाल।[6]

---

१. दयानन्द प्रकाश, नवम सर्ग, पृष्ठ ८२
२. वही, द्वादश सर्ग, पृष्ठ १२६
३. वही, द्वितीय सर्ग, पृष्ठ १८
४. वही, अष्टम सर्ग, पृष्ठ ७७
५. वही, पंचम सर्ग, पृष्ठ ५०
६. वही, द्वादश सर्ग, पृष्ठ १२२
७. वही, तृतीय सर्ग, पृष्ठ २८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यमक के प्रयोग द्वारा उक्ति वैचित्र्य द्रष्टव्य है—

घर की नारी की कौन बात, तन की नारी छुट जाती है।[१]

कुहरे से आच्छादित शीतकाल के सूर्य को देखकर चकोर को चन्द्रमा का भ्रम हो जाता है और वह चन्द्र समझकर अपलक नयनों से देखती है। भ्रान्तिमान् अलंकार का यह परम्परागत चित्र देखिये—

श्वेत चांदनी सम कुहरे से आच्छादित सूरज की ओर,
विलोकती थी शशि के भ्रम अपलक नयनों से मुग्ध चकोर।[२]

युगों के संचित अनुभव को कवि सूक्ति रूप में उद्धृत करता है। यथा—

विद्या धन सबसे उत्तम है, विद्या बिन नर पशु के सम है।

संसार की नश्वरता पर कवि का यह सार है—

वस्तु न कोई स्थिर यहां, है असार संसार।[३]

इस प्रकार कवि की अभिव्यक्ति का यह अनुपम कौशल सहृदय पाठक को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। विषय के प्रस्तुतीकरण में कवि ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ—

संवाद शैली—महाकाव्य हेतु संवाद योजना की अनिवार्यता भी शास्त्रीय दृष्टि से स्वीकार की गयी है। आलोच्य महाकाव्य में परिस्थितिवश अनेक बार संवादों का प्रयोग हुआ है—

घर जाते ही बोले माता! भूख लगी है मुझको,
बोली माता! मैं तो पहले ही कहती थी तुझको।[४]

चित्रात्मक—दृश्य के प्रत्यक्ष उपस्थित करने में भी कवि कुशल है—

यूं कीर्तन करते आधी रात हुयी जब,
तब लगे ऊंघने शंभु भक्त सब के सब।
कोई तो सोया गर्दन करके नीचे,
कोई बैठा ही सोया आंखें मीचे।[५]

वर्णनात्मक— चरित काव्य होने के कारण वर्णनात्मकता काव्य की अपरिहार्यता है—

संवत उन्निस सौ तेरह से सत्रह तक गुरुदेव हमारे,
विचरण करते रहे निरन्तर तीन वर्ष नर्मदा किनारे।[६]

---

१. दयानन्द प्रकाश, पंचम सर्ग, पृष्ठ ५१
२. वही, नवम सर्ग, पृष्ठ ८६
३. वही, पंचम सर्ग, पृष्ठ ४४
४. वही, चतुर्थ सर्ग, पृष्ठ ३८
५. वही, पृष्ठ ३४
६. वही, एकादश सर्ग, पृष्ठ १०८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छंद-विधान

कवि ने काव्य परिपाटी का निर्वाह करते हुए इस महाकाव्य में विविध छन्दों का प्रयोग किया है। दोहा, घनाक्षरी आदि छन्दों के अतिरिक्त स्वतंत्र गीत तथा भजन आदि भी इस महाकाव्य में यत्र तत्र प्रयुक्त हैं।

इस प्रकार इतिवृत्तात्मकता के साथ-साथ महाकाव्य की परम्पराओं का पालन करते हुये यह दयानन्द 'प्रकाश महाकाव्य' की संज्ञा से अभिहित किये जाने का अधिकारी है। गरिमामय व्यक्तित्व के चित्रण में भाव एवं शैली की उदात्तता का आ जाना स्वाभाविक ही है।

महर्षि के चरणों में

नत मस्तक सब आर्यजन, करते तुम्हें प्रणाम
अजर-अमर है विश्व में, दयानन्द का नाम
दयानन्द का नाम, महर्षि पदवी पाई
भूले-भटके जन-गण-मन को राह दिखाई
गोरे, भारत नहीं छोड़ते राजी-राजी
अगर न देते योग, देश के आर्यसमाजी

—श्री काका हाथरसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१८. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
१९. ऋषि दयानन्द जीवन चरित्र	राकेश रानी
२०. दयानन्द चित्र दर्शन	भारतेन्द्र नाथ
२१. आर्यसमाज के १०० वर्ष	,,
२२. महर्षि दयानन्द की विशेषतायें	महात्मा नारायण स्वामी
२३. सत्यार्थ प्रकाश	महर्षि दयानन्द सरस्वती
२४. नवयुग प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलियां	(सं०) राकेश रानी
२५. हिन्दी गद्य साहित्य का विकास	डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा
२६. आधुनिक हिन्दी साहित्य	डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
२७. प्रसाद नाट्य और रंगशिल्प	डॉ० गोविन्द चातक
२८. द्विवेदीयुगीन काव्य पर आर्यसमाज का प्रभाव	भक्तराम शर्मा
२९. अर्द्धनारीश्वर	दिनकर
३०. हिन्दी साहित्य का इतिहास	डॉ० रामचन्द्र शुक्ल
३१. हिन्दी साहित्य का इतिहास	डॉ० रामबहोरी शुक्ल
३२. संस्कृत हिन्दी कोश	वामन शिवराम आप्टे
३३. ए हिस्ट्री आफ आर्यसमाज	लाला लाजपतराय
३४. दयानन्द कामेमोरेशन वोल्यूम	हरविलास शारदा
३५. रघुवंश	कालिदास
३६. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	,,
३७. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छपते-छपते—

स्वामी धर्मानन्द जी का देहान्त

सर्वत्र यह समाचार हार्दिक कष्ट के साथ सुना जाएगा कि भारत के महा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती का ८ नवम्बर को हरिद्वार में देहावसान हो गया। आप ने अनेकों ग्रन्थ लिखे थे। दयानन्द संस्थान के संचालकों में आपका प्रमुख स्थान था। बाढ़ से हानि के बाद आपने ११) और अपना आशीर्वाद भेजा था। उनकी मृत्यु से देश को और हमें अपूरणीय क्षति पहुंची है। सादर श्रद्धांजलि।

—संपादक

शास्त्रार्थ महारथी

पं० बिहारीलाल शास्त्री

का महान् ग्रँथ

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी पर

सत्यार्थ प्रकाश महत्व

मूल्य ३)

किन्तु प्रचार के लिए १५०) सैकड़ा

केवल १०० मंगाने पर ही यह सुविधा मिलेगी

दयानन्द-संस्थान

वेद मन्दिर, नई दिल्ली-५

मुद्रक-प्रकाशक-सम्पादक पं० राकेशरानीद्वारा स्वस्ति प्रैस, नई दिल्ली-५ में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग,
करोलबाग, नई दिल्ली-५

अक्तूबर-नवम्बर
संयुक्तांक
१९७८

Regd No. D(C) 201

Regd. No. 107119/75

वेद मन्दिर में बाढ़ की विनाश लीला के चार चित्र। पुस्तक-सामान और पेड़ फंले हुए दिखायी पड़ रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi